कारण ही मास्टरजी ने उसका सब खर्च उठाया। तेरह साल की उमर होते-होते मुन्ना की मजदूरी खत्म हो गयी थी। मास्टरजी के स्कूल की झड़ाई-पुछाई कर देता, उनका साथ देता और पढ़ाई करता। मास्टर जादौराम ने मुन्ना को पाला था। मैट्रिक पास करवा दिया था।

और फिर मुन्ना को लगने लगा था कि वह जादौराम पर बोझ हो गया है। यही कारण था कि उसने पोस्टमैनी करना तय किया। इधर गांवों में डाक बांटने के लिए आदमियों की ज़रूरत थी। मुन्ना ने भरती में अपना नाम भी दिया था। हर दूसरे दिन डाक लेकर आना और पंचायत इलाके के गांवों में बांटना--बहुत कठिन काम भी नहीं था।

राजनीति में मुन्ना को दिलचस्पी नहीं हो, ऐसा नहीं था। दिलचस्पी थी, मगर उपेक्षा बरतता था। जानता था कि उस-जैसों की हैसियत से बाहर की बात है। यहां-वहां की किताबें पढ़ता। यहां-वहां की बहस भी करता रहता। यदा-कदा जब गांव में किसी को कोई काम पड़ता, मुन्ना राय देता। उसकी राय पढ़े-लिखे आदमी की राय समझी जाती। मास्टर जादौराम गौरवान्वित होते। लड़का कम पढ़ा-लिखा भले हो, पर शिक्षित है। संस्कार भी था उसमें।

सब कहते—'मुन्ना को आदमी बनाया है जादौराम ने।' मास्टरजी जवाब देते—'कोई किसी को कुछ नहीं बनाता भाई, आदमी खुद बनता है।'

बहरहाल मुन्ना—सकुन और धन्ना आदि से कम पढ़ा लिखा होते हुए भी उनसे ज्यादा समझ का मालिक था।

पर ज्यादा समझ कभी-कभी घातक भी होती है। मुन्नालाल इस समझ से कभी-कभी मार भी खा जाता। एक बार अरजुन ठाकुर की चौपाल पर ही कुछ कहा-सुनी हो गयी थी। बात चल पड़ी थी—नयी कलक्टर सरबती देवी को लेकर। हरिजन थीं। जिले में काम सम्हाला ही था कि बड़ी जातवालों में चख्-चख् फैल गयी थी। अरजुन ठाकुर ने भर चौपाल पटवारी गदाधर शिवहरे और ग्रामसेवक नत्थीलाल शर्मा से कहा

था, "अब तुम दोनो को उस सरबतिया कलक्टरनी के पांव पड़ने पड़ेंगे स्सालो ! ये कांगरेस और बाद मे जनता गौरमिन्ट क्या आयी—भंगी चमारों ने बाम्हन-ठाकुरो से पाव छुवा लिये !"

नत्थीलाल का मुँह सिकुड गया था । सच ही तो । अरजुन ठाकुर झूठ तो कह नही रहा था । उसके पिता मोगीलाल इर्द-गिर्द के सोलह गावों में भागवत बांचते थे । जिन्दगी मे ऐसा एक भी दिन नही बीता था जब बिना नहाये रहे हों । जनेऊ हरदम तोंद पर झूलता रहता था । माथे पर रामानन्दी तिलक । इसी गाँव मे जाने कितनों के ब्याह करवाये, किरिया-करम करवाये । जिस रस्ते निकल जाते थे—'पाय लागू' कहा जाता था । चमार भूले-भटके बगल से निकल जाता तो बरफ बरसती सरदी मे भी चार बार नहाते थे । ऐसे ही एक बार नहान के चक्कर मे जान भी गयी । सर्द खा बैठे थे, पर धर्म-निवाहा राई-रत्ती । उन्ही के बेटे नत्थीलाल को सरबतिया या सरबतीबाई कलेक्टरनी को राम-राम करना पड़े, हजूर, मालिक, गरीब परवर कहना पड़े—यो ही लानत् की बात । पूछा था, "सुना है चमट्टी है ?"

"हा !" अरजुन ठाकुर ने जवाब दिया था ।

मुन्नालाल एक ओर बैठा था । सिर्फ श्रोता बना हुआ । जी नही था कि बोले, पर भीतर से कुछ खौलने लगा था उनकी बातें सुनकर । इस नत्थीलाल ग्रामसेवक का कलक्टर को लेकर बोलना ऐसे ही है जैसे कान्नोच, हाथी पर थूके । मूर्ख कही का ! ऐसे ही लोगो ने देश का बधिया बिठा दिया ।

"असल मे भाई, अपना दाम खोटा तो परखने वाले का क्या दोष ! "अरजुन ने कहा था, "जब हम ही अपनी जात-अभिमान भूल चुके तो किसी का क्या दोष ? गान्धी बाबा ने जात से बनिया होते हुए भी भंगियों का मैला साफ किया, तो भंगी कौन हुआ ? गान्धी कि भंगी ? बोलो तो ?"

सब बोल पड़े थे, "सत्तवचन है, ठाकुर साहब !···सत्त

कारण ही मास्टरजी ने उसका सब खर्च उठाया। तेरह साल की उमर होते-होते मुन्ना की मजदूरी खत्म हो गयी थी। मास्टरजी के स्कूल की झड़ाई-पुछाई कर देता, उनका साथ देता और पढ़ाई करता। मास्टर जादौराम ने मुन्ना को पाला था। मैट्रिक पास करवा दिया था।

और फिर मुन्ना को लगने लगा था कि वह जादौराम पर बोझ हो गया है। यही कारण था कि उसने पोस्टमैनी करना तय किया। इधर गांवों में डाक बांटने के लिए आदमियों की ज़रूरत थी। मुन्ना ने भरती में अपना नाम भी दिया था। हर दूसरे दिन डाक लेकर आना और पंचा-यत इलाके के गांवों में बांटना---बहुत कठिन काम भी नहीं था।

राजनीति में मुन्ना को दिलचस्पी नहीं हो, ऐसा नहीं था। दिल-चस्पी थी, मगर उपेक्षा बरतता था। जानता था कि उस-जैसों की हैसि-यत से बाहर की बात है। यहां-वहां की किताबें पढ़ता। यहां-वहां की बहस भी करता रहता। यदा-कदा जब गांव में किसी को कोई काम पड़ता, मुन्ना राय देता। उसकी राय पढ़े-लिखे आदमी की राय समझी जाती। मास्टर जादौराम गौरवान्वित होते। लड़का कम पढ़ा-लिखा भले हो, पर शिक्षित है। संस्कार भी था उसमें।

सब कहते—'मुन्ना को आदमी बनाया है जादौराम ने। 'मास्टरजी जवाब देते—'कोई किसी को कुछ नहीं बनाता भाई, आदमी खुद बनता है।'

बहरहाल मुन्ना—सकुन और धन्ना आदि से कम पढ़ा लिखा होते हुए भी उनसे ज्यादा समझ का मालिक था।

पर ज्यादा समझ कभी-कभी घातक भी होती है। मुन्नालाल इस समझ से कभी-कभी मार भी खा जाता। एक बार अरजुन ठाकुर की चौपाल पर ही कुछ कहा-सुनी हो गयी थी। बात चल पड़ी थी—नयी कलक्टर सरवती देवी को लेकर। हरिजन थीं। जिले में काम सम्हाला ही था कि बड़ी जातवालों में चख्-चख् फैल गयी थी। अरजुन ठाकुर ने भर चौपाल पटवारी गदाधर शिवहरे और ग्रामसेवक नत्थीलाल शर्मा से कहा

था, "अब तुम दोनों को उस सरवतिया कलक्टरनी के पाव पड़ने पड़ेंगे रसालो ! ये कांगरेस और बाद में जनता गौरमिन्ट क्या आयी—भंगी चमारों ने बाम्हन-ठाकुरों से पाव छुवा लिये !"

नत्थीलाल का मुँह सिकुड़ गया था। सच ही तो। अरजुन ठाकुर झूठ तो कह नहीं रहा था। उसके पिता मोगीलाल इर्द-गिर्द के सोलह गांवों में भागवत बांचते थे। जिन्दगी में ऐसा एक भी दिन नहीं बीता था जब बिना नहाये रहे हों। जनेऊ हरदम तोंद पर झूलता रहता था। माथे पर रामानन्दी तिलक। इसी गाँव में जाने कितनों के ब्याह करवाये, किरिया-करम करवाये। जिस रस्ते निकल जाते थे---'पाय लागूं' कहा जाता था। चमार भूले-भटके बगल से निकल जाता तो बरफ बरसती सरदी में भी चार बार नहाते थे। ऐसे ही एक बार नहान के चक्कर में जान भी गयी। सर्द खा बैठे थे, पर धर्म-निबाहा राई-रत्ती। उन्हीं के बेटे नत्थीलाल को सरवतिया या सरवतीबाई कलेक्टरनी को राम-राम करना पड़े, हजूर, मालिक, गरीब परवर कहना पड़े—यों ही लानत् की बात। पूछा था, "सुना है चमट्टी है ?"

"हां !" अरजुन ठाकुर ने जवाब दिया था।

मुन्नालाल एक ओर बैठा था। सिर्फ श्रोता बना हुआ। जी नहीं था कि बोले, पर भीतर से कुछ खौलने लगा था उनकी बातें सुनकर। इस नत्थीलाल ग्रामसेवक का कलक्टर को लेकर बोलना ऐसे ही है जैसे काक्रोच, हाथी पर थूके। मूर्ख कहीं का ! ऐसे ही लोगों ने देश का बधिया बिठा दिया।

"असल में भाई, अपना दाम खोटा तो परखने वाले का क्या दोष ! "अरजुन ने कहा था, "जब हम ही अपनी जात-अभिमान भूल चुके तो किसी का क्या दोष ? गान्धी बाबा ने जात से बनिया होते हुए भी भंगियों का मैला साफ किया, तो भंगी कौन हुआ ? गान्धी कि भंगी ? बोलो तो ?"

सब बोल पड़े थे, "सत्तबचन है, ठाकुर साहब !···सत्त है !" पर

मुन्नालाल ने चिहुंककर कहा था, "बात तो सरबतिया बाई कलेक्टरनी की हो रही है, पंच जी। गान्धी बाबा को क्यों बीच में लाते हो?"

"बड़ा बुरा लगा रे?" अरजुन ठाकुर ने बीड़ी सुलगा ली। नाराज़ होकर कहा, "क्यों, गान्धी तेरा बाप था क्या?"

सब हंसे। ज़ोर से ही हो-हो। नत्थीलाल ग्रामसेवक ने व्यंग किया, "जादौराम मास्टर का पढ़ाया ज्ञान है ना। गान्धी का असल बेटा तो वह है।"

फिर हंसी हुई। मुन्नालाल के खून में गरमाव आ गया। अपनी समझ, बुद्धि भूलकर बात करते हैं। परममूरख! चिढ़कर उत्तर दिया, "सही कह रहे हैं ग्रामसेवक जी। मास्टरजी महाराज अगर गान्धी बाबा के बेटे हैं तो उनके लिए बड़ी बात ही हुई। कम से कम मोगीलाल महा-राज के बेटे तो नहीं हुए!"

इस बार कुछ लोग फिर हंसे। सोचा—छोकरे ने खूब सुलगती हुई लगा दी नत्थी ग्रामसेवक के नीचे। स्साला बातें बड़ी-बड़ी करता है और करम सब छोटे-छोटे। लोग टाल जाते हैं। ग्रामसेवक है। किसलिए बिगाड़ करें। फालतू ही बात बढ़ेगी, पर बहुत सन्तोष हुआ कि मुन्नालाल ने अच्छी तरह सुना दिया।

अरजुन ठाकुर के नथुने फैल गये थे। दो टके का आदमी और उसके सामने औंड़ी-भौंड़ी बात!···

नत्थीलाल का चेहरा पिट गया था। सहसा दमदमाने लगा। कहा, "अपनी औकात में रहा कर हरामजादे!···चार चिट्ठी बांचने लायक हो जाने से आदमी रामायण नहीं पढ़ने लगता।"

मुन्नालाल ने जवाब दिया था, "गुस्सा मत होना ग्रामसेवकजी, जैसे आपको गाली बुरी लगती है, वैसे दूसरे को भी बुरी लग सकती है। बात सरबतीबाई की चल रही थी तो उसकी करो। गान्धी-नेहरु को बीच में मत लाओ। इसीलिए कड़वा बोला था मैं।"

"खैर लौंडा के मुंह मैं नहीं लगता।" नत्थीलाल ने झुंझलाकर मुंह

सिकोड़ लिया, फिर अरजुन के पास से बंडल उठाकर बीड़ी सुलगाने लगा।

अरजुन ठाकुर में क्रोध है, पर जमाना समझने की ताकत भी है। मुन्नालाल की गुस्ताखी सह गया। फिर से बात आगे बढ़ा दी, "जो भी हो, इस बखत तो धरम संकट हो ही गया है। सुना है सरवतिया कलेक्टरनी पंचों की बैठक लेगी। मुझे भी हाजिरी देनी पड़ेगी।"

"और हाजिरी दोगे महाराज तो आगे होकर राम-राम भी करना पड़ेगी। चमट्टी भले हो, पर है तो कलेक्टर!" नत्थी ने कहा।

"यही तो भईया। यों समझो कि सूअरनी के शरीर पर सरसुती की फोटू चिपकी है। झुकना तो पड़ेगा।"

"और पंच जी एक बात पूछूं?" मुन्नालाल फिर चिहुंक पड़ा था।

अरजुन ने उसकी ओर देखा। कुछ परेशान हो गया। कुछ ऐसी-वैसी न कह बैठे। जादौराम ने न जाने कितनी किताबें घोटकर भीतर डाल दी हैं। जाने कहां-कहां की बातें करता फिरता है। इसे दबाना कठिन होगा।

मुन्नालाल ने पूछा था, "उन फोटूओं के बारे में आप नहीं बोले पंच जी, जिन्होंने सरसुती का बदन पा लिया है और राम भला करे, फोटू सूअरनी की लगा रखी है। ऐसे शरीरवाले भी अगर चाहें कि लोग उन्हें सिर झुकायं तो मूरख कौन हुआ?"

"अभी बेटा, चार-छह औलाद पैदा करले फिर तुझे जवाब दूंगा।" चिढ़ा कर अरजुन ठाकुर ने डपट दिया था उसे, "अभी मईया के पेट में निकला नहीं है—ज्ञान बघार रहा है जैसे बी० ए० एम्मे कर आया हो!"

"वही तो कह रहा हू साब। आप लोग भी कलेक्टरनी के बारे में बातें करना छोड़ दो। वह जरूर है बी० ए० एम० ए०!...उससे भी आगे आई० ए० एम० किया है—तब कलेक्टर हुई है। आप लोग चिट्ठी बांचना जाने नहीं और जात ढूंढे उस पढ़ी-लिखी औरत की—यह

ऐसे ही हुआ जैसे चन्द्रमा पर थूका जाये !"

एकदम सन्नाटा फैल गया था। मुन्नालाल खुश होता हुआ चल पड़ा था। बहुत ज्यादा ही समझते हैं अपने आपको !···अब बात-बात में दरपन दीख गया है तो सबके चेहरे टमाटर-जैसे हो गये हैं।

वह भीतर-ही-भीतर हंस रहा था···ठहाके लगा रहा था···इन ठहाकों का आनन्द बाहरवाले नहीं ले सकेंगे।

दो

कुछ ऐसे ही स्वरहीन ठहाकों के अहसास से भरे हुए ये तीनों घर आये थे। अपने-अपने घर।

रास्ते में तय किया था कि जादौराम मास्टर के खड़े होने की बात अभी दबाली जाये। कल जब सब कुछ हो चुकेगा, तब सुनाया जायेगा। धन्ना ने कार्यक्रम तय किया था कि शाम को मास्टरजी के यहां बैठक हो और फिर सोचा जाये कि किस तरह किस-किस से निबटना पड़ेगा।"

बिलायती ने हिदायत दी थी, "अच्छी तरियां समझ लो, बिचारे मास्टरजी को जहाज पर तो चढा बैठे हो, पर ऐसा न हो कि हज से पहले ही डुबो दो।"

"अरे, नहीं-नहीं!" धन्ना ने कहा था, *"ऐसा होने देंगे भला?"*

मकुन चुप रही थी। उसी तरह चुपचाप घर में आ समायी थी। घर क्या था—घर का वहम-सा था। दो पाटौरें। हर साल मिट्टी का पलस्तर उखड़ जाता था और हर साल सकुन गोबर-माटी मिलाकर दीवारों पर लेप कर लेती थी।

धूप तेज थी। मास्टरजी को लेकर चिन्ता और व्यग्रता उससे भी ज्यादा तेज। ठीक ही कहा है बिलायती ने—गौ को बाघ के सामने फेंक दिया है सबने।

आते ही चूल्हे-पानी से उलझ गयी। एक जान के लिए भ

बखेड़ा करना पड़ता है। सत्ताईस साल की उमर होने को आयी। माता-पिता, भाई-बन्धु होते तो क्या सकुन इस तरह बैठी रहती ?

पर कोई नहीं है सकुन का। माता-पिता छुटपन में ही मर गये। मामा ने पाला था उसे। फिर सकुन ने होश संभाला तो मामा भी किनारा कर गया। बहुत बाद में पता चला था सकुन को। शिवहरे पटवारी और अरजुन पंच से मिलजुलकर मामा ने सकुन की धरती दबा ली थी। सब गांव की औरतें उसे उकसातीं—धरती मांग सकती है। साल-दो साल मुकद्दमेबाजी होगी और क्या ! तहसीलदार से लेकर पटवारी तक सब खिंचे फिरेंगे। मामला जिला कचहरी से आगे चला जाये तो बड़ों-बड़ों के मांजे ढीले हो जाते हैं। पर सकुन ने मामला नहीं बढ़ाया था। समझा था कि मामा ने बुरे वक्त जो ममता दी थी, उसी का दाम वसूल लिया है। फिर सकुन ठहरी पराया धन। कल को किसी घर व्याह भी जाती तो यह घर छूटता। इससे जुड़ी सब जमीन-जायदाद भी छूट जाती। उस सबसे आगे यह कि सकुन को एक गुण मिल गया था। यही—जच्चा-बच्चा की सम्हाल का गुण। आस-पास के गांवों में न जाने कितने घरों की गोदें सकुन की साज-सम्हाल और सावधानी की देन हैं। सकुन खुश थी।

किन्तु अब इस खुशी में कोई हल्की-सी वेदना शरीक हो गयी थी। कब, किस पल हो गयी—सकुन को मालूम ही नहीं हुआ था। यह वेदना थी—अपना घर-बार, अपनी गोद और अपनी मेंहदी की।

दो-तीन साल मामा की तरफ देखा। वह सोचेंगे शायद। चार जने जब कहेंगे कि बेटे-बेटियों का सोच रहे हो तो उस बिना-मां-बाप की बेटी का भी ध्यान कर लो। वह भी तो एक तरह से बेटी ही है। मगर व्यर्थ निकला। मामा ने सोचा नहीं। किसी ने कहा भी हो तो मामा ने अनसुना कर दिया होगा।

सकुन ने समझ लिया था—अकेली है ! फिर वह अपने आप पर झुंझलायी थी। अकेली है तो क्या जी नहीं सकेगी। अकेले लोग क्या मर-मर जाते हैं ? सकुन जियेगी—और ठाठ-ठप्पे से जियेगी। जितना

कमायेगी, मस्ती में खायेगी-पियेगी। सब जमाने को ठेंगा दिखाकर जियेगी। हंसेगी भी खूब!

ये सोच लेने के बावजूद सकुन समझ पा रही थी कि हंस नहीं पायेगी।

सोच लेने भर से हंस लेना सहज है क्या?

हंसेगी और लगेगा—जबरदस्ती कर रही है अपने आप से। इसलिए सकुन ठीक तरह हंस नहीं पाती थी।

कोशिश करती थी कि ज्यादा से ज्यादा व्यस्त रहे। किसी घर-गाव से खबर आती कि अमुक के यहा 'दर्द उठ रहे हैं' और सकुन लपक जाती। जी खोलकर वहा वक्त खर्च करती। ग्राहक की भी तबीयत खुश हो जाए और सकुन का वक्त भी कटे, जो कभी-कभी अकेलेपन में सकुन को ही काटता-डसता रहता है। पर हमेशा तो काम होता नहीं। सकुन को महीने में कम से कम आठ-दस और कभी-कभी बीस-बीस दिन खाली रहना पड़ता।

फिर वही कच्ची पाटौर और सकन का अकेलापन। इधर कुछ दिनों से वेनी माधव से सकुन का हेल-मेल बढ़ा था। पूरा नाम वेनी-माधवसिंह। पड़ोस के गांव का युवक था। अक्सर आ जाया करता था। सकुन उसके प्रति आकृष्ट थी। वह भी। अरजुन ठाकुर से दूर की रिश्तेदारी थी उसकी। वेनीमाधव के पिता ने दूसरी औरत रखली थी। जात में कुछ 'हेटा' माना जाता था वह। हुक्का-पानी तो बन्द नहीं हुआ था, पर वेनी और उसके परिवार की वह साख नहीं रही थी जो पहले थी। पर सकुन इन सब बातों को मानती नहीं थी। यह सन्तोष भी था कि वेनी की इस लाचारी से ही सही, किसी न किसी हद तक वेनी से निभ जाएगी। और आगे तक भी बात चली जाए शायद?···और सकुन के लिए एकांत काटने का एक यही सहारा बन गया था। यों सहारा तो मुन्ना भी हो सकता था, मगर मुन्नालाल हमेशा काटती बात बोलने का आदी था। फिर सकुन की जात से भी मेल न था उसका। किसी-किसी बार एकात

में सकुन मुन्ना और वेनी की तुलना करने लगती। अनचाहे ही करने लगती। सहसा उसे लगता कि मुन्नालाल भारी है। जात् और पैसे से भले ही वेनी के आगे मार खाता हो, पर अक्कल और वातचीत में उसका और वेनी का कोई मुकावला नहीं। अनायास ही वह मुन्ना को लेकर सोचों से जुड़ जाती।

कुल मिलाकर ये दो सोच थे जो एकांतों में सकुन को अकेला नहीं रहने देते थे। कभी एक-दूसरे का आ पहुंचना, कभी किसी वार सकुन का उनकी अनुपस्थिति में उनकी यादों के साथ तुलना करना···

सकुन इसी तरह वक्त काटती। जो वचता, उसके लिए अपने घर से कतराकर यहां-वहां जा पहुंचती। आस-पड़ोस के घरों में भी थोड़ा वक्त कटता। कुछ वक्त धन्ना और विलायती काट देते। दोनों ही वाल-बच्चे वाले थे। वक्त काटते समय सकुन को अतिरिक्त सावधानी भी वर-तनी पड़ती। कुछ ऐसी-वैसी जवानें खुल गयीं तो इस अन्धेरे कुंऐ में रहना कठिन हो जाएगा सकुन का। धन्ना और विलायती का क्या—मर्द हैं। वह खुद भी मानते हैं और सव गांवों में सदियों से कहा जाता है—मर्द के सौ खून माफ ! वात करते, चलते-वोलते एक खास तरह की सीमारेखा भी सकुन को वनाए रखनी पड़ती। स्वभाव, मुसकानों और चलने-फिरने पर अंकुश लगा रखा था।

चौके-चूल्हे से निवटते-निवटते सकुन को काफी देर हो गयी। सिल-सिले में वहुत से काम भुगते। कपड़े धोए, चार आये-गयों से वात की और जव खाना खाने बैठी तो वारह वज चुके थे। पहला ग्रास मुंह में डाला ही था कि दरवाज़े पर पुकार हुई, "सकुन !···"

कुछ झुंझलाती हुई वह उठी। कभी-कभी ऐसे वेमौके लोग आ पहुंचते हैं कि सकुन को चिढ़ आने लगे। दरवाज़े पर आयी तो मन हल्का हो गया। मुन्नालाल खड़ा था।

सकुन को देखते ही हंस दिया।

सकुन ने कहा, "आओ···भीतर आ जाओ।"

मुन्नालाल ने चप्पलें दरवाजे पर ही उतार दीं—भीतर पहुंचा। पूछा, "क्या कर रही थी ?"

"रोटी खाने बैठी ही थी।" सकुन ने उत्तर दिया।

"तब तो वखत पर आ गया मैं।" मुन्ना बोला। फिर हंस दिया।

"खाओगे ?"

"अब तुम्ही खा लो...फिर किसी दिन खिलाना।" मुन्नालाल ने हंसकर कहा, "किरार ठाकुर हूं। बरतन अशुद्ध हो जायेंगे तुम्हारे। फिर देखता हूं कि तुम्हारे यहां कोई मांजनेवाला भी नही है। खुद मांज-कर जाना पड़ेगा।" वह एक ओर दरी खींचकर बैठ रहा।

सकुन खाना खाने बैठी। ग्रास चबाते हुए उत्तर दिया, "मास्टरजी बाम्हन हैं। फिर भी उनके यहां तुम खाते हो। उनकी बेटी बरतन मांज देती है। उसमें तो वह तक दोष नही मानते, तब मैं ही क्यों मानूंगी।"

"उनकी बात अलग है, सकुन !···सब कोई जादोरामजी का मुका-बला थोड़े ही कर सकते हैं। एक तरह से धरम के मईया-बाप तो मेरे वह ही हैं। मुझमें और बेटी में कभी फरक नही किया। देवता आदमी। उनकी बड़ी बात।" बोलते-बोलते मुन्ना के चेहरे पर श्रद्धा की अजब-सी चमक तिर आयी। सकुन ने यह देखा। जादोराम मास्टर के प्रति मन में श्रद्धा थी ही, मुन्नालाल के प्रति ज्यादा ही हुई। अब कितने हैं जो भलाई को भलाई मानें। गांव में सब के लिए कुछ न कुछ किया होगा जादोराम ने, पर दो-चार ही हैं, जो उपकार मानते हैं। उत्तर दिया, "ठीक कहते हो। *मास्टरजी की बात ही अलग है*, पर पारस पथरी के साथ रहो तो सोना जरूर बन जाओगे···भगवान की मेहर है कि मास्टरजी ने अक्षर ज्ञान दिया है हम लोगों को। इतना तो सीख-समझ सकते हैं कि भला क्या, बुरा क्या !"

"खैर, छोड़ो फालतू बातें" मुन्ना ने कहा, "मैं एक काम से आया था, सकुन।"

" सो क्या ?" सकुन ने शरारत से कहा, "जो काम

में सकुन मुन्ना और बेनी की तुलना करने लगती। अनचाहे ही करने लगती। सहसा उसे लगता कि मुन्नालाल भारी है। जात् और पैसे से भले ही बेनी के आगे मार खाता हो, पर अक्कल और बातचीत में उसका और बेनी का कोई मुकाबला नहीं। अनायास ही वह मुन्ना को लेकर सोचों से जुड़ जाती।

कुल मिलाकर ये दो सोच थे जो एकांतों में सकुन को अकेला नहीं रहने देते थे। कभी एक-दूसरे का आ पहुंचना, कभी किसी बार सकुन का उनकी अनुपस्थिति में उनकी यादों के साथ तुलना करना···

सकुन इसी तरह वक्त काटती। जो बचता, उसके लिए अपने घर से कतराकर यहां-वहां जा पहुंचती। आस-पड़ोस के घरों में भी थोड़ा वक्त कटता। कुछ वक्त धन्ना और विलायती काट देते। दोनों ही बाल-बच्चे वाले थे। वक्त काटते समय सकुन को अतिरिक्त सावधानी भी बरतनी पड़ती। कुछ ऐसी-वैसी जबानें खुल गयीं तो इस अन्धेरे कुंऐ में रहना कठिन हो जाएगा सकुन का। धन्ना और विलायती का क्या—मर्द हैं। वह खुद भी मानते हैं और सब गांवों में सदियों से कहा जाता है—मर्द के सौ खून माफ! बात करते, चलते-बोलते एक खास तरह की सीमारेखा भी सकुन को बनाए रखनी पड़ती। स्वभाव, मुसकानों और चलने-फिरने पर अंकुश लगा रखा था।

चौके-चूल्हे से निवटते-निवटते सकुन को काफी देर हो गयी। सिल-सिले में बहुत से काम भुगते। कपड़े धोए, चार आये-गयों से बात की और जब खाना खाने बैठी तो बारह बज चुके थे। पहला ग्रास मुंह में डाला ही था कि दरवाज़े पर पुकार हुई, "सकुन!···"

कुछ झुंझलाती हुई वह उठी। कभी-कभी ऐसे बेमौके लोग आ पहुंचते हैं कि सकुन को चिढ़ आने लगे। दरवाज़े पर आयी तो मन हल्का हो गया। मुन्नालाल खड़ा था।

सकुन को देखते ही हंस दिया।

सकुन ने कहा, "आओ···भीतर आ जाओ।"

मुन्नालाल ने चप्पलें दरवाजे पर ही उतार दीं—भीतर पहुंचा। पूछा, "क्या कर रही थी?"

"रोटी खाने बैठी ही थी।" सकुन ने उत्तर दिया।

"तब तो वखत पर आ गया मैं।" मुन्ना बोला। फिर हंस दिया।

"खाओगे?"

"अब तुम्ही खा लो...फिर किसी दिन खिलाना।" मुन्नालाल ने हंसकर कहा, "किरार ठाकुर हूं। बरतन अशुद्ध हो जायेंगे तुम्हारे। फिर देखता हूं कि तुम्हारे यहां कोई मांजनेवाला भी नहीं है। खुद मांज-कर जाना पड़ेगा।" वह एक ओर दरी खींचकर बैठ रहा।

सकुन खाना खाने बैठी। ग्रास चबाते हुए उत्तर दिया, "मास्टरजी बाम्हन हैं। फिर भी उनके यहां तुम खाते हो। उनकी बेटी बरतन मांज देती है। उसमें तो वह तक दोष नहीं मानते, तब मैं ही क्यों मानूंगी।"

"उनकी बात अलग है, सकुन!···सब कोई जादौरामजी का मुका-बला थोड़े ही कर सकते हैं। एक तरह से धरम के मईया-बाप तो मेरे वह ही हैं। मुझमें और बेटी में कभी फरक नहीं किया। देवता आदमी। उनकी बड़ी बात।" बोलते-बोलते मुन्ना के चेहरे पर श्रद्धा की अजब-सी चमक तिर आयी। सकुन ने यह देखा। जादौराम मास्टर के प्रति मन में श्रद्धा थी ही, मुन्नालाल के प्रति ज्यादा ही हुई। अब कितने हैं जो भलाई को भलाई मानें। गांव में सब के लिए कुछ न कुछ किया होगा जादौराम ने, पर दो-चार ही हैं, जो उपकार मानते हैं। उत्तर दिया, "ठीक कहते हो। मास्टरजी की बात ही अलग है, पर पारस पथरी के साथ रहो तो सोना जरूर बन जाओगे···भगवान की मेहर है कि मास्टरजी ने अक्षर ज्ञान दिया है हम लोगों को। इतना तो सीख-समझ सकते हैं कि भला क्या, बुरा क्या!"

"खैर, छोड़ो फालतू बातें" मुन्ना ने कहा, "मैं एक काम से आया था, सकुन।"

"सो क्या?" सकुन ने शरारत से कहा, "जो का

तुम जानते ही हो। यह समझ नहीं आया कि मैं तुम्हारे किस काम आ सकती हूं।"

"वही वतलाता हूँ, हंसी-मजाक का मूड़ नहीं है इस टैम" मुन्नालाल ने गंभीर होकर कहा, "धन्ना, विलायती और तुम चले आये तो मैंने वहुत सोचा, फिर लगा कि कहीं कुछ घपला हो रहा है।"

"कैसा घपला ?"

"यही चुनाव का चक्कर !" मुन्नालाल ने कुछ चिन्तित होकर कहा, "मास्टरजी को जोश तो दिला दिया है, पर लगता है चक्कर हो जायेगा। इकल्ले वैठकर तसल्ली से वहुत देर तक सोचता रहा मैं। एक तो पास में वेचारों के पैसा नहीं है, तिस पर पुरानी सरकारी नौकरी से लगे-वंधे हैं, चौथे जात-पांत के मामले में गान्धी वावा हैं। अव जैसे तुम्हारा-तेरा मास्टरजी से कोई जोड़ नहीं है, वैसे ही मास्टरजी का गान्धी वावा से कोई जोड़ नहीं है। जो वातें वह करते-धरते हैं, उनसे वोट नहीं मिलेंगे। लोग विचक जायेंगे। वाम्हन-ठाकुर वोटों पर तो सारा खेल है। कोरे हरिजन वोट लेकर मास्टरजी कौन-सा तीर मार पायेंगे। यह हिसाव नहीं वैठा। और हरिजन वोट भी पूरे कैसे मिलेंगे ? आधे अरजुन के जूते और चांदी के जोर पर खिसक जायेंगे···सव हिसाव लगा चुका हूं। मास्टरजी की जमानत जव्त होगी।"

सकुन की भोजन-स्पीड कम हो गयी। मुन्नालाल हवाई उत्साह की वात नहीं कर रहा था। यह ठीक है कि वेचारे भोले-भाले मास्टरजी को जिस तरह चार लोग कहें, तैयार हो जाते थे—पर उन चार का भी तो कोई धर्म है। अकारथ उन्हें ऐसे कुंए में किसलिए धकेला जाये ?

धन्ना ने कहा था—"वोट इज्जत और ईमान पर मिलेंगे। मास्टरजी का नाम आते ही अरजुन की सात पुश्तें सूख जायेंगी, जैसे हरे चने में हवा लग गयी हो। वेईमानी और वदमासी के पैर ही कितने होते हैं।"

इसके वावजूद सकुन के भीतर कुछ हिल रहा था। धन्ना और विलायती की हां में हां तो मिलाती गयी थी, मगर वहस करके कहा

नहीं था कि चुनाव का नाम ही सबसे बडी बेईमानी और बदमाशी हो चुकी है। जो चुनाव लडले, समझ लो दुनिया के सब करम कर सकता है। ऐसे-ऐसे पाठ पढने पड़ते हैं कि आदमी चांद पर उड पहुंचने की मशीन बना ले। मुन्नालाल ने जो सोचा, सच की जमीन पर ही था।

सकुन कुछ कह पाये, तभी मुन्नालाल ने पुन: कहा, "अभी तुम्हारे पास आने से पहले मैं धन्ना के यहा होकर आया हू। वह तो बडे जोर मे है···पर मेरे दिमाग में आंकड़ा बैठ नहीं रहा है। मन का चोर दबाये रहूं, सो सुभाव नही है—इसीलिए पूछता हू सच कहो क्या मास्टरजी अरजुन से भुगत पायेंगे?"

सकुन ने ग्रास चबाना बन्द कर दिया।

"देखो, अरजुन पहले कई बार चुनाव लडा और जीता है, फिर पटवारी, ग्राम सेवक, बी० डी० ओ० ही नही, जिले की थाने-कचहरी तक पहुंच है। नकछेदीलाल एम० एल० ए० भी उसको मानता है। नायब तहसीलदार को इतने मुर्गे खिलाये हैं कि अरजुन दिखे तो मुर्गे की जात भाग जाये।···बताओ ऐसे मे बिचारे मास्टरजी को अपुन जानते-बूझते इस चुनाव के अन्धकूप में धकेल दें तो क्या होगा! वर्कर भी अरजुन के पास कम नही है। हम जैसे लोंडे-लपाडो को कौन घास डालेगा। अरजुन के फेवर मे साठ साल वाले भी आ जायेंगे।"

सकुन ने पूछा, "फिर क्या सोचते हो?"

"सोचना क्या है, मास्टरजी से कह देते हैं—आइडिया कैंसिल!" मुन्नालाल ने एक ओर रखी बुहारी से सींक निकाली और कान कुरेदने लगा।

"न न···ये क्या करते हो।" सकुन ने चिन्तित होकर तेज स्वर में उसे डपट दिया, "कान का परदा फट जायेगा!···मैल निकालना है तो तेल डालो। साइंस के खिलाफ चलते हो—इत्ते पढ-लिख गये और इत्ती-सी अक्किल नही आयी तुम्हें! हद है!"

हंसते हुए मुन्नालाल ने सीक एक ओर फेंक दी। उस···

से कान हिला डाला। सारी गरदन हिल उठी। सकुन उसे देखती रही। मुसकरायी। फिर गंभीर विषय याद आते ही गंभीर हो गयी।

"विलायती से बात हुई ?" सकुन ने थोड़ी देर बाद पूछा।

"उंहुं !" मुन्ना ने इन्कार कर दिया। कहा, "उससे कह देंगे कि भई रहन दो।"

"इसका मतलब तो ये हुआ मुन्ना बाबू, कि हरहमेस अरजुन या उस जैसा ही कोई बदमास चुना जाता रहेगा···और सब रोते रहेंगे।"

"तो बाद में रोते हैं, गाली देते हैं तो वोट क्यों देते हैं उसे ?" मुन्ना-लाल ने खीझकर कहा, "जैसा करेंगे स्साले, वैसा पायेंगे। इसमें क्या है !"

सकुन ने व्यंग से हंसकर कहा, "उस वखत तो बड़ी सच्च की डींग हाँकी थी, अब क्या हो गया ? अरजुन की चौपाल पर हो आये क्या !"

तिलमिला उठा मुन्नालाल। तेज आवाज में कहा, "मुन्नालाल उनमें नहीं है, जो थूकें और चाटें। मैं तो अब भी मरने-मारने को तैयार हो लूंगा, पर मास्टरजी को लेकर सोचता हूं। जवान बेटी बैठी है। सज्जन आदमी हैं। लोभ मोह छू नहीं गया। अभी जो दाल-रोटी मिलती है सो आराम से खा रहे हैं, कल को इस चुनाव ने अगर लूट-मार लिये तो वे तो मर जायेंगे—पर पाप किसे लगेगा ? हमी लोगों को ना ? हम मास्टरजी के हितू हैं कि दुस्मन ?"

सकुन थोड़ी देर के लिए पुनः निरुत्तर हो गयी थी। मन यहां-वहां भटक जाने के कारण भूख हो कर भी नहीं रही थी। सकुन उठ पड़ी। हाथ धोये और फिर से मुन्नालाल के पास ही आ बैठी। कहा, "विलायती से बात करते हैं।"

थोड़ी देर बाद दोनों विलायती के घर की ओर चल पड़े।

□ □

विलायती घर पर नहीं था। सकुन ने कहा, "जरूर हनुमानजी के

मन्दिर वाले बरगद के नीचे तास खेल रहा होगा।"

मुन्ना लपक पड़ा था उधर, "मैं बुलाकर लाता हूं। तुम यहीं रुकना।"

"वहीं जो चलती हूं।" सकुन ने प्रस्ताव किया, पर मुन्नालाल ने रोक दिया, "पागल हुई हो? वहां तास हो रहा होगा। चार छह घुगे इकट्ठा होंगे। उनके सामने असेम्बल की बातें ठीक लगेंगी क्या? मैं आता हूं उसे लेकर।"

सकुन चुप होकर बरामदे में बैठ गयी। मुन्ना का दबाव और रौब झेलना उसे अच्छा लगा। ऐसे ही जिन्दगी भर कहता रहे तो सकुन को खुशी ही होगी। उस औरत का जीवन-रस भी कैसा सूख जाता है— जिसे सदा-सदा अपनी मनचाही करने को मिलती रहे! मर्द का दबाव और प्यार जरुरी।

इस छोटे-से कच्चे घर में दीवारों का आधा हिस्सा कलेन्डरों से घिरा हुआ था। सुरैया, नरगिस, निम्मी·· दो दशक पूर्व के इन पीले पड़ गये कागजों पर बनारसी पान-जैसी रंगत उतर आयी थी। कुछेक नये अभि-नेता-अभिनेत्रियों के फोटो भी थे। सिनेमा का पोस्टर भी था और उससे भी आगे बढ़कर एक ओर लगे थे मक्का-मदीना के फोटो। विलायती आदमी भी खूब है! सकुन ने सोचा।

कमरे में एक ओर छोटा-सा चबूतरा था। इस चबूतरे पर बैंड रखा हुआ था। सकुन ने उधर टकटकी लगाकर देखा। अनायास खुद से ही लजाकर मुस्करा पड़ी। अगर सकुन ने मुन्ना से ब्याह रचा ही लिया तो यही विलायती बैंड बजायेगा! · बैंड भी यही होगा!

वे बतियाते हुए आ पहुंचे। शायद रास्ते में ही मुन्ना अपने मन का वहम कहता आया था। बैठक में आये तो दोनों सीरियस थे। विलायती बोला था, "बैठो, मुन्ना।·· अब सोचते हैं।"

"मेरा ख्याल है विलायती भईया, सो·
मैंने तुम्हें सारा समझा ही दिया है।"

"बात तो यार तेरी सही है कि हममें से किसी की भी औकात, हैसियत ऐसी नहीं है कि ठहर पायें। यह भी सही ही कहा है तूने कि जिनके घर पर खुद डाके पड़े हुए हों, भला वे किसी के लिये क्या कर सकेंगे, किस बूते दान करेंगे···हम चारों से मास्टरजी को हाथ-पांव की मदद तो मिल जायेगी, बाकी मदद का हमारा बूता नहीं है···"

"वही तो मैंने सोचा।" मुन्ना को लगा विलायती के दिमाग़ में बात बैठ गयी है। खुश हुआ। लगे हाथ अपने पीछे समर्थन की ताकत भी लगा दी, "सकुन भी यही कह रही है···"

"नहीं-नहीं, मुन्ना बाबू—झूठ मत बोलो। मैंने यह नहीं कहा था।" सकुन ने टोक दिया। झूठमूठ बात कर रहा है। बाद में धन्ना और विलायती कहेंगे कि मुन्ना पट्टी क्या पढ़ा गया, सकुन हवा हो ली। यों ही सकुन को लेकर मुन्ना और बेनी की बात करते वे खास तरह देखते हैं। सकुन ने कहा था, "मैंने सिरफ यह कहा था कि चलकर विलायती भईया से बात कर लेते हैं।"

"मगर मैंने जो कहा, उससे नाहीं तो नहीं कर सकी थी तू।···मेरा मतबल है—तुम···!" मुन्ना ने लड़खड़ाकर कहा। बेकार ही सकुन का नाम लिया। फिर उसे पछतावा हुआ था कि ग़लत क्यों लिया। किसी तरह छाड़-पोंछकर बात रफादफा करनी चाही।

विलायतीखान बोला, "यह बहस छोड़ दो।···" वह माथे पर सलवटें बिछाये हुए था, "मतबल यह है कि सोचना पड़ेगा।"

"अरे यार, सोचना तो पहले ही था।"

"पहले जो सोचा है, सुनोगे?" विलायतीखान को लगा था कि मुन्ना उसे बेअक्ल कह रहा है। आवाज में कुछ चिढ़ उतर आयी थी।

"क्या सोचा था पहले—बतलाओ?" मुन्ना डटा रहा, "अगर सोचा होता तो क्या यह बात समझ में न आती कि मुंह से हवा निकालने से तो बैन्ड बज नहीं जाता?"

"देखो!" विलायती ने उठकर आले में से एक पुरानी कापी

निकाली और पुराना, धूल खाया हुआ फाउन्टेनपेन उठाकर मुन्ना के आगे रख दिया। इस कापी में गाहकों के नाम दर्ज थे, साई की राशि दर्ज थी। शादी की तिथियां दर्ज थीं। वेंड पहुंचने और लौटने का वक्त दर्ज था। कापी का पिछला पन्ना खोलते हुए विलायती ने उसे मुन्ना के आगे रख दिया। बोला, "मैंने और धन्ना ने अभी लौट कर सब हिसाब लगा लिया था···अरजुन जोड़तोड़ भी करे तो बहुत ज्यादा वोट तोड़ नहीं पायेगा। अरजुन के पास अगर पैसा और ताकत है तो मास्टरजी के पास धरम-ईमान। लोगों की आत्मा इतनी मर नहीं गयी है। लो, लगालो हिसाब!"

मुन्ना कापी देखने लगा। हरिजन, मुसलमान, ठाकुर, ब्राह्मण सभी वोटों की गणना थी उसमें। विलायतीखान पेन को हवा में झटकता हुआ बड़बड़ा रहा था, "इसकी तो···हमेसा परेसान करता है।···" उसने कापी पर उसे रगड़ा। एक लकीर नहीं खिंच सकी! झल्लाकर फिर आले में गया। चार-छह कागज़ और एक पुराना अखबार लौटा-पलटा —पेन्सिल उठा लाया। उसे मुन्ना के आगे फेंककर कहा, "लिखो, तुम्हें भी समझाये देता हूं।"

मुन्ना ने एक बार सकुन की ओर देखा, फिर विलायती और अन्त में कापी की ओर। दबे, कमज़ोर स्वर में कहा "अगर तुम लोग सब हिसाब लगा चुके हो तो फिर ठीक है···मुझे क्या मालूम था कि उतते आगे तक सोचे बैठे हो?"

विलायती ने मुन्ना को उपेक्षा की दृष्टि से देखते हुए कापी, पेंसिल और फाउन्टेनपेन उठाकर फिर से आले में झोंक दिये। उत्तर दिया, "अरे, भईया। विलायती ने जिन्दगी में आज तक कोई काम बिना मीजान बिठाये नहीं किया है···"

मुन्ना चुप हो गया।

सकुन मुस्करा रही थी।

विलायती ने कहा, "सुबेरे तुम तो फारम भरवाने के

ना ?" "मास्टरजी जाने चाहिऐं। भीड़ की क्या जरूरत है ?" मुन्ना ने तर्क किया।

विलायती हंसा, "तू तो विलकुल ही चुगद है यार!···अरे, भले आदमी—यह चुनाव का काम है। मास्टरजी के साथ अगर चार-छह की भीड़ ही न हुई तो क्या मालूम होगा कि लोग उनके साथ हैं? फारम भरवाकर, चुनाव-चिन्ह लेकर, इस्तीफा दिलवाकर जव हम लोग लौटेंगे तो पक्की रोड से ही नारे लगाते आयेंगे। यह होगा धमाका। अरजुन तो अव तक यह समझे वैठा है कि उससे कोई टक्कर नहीं लेगा। जवकि इस वार वेटा को चौखट-चौखट नाक घिसनी है।"

सकुन और मुन्ना वरवस ही हंस पड़े। विलायती सचमुच वहुत उत्साहित था।

□ □

धन्ना सुवह छह वजे ही वैलगाड़ी लेकर आ पहुंचा था। मास्टरजी तो तैयार ही थे। रोज रहते थे। चार वजे उठकर पूजा-पाठ करते और सज-धज लेते। फिर रात को धन्ना खवर भी दे गया था कि सवेरे ही चलना है।

मास्टर जादोराम ठीक तरह सोच-समझ नहीं पा रहे थे। 'हां' तो कर वैठे थे, किन्तु अव आगे सूझ नहीं रहा था कि किस तरह करें, क्या करें। रात धन्ना से कहा भी था, "भई, मुझे तो कुछ आता नहीं कि कैसे क्या किया जाता है?"

"वह चिन्ता आपको नहीं करनी है साव। मैं और विलायती करेंगे।" धन्ना ने जवाव दिया था, "पिछली वार अरजुन जव फारम भरने गया तो हम उसके साथ थे। सव तरीका मालूम है। आप तो वस, चले चलो!"

जादोराम चुप हो रहे थे।

मुन्ना से रात को कह नहीं पाये थे कि सुवह चलना है। जव धन्ना, मास्टरजी को वैलगाड़ी में विठाकर मुन्ना के टापरे पर पहुंचा तो वह सो

ही रहा था। धन्ना ने चीख-चीख कर घर सिर पर उठा लिया। मुन्ना घबराया हुआ जागा तो भड़ाभड़ शाब्दिक कोड़े उस पर जड़ दिये। इसमें शक्ति जितनी थी, उससे कही ज्यादा आत्मीयता, अधिकार और मास्टरजी के प्रति समर्पण का भाव भी था। बडबडा उठा था, "अगर ऐसे हुआ तो कर लिया काम !··· सूरज निकले तक सोता रहा सो देख लेना चुनाव के रिजल्ट में अमावस आएगी। अगर यही करना है तो फिर किस लिए मास्टरजी को फसायें··· अभी बेटी बाप की है। कुछ नहीं बिगड़ा !"

"पर···पर बात क्या हुई !" मुन्ना सिटपिटा गया था।

"तुझे मालूम नही था क्या—सुबेरे चलने की बात है ?" धन्ना बिगड़ता ही जा रहा था।

"पर··· पर इस बखत काहे से ?"

"बैलगाडी से।" धन्ना गरजा था, "बस में पूरी सवारियों लायक जगह नही हुई तो मोका क्या होगा ? हजार काम करते हैं। पंचायत के दफ्तर जाना पड़ेगा, जिला परिषद के अध्यक्ष के यहां मिलेंगे, फिर मास्टरजी इन्सपेक्टर के घर पहुंचेंगे, फिर तहसील में···पचास जगह हैं, पचास काम हैं। भई, ऐसे तो नहीं चलेगा मुन्ना।" बात खत्म करते-करते असन्तोष व्यक्त करता हुआ वह रूठने लगा था।

"अच्छा-अच्छा, अभी आया।" मुन्ना जल्दी-जल्दी पाजामे को सवा-रता-कसता बोला था।

"तो मैं सकुन और विलायती वगैरा के यहाँ पहुंचता हूं—तब तक तैयार हो लो।" कहता हुआ धन्ना लौट गया था।

सकुन, विलायती और विलायती के वेंडवाले तीनों आदमी तैयार थे। धन्ना ने सबको गाड़ी में भरा था, फिर बैलों की पूछ ऐंठता हुआ पुनः मुन्ना के घर आ पहुंचा था। मुन्ना बाहर ही खड़ा था। थैला हाथ में। वह गाडी में बैठ गया तो ये लदी-फदी गाड़ी बड़े गौरव से सब गावों के बीचोबीच होती हुई पक्की सड़क की ओर रवाना हुई थी। वेंडवाले

अपने-अपने यंत्र संवारे बैठे थे।

ग्रामीण स्त्री-पुरुषों ने आश्चर्य से उन सभी को देखा था। फिर बैंड-वालों को देखकर लगा था कि किसी व्याह-कारज में जा रहे हैं। राम-राम दुआ-सलाम होती गयी और गाड़ी पक्के रास्ते पर आ पहुंची। धन्ना ने बैल हांकते हुए सवाल किया, "सबसे पहले पंचायत के दफ्तर चलना होगा ना, विलायती?"

"हां!" विलायती ने कहा।

'क्क् क्क्!...' धन्ना ने हांक लगायी। सकुन ने टोक दिया, "इतने बड़े कारज के लिए चले हो तो जरा मन्दिर होकर ही चलते!"

सकुन की बात पर सबने एकमत राय व्यक्त की कि ठीक कहा है। पक्के रास्ते के किनारे पुराना, जीर्ण-शीर्ण खंडहर नुमा मन्दिर था। ढेरों ईंटें बिखरीं पड़ी थीं। कुछ बिखरने को थीं।

"गलती की—नारियल लाना था।" मुन्ना ने कहा।

"लौटते में ले आयेंगे। उधर से वापसी में तो मन्दिर आओगे या नहीं?" विलायती बोला।

'ठीक है।...सही है!...' सब बोले।

मन्दिर पर माथा टेका। जादौराम एक पल आंखें मूंदे खड़े रहे। मन में कौंध की तरह एक प्रार्थना उगी थी—'अब तेरे भरोसे हूं बजरंगबली! कहते हैं, तुमने रावण की लंका जला दी थी—अकेले ही। ऐसे ही अकेला रावण की लंका में जा पहुंचा हूं! रच्छा करो!'

मन्दिर से बाहर निकलकर गाड़ी में सवार होते हुए धन्ना ने कहा था, "मास्टरजी, चुनाव का रिजल्ट आ जाये वैसे ही आप इस मन्दिर का जीर्णोद्धार करवा देना। कहते हैं बड़े सिद्ध देवता हैं!"

मास्टर जादौराम चुप थे। टकटकी बांधे उस पक्की सड़क को देखे जा रहे थे, जिसका ओर-छोर ही नहीं दीख रहा था...इस रास्ते पर चल पड़े हैं। यही रास्ता है जो गांव, कस्बे, शहर, राजधानी और पार्लियामेंट तक गया है। कहते हैं इसी पर चलते-चलते राधाकृष्णन मास्टर से राष्ट्रपति हुए थे।

जादौराम अनायास ही अपने आप पर मुस्करा पड़े।

तीन

बैलगाडी लौटी। खरेरे से कपड़े का एक झडा लगा हुआ था। झंडे पर लालटेन बनी हुई थी। धुरो पर एक ओर विलायती और तीन दिशाओं मे उसके साथी तीनों बैंडवाले थे। गाडी मे भीतर रहे मुन्नालाल और सकुन। धन्ना बैल हाकता चल रहा था। सभी के चेहरे खिले हुए थे। मुन्ना और सकुन ने बीचोबीच मास्टर जादीराम को बिठा रखा था।

पक्की सडक मे उतरकर जब बैलगाडी गाव की ओर चली तो गर-दन मोड़कर सकुन की ओर देखते हुए धन्ना ने कहा, "कोने मे माला रखी है! पुडे मे से निकालकर मास्टरजी को पहना दे, मुन्ना!"

मुन्ना ने पुडा खोलना शुरू कर दिया।

विलायती ने साथियों से कहा, "शुरू करो, रे!..."

बैंड शुरू हो गया।

अब गाड़ी अपने आप में एक ऐसा आकर्षण बन गयी थी, जिसे दो मील से भी देखने की इच्छा होती।

सभी काम सफलता से हुए थे।

शोर के बीचोबीच बिना यह परवाह किये कि कोई सुन पा रहा है या नही—धन्ना बडबड़ाता जा रहा था, "अब बेटा को बाजार भाव पता

पड़ेगा ! सारी ठकुरास इस लालटेन में ही न समा गयी तो देखना !··· चल्···क्क् क्क्···हुह···अरे, तोये नाहर खा जाये !" वैलों की पूंछ उठी और वे तेज हो लिये।

धुँधलका उतरने को था। शाम की शुरूआत का इशारा।

वैलगाड़ी जैसे ही गांव में घुसी, वैसे ही कई वच्चे चीखते-शोर मचाते, हो-हो करते पीछे हो लिये। गांव के स्त्री-पुरुष कौतुकभरी नजरों से इस गाड़ी को देखने लगे। विलायती ने अपना वाजा वन्द करके मुन्ना से कहा, "देखता क्या है यार !···तू ज़रा खड़े होके नारा लगाता चल्!" फिर वह वेंड वजाने लगा।

मुन्ना और सकुन उठ खड़े हुए—

सकुन चिल्लायी, "जादौरामजी की !"

"जै हो !"

सकुन ने नारा दिया, "हमारा नेता कौन ?"

"मास्टर जादौराम !" मुन्ना गरजा।

दोनों हवा में मुक्के भी उछाल रहे थे।

धन्ना के दिमाग़ में एक-सूझ आयी। गाड़ी मोड़ दी। अव वह अरजुन ठाकुर की ओर जा रहा था···

मास्टर जादौराम वुत वने वैठे थे। माला गले में झूल रही थी। लोग टापरों में यहां-वहां से उन्हें घूर रहे थे। जाने क्यों, मास्टरजी को वहुत असुविधा महसूस हो रही थी।

विलायती और उसके साथी गालों को आठ-आठ गुना फुलाये हुए जोर-जोर से वाद्यमंत्र फूंके जा रहे थे—

वेंड में से वोल फूट रहे थे—

'खईके पान वनारसवाला,

हो गया वन्द अकूल का तालाह···

इधर-उधर से गाय-भैसें जंगल से लौट रही थीं। वीच-वीच में उनकी रम्भाहट उभरती। गले की घन्टियां वजतीं।

सकुन तेज-तेज नारों के साथ मुट्ठी हवा में उछाले जा रही थी। बच्चे पूर्ववत् पीछे थे। अन्तर यह था कि इस गाड़ी के शोर-शराबे ने उनकी हो-हो बन्द करदी थी और अब वे भौचक्के से पीछे हो लिये। ग्रामीणस्त्री-पुरुषों में से कुछ लोग यहा-वहां से बैलगाड़ी के पीछे ही लिये लालटेनवाला झंडा हवा में लहरा रहा था…

बैलगाड़ी अरजुन की हवेली के आगे जा रुकी तो अरजुन और उसके साथी चौपाल पर एकत्र लोग और उसके परिवारजन हवेली से बाहर आकर चबूतरे पर खड़े देखने लगे।

धन्ना ने कहा, "नारे जोर से लगाओ !"

सकुन चीखी, "मास्टरजी !…"

"जिन्दाबाद !"

"पच कौन बनेगा ?"

"जादौराम !" मुन्ना ने कहा।

बेंड बन्द करके विलायतखान सहसा गाड़ी से उछलकर मैदान मे खड़ा हो गया। बाजा उसके हाथ में था और उसका पीतल चमचमा रहा था। विलायतखान ने जोशीले स्वर मे हाक लगाकर मुट्ठी हवा में लहरायी, "जादौरामजी की !"

"जै हो !"

"मास्टर जादौराम !"

सब ने एक साथ चीखकर कहा, "अमर हैं !"

ग्रामीण अबूझ भाव से हक्के-बक्के उन सभी को देख रहे थे, शोर सुन रहे थे, झंडे पर लालटेन का लहराना भी कुछ-कुछ समझ रहे थे… पर अब तक निश्चित कुछ पल्ले नहीं पड़ रहा था।

कुछ स्त्रियां थीं जो मैले-कुचैले कपड़ों में, घूघट की ओट से इन सभी को देख रही थी।

धन्ना ने कहा, "मास्टरजी। अब आप जरा चार बोल सबको बतला दो कि इस बार पंचायत चुनाव में आप भी

और चाहते हो कि गांववाले सेवा का मौका दें। जरा हाथ-वाथ जोड़ देना महाराज !"

मास्टरजी ने कुछ मासूमियत से मुन्ना और सकुन की ओर देखा। नारे उसी तरह लग रहे थे। उत्सुकता उसी तरह फैली हुई थी।

सकुन ने मास्टरजी को बांह से सहारा देकर गाड़ी में खड़े होने को संकेत किया। जैसे-तैसे मास्टरजी खड़े हुए।

"हाथ जोड़लो साहब !" मुन्ना ने धीरे से कहा।

मास्टरजी ने हाथ जोड़े।

दर्शक ग्रामीणों ने भी हाथ जोड़ दिये। जादौरामजी ब्राह्मण ठहरे तिस पर मास्टर। वे न भी जोड़ते हाथ तो ग्रामीण जोड़ते। सबके मन में इज्जत थी। गौ आदमी हैं।

अरजुन ने चिल्लाकर सवाल किया, "यह क्या चक्कर है मास्टर-जी ?"

धन्ना ने कुरेदा, "क्या करते हैं मास्टरजी, बोलो ! शुरू हो जाओ !"

मास्टरजी ने याद किया कि क्या कहना है, फिर हाथ जोड़ते हुए कहा, भाइयो, माताओ और बहिनो !···"

विलायत ने नारे बन्द कर दिये।

मास्टरजी कहे गये, "इस बार गांव की सेवा के काम में मैं भी आगे बढ़ा हूं।···मेरी इच्छा है कि आप लोग मुझे बढ़ायें, आशीर्वाद दें। मैंने पंचायत के चुनाव में फारम भर दिया है ! मुझे विश्वास है, आप लोग मुझे सेवा का मौका देंगे ! जय हिन्द !"

मास्टरजी चुप हो गये।

विलायतखान पुनः चिल्लाया, "मास्टरजी !···"

"जिन्दाबाद !" इस बार भौंचक से खड़े कुछ ग्रामीणों ने आवाज में आवाज मिलादी।

"जादौरामजी ही···"

नारा समझ मे न आने के कारण—विलायती को ही नारा पूरा करना पड़ा—"हमारे नेता हैं !"

"गांव का पच कौन बनेगा ?"

"जादोराम महाराज !" सब चिल्लाये।

अरजुन और उसके परिवारजन, समर्थक भौंचक्के हो गये थे। विश्वास नहीं हो रहा था सामने के दृश्य पर। सहसा अरजुन ने कहा था, "पर मास्टर चुनाव कैसे लड़ेंगे, वह तो सरकारी नौकर हैं ?"

"स्तीफा दे आये हैं !···सेवा बड़ी चीज है कि नौकरी ?" घन्ना गरजता हुआ चिल्लाया था।

ग्रामीणों में फुसफुसाहटें फैल गयीं।

अरजुन का चेहरा पिट गया। यह सारा किया-धरा जादोराम का नहीं, विलायती, घन्ना, सकुन और उस पाजी मुन्नालाल का है—अरजुन समझ चुका था।

घन्ना ने गाडी मोडदी। सहसा चलती गाडी में खड़ा होकर चिल्लाया "भाइयो, माताओ, भूलना नहीं···मास्टरजी का चुनाव चिन्ह है···"उसने झडे की ओर इशारा किया था, "लालटेन !"

विलायती और उसके तीनो साथी अब गाडी के पीछे-पीछे बैंड बजाते जा रहे थे। कुछ ग्रामीण और बच्चे भी जुलूस की शक्ल में पीछे ही थे।

इस तरह शाम खत्म हो गयी थी···पर गांव के आसमान में अजब किस्म का दिन उग आया था।

हर घर फुसफुसाहट हो रही थी—'इस बार राम-रावन की लड़ाई है ! जो भी हो, गरीब भले ही हो पर मास्टर—मास्टर ही है !···



इस घटना ने सहसा ही गाँव में तूफान बरपा कर दिया।
पहले घरो में चर्चा हुई। फिर चर्चा पड़ोस तक प

चौपालों पर आ गयी।

अरजुन के लिए बहुत धक्का पहुंचानेवाली बात थी। समर्थकों के चेहरे स्याह पड़ गये। बैलगाड़ी लौट गयी तो वे सब सन्नाटे में खड़े रह गये··· थोड़ी देर बाद अरजुन ने एक गहरी साँस ली, जबड़े भींचे और चारपाई पर आ बैठा। इर्द-गिर्द आठ-दस लोग। पटवारी, ग्रामसेवक, बंधुआ मजदूर और दो-चार अन्य। सब अरजुन ठाकुर के मुंह की ओर देख रहे थे। यह भी देख रहे थे कि अरजुन ठाकुर का मुंह उस गन्ने जैसा लम्बा और पिलपिला हो गया है, जिसे मशीन में डालकर रस निकाल लिया गया हो!

बहुत गंभीर बात हुई। खबर सुनी थी, पर सोचा था कि हवा है। ऐसी हवाएँ आती-जाती रहती हैं। सोचा भी नहीं जा सकता था कि १९८९ जादौराम इस कदर शरारत करेगा।

पर सब समझ रहे थे। शरारत मास्टर की नहीं लगती। शरारत है गाँव के लौंडे-लपाड़ों की। मुन्ना, विलायती, धन्ना और वह औरतों की गन्दगी साफ करनेवाली दो टके की नर्स—सकुन की। समझते हैं कि चार क्लास क्या पढ़ गये हैं, जवाहरलाल नेहरू बन जायेंगे! पाजी कहीं के!

अरजुन होंठ भींचे हुए था। हवेली की ओर मुंह करके पुकार फेंकदी, "अरे, जरा हुक्का तो बनवाओ।" फिर अपने साथियों के चेहरों को देखा। सब सूखे हुए। उसकी ओर ऐसे देखते हुए जैसे इस मुरझाहट को दूर करने वाली रसबूंद अरजुन से ही गिरेगी। अरजुन ने दांत भींच कर कहा, "हूं···तो मास्टर को चुनाव लड़ने की सूझी है!"

पटवारी ने कहा, "चिऊंटी के पर निकले हैं ठाकुर साहब!···"

ग्रामसेवक पण्डित बोले, "मौत से पहले ऐसा होता ही है।"

"पर हम ब्रह्महत्या करना नहीं चाहते!" अरजुन ने समाधान किया। इस तरह शांत होकर बोला था जैसे बरफ हो गया हो।

नत्थीलाल ने मन-ही-मन सराहा—धन्न है! इसे कहते हैं पालिटिक्स

और पालिटिशियन। जूते पड़ जायें तो भी यों मुसकराये जैसे फूल बरसे थे। ऐसे लोग ही कुछ कर पाते हैं। वाह-वाह!

अरजुन के पास बैठा उसका समर्थक गजुआ पहलवान बोला, "यह तो ठीक है ठाकुर बिरमहत्या नहीं होनी चाहिए, पर बिराम्हन ही अगर हत्या करने पर आ जाये तो क्या बचाव नहीं किया जायेगा?"

"जरूर किया जायेगा!" पटवारी ने हांक लगायी।

"सही बात है।" नत्थीलाल ग्रामसेवक ने जोर से कहा, "गान्धी महात्मा ने कहा है कि जो जुल्म करे सो भी बुरा। जो जुल्म सहे सो भी बुरा। जादौराम अगर हमला करेगा तो हम लोग ऐसे ही बैठे रहेंगे क्या?"

अरजुन ठाकुर की अंगुली अनायास ही मूंछ पर चली गयी। बोला, "बेकार की बात सोच रहे हो नत्थी!...बेचारा जादौराम मास्टर काहे से हमला करेगा? कौन-सा हथियार है उसके पास!...बतलाओ, कौन-सा है?"

नत्थीलाल ने जवाब दिया, "उसके पास उसकी भलमनसी और शराफत ही सबसे बड़ा हथियार है, ठाकुर! यह इसी की मार करेगा। यही गांव क्यों, सब तरफ लोग उसे मानते हैं, इज्जत करते हैं। और कहते हैं कि शराफत की मार बहुत बुरी होती है।"

"हुह!" अरजुन घृणा से गुर्राया, "दो पैसे का बाम्हन स्साला! वह क्या करेगा? उसके हथियार देख-समझ लेंगे।"

नत्थीलाल का चेहरा पिट गया। जादौराम के विरुद्ध वह अरजुन ठाकुर का समर्थक जरूर है, पर यह मतलब तो नहीं कि अरजुन पूरी जाति को ही कोस ले? उसने जादौराम को लेकर जो कहा, एक तरह से नत्थी से भी कह डाला। बुरी तरह अपमानित और आहत हो गया था नत्थीलाल। पर मन को घोंट लिया। उलझना ठीक नहीं होगा। जादौराम के पास तो इज्जत का हथियार भी है, नत्थी किस चीज से हमला करेगा। ठाकुर के पहले हाथ में ही धरती से जा लगेगा। चुप र

कुशल। चुप रहा।

वे सभी चुप रहे।

भीतर से एक बंधुआ मजदूर हरिया ने आकर हुक्का ठाकुर के हाथ में थमा दिया। अरजुन ने कुछ कश खींचे-छोड़े, फिर कहा, "मेरे नमक और व्यौहार में ही कांटे हैं स्साले। जिसका भला करो, वही गले पड़ जाता है। अब इस हरामी जादौराम का कम से कम दस बार ट्रांसफर रुकवा चुका हूं। इसकी खातिर नकछेदी एम० एल० ए० तक ने राजधानी तक दौड़ लगायी है'''और आज यही दो टके का आदमी मेरे खिलाफ खड़ा हो रहा है? वाह री तकदीर!"

दिया-बत्ती की वेला हो आयी थी। अरजुन जैसे-जैसे सोच रहा था, वैसे-वैसे उलझता जा रहा था। क्या सोचा था और क्या हो गया! इस बार खयाल था कि इलेक्शन में निर्विरोध आयेगा। पाँच-दस हजार की [illegible] से बच लेगा, पर इस जादौराम के बच्चे ने सब सत्यानाश करके रख दिया।

गजुआ कोने में बैठा था। तेल पिलाया हुआ लट्ठ बगल में। हाथ-पैर भी रस्सी की तरह इठे हुए। अरजुन का जी हुआ कि उससे कह दे—'लगा स्साले मास्टर में! समझा दे कि अरजुन से उलझना कितनी बुरी बात है!' पर बात मन में ही दबानी पड़ी। ऐसी मूरखता तो ज्यादा ही गले पड़ जायेगी। फिलहाल तेल देखना होगा, तेल की धार देखनी होगी। अभी चुनाव में पूरा एक महीना पड़ा है।

मास्टर जादौराम और उसके साथियों को लेकर गाली-गुत्ते के अलावा इस शाम कुछ हो नहीं सका। जो होना है, इन चमचों के कहे तो होना ही नहीं है, अकेले अरजुन को ही करना होगा। अकेले में सोचेगा।

बस, हुआ इतना कि गजुआ और साथवालों को खबर दी गयी, "अभी ज़रा हाल-चाल देखो इन लोगों के। फिर रणनीति तय करेंगे!"

हवेली के भीतर से ठकुरानी ने लालटेन भिजवा दी। अरजुन कुढ़कर रह गया। क्या निसान सोचा है हरामियों ने। लालटेन!'''रोज

मुन्ना ने यांत्रिक ढंग से दोनों चीजें सम्हाली और कहा, "हूं ?"

"दस पौंड चाय का डिब्बा।" धन्ना ने क्रम से सारी लिस्ट बोल दी। मुन्ना ने लिख तो लिया, पर कुछ चिन्तित हो उठा। सोचा, ये सामान कम से कम सौ सवा सौ रुपये का हो जायेगा! कहा, बजट ज्यादा हो रहा है, कुछ कंटनी-छंटनी हो जाये तो ठीक रहे।"

विलायती ने कहा, "सुनाओ लिस्ट।"

मुन्ना ने लिस्ट पढ़दी—

चाय—दस पौंड का डिब्बा।

सकुन ने बिलबिलाकर कहा, "पागल हुए हो। चार पौंड करो!"

मुन्ना ने तुरन्त सुधार कर दिया। अब लिस्ट यों बनी।

चाय—चार पौंड का डिब्बा।

शकर—पचास किलो।

दूध—रोज आयेगा दस किलो।

इलायची—एक पाव।

सकुन चिल्लायी, "इलायची का क्या होगा ?"

"हद करती हो तुम!" विलायती ने कहा, "बिना इलायची की पियेंगे क्या तहसीलदार, थानेदार, अफसर वगैरा। इलायची होनी चाहिए तुम जो समझती नहीं हो, उसमें बोलो मत। हां, भई मुन्ना पढ़ आगे।"

मुन्नालाल ने पढ़ना शुरू किया—

कप-पलेट—बीस जोड़ी।

कांच-गिलास—बारह।

टिरे—एक।

"ये टिरे क्या होती है ?" विलायती ने पूछा।

"तू कभी सभा-सोसायटी में बैठा हो तो मालूम होगा।" धन्ना ने कहा, "मैं एक बार बाबूजी के यहां दिल्ली गया था, तब देखा…"

"कौन बाबूजी ?"

"अरे बाबूजी क्या हमारे देश में दस-बीस हैं ? कुल जमा एक हैं—

बाबूजी—जगजीवनरामजी।" दबाव के साथ घन्ना ने कहा।

"अच्छा-अच्छा, ठीक है। आगे पढ़ो।" विलायती ने बात टाली। अच्छा नहीं लगा। इतना पढ़-लिख कर भी टिरे नहीं समझ पाया आज तक। उसने अच्छी तरह मन ही मन शब्द घोंट लिया—टिरे, टिरे, टिरे!···

"अब आगे कुछ नहीं है।" मुन्ना ने डायरी बन्द कर दी।

"ठीक है।" घन्ना ने डायरी उसके हाथ से ली और सकुन की ओर बढ़ा दी, "लो, सम्हालो। मोटन से कहना कि मास्टरजी इकट्ठा हिसाब करेंगे। इलीक्सन लड़ रहे हैं।"

सकुन उठ खड़ी हुई। भीतर गयी। श्यामा से कहा कि एक थैला दे दे और बाहर निकल गयी।

मास्टर जादौरामजी कोने में चबूतरे पर लेट रहे। बहुत थक गये आज। मुन्नालाल ने कहा, "पाव दबा दूं साब?"

"नहीं-नहीं, रहने दे!" जादौरामजी ने आंखें मूंद ली। पर लालटेन की रोशनी में नींद नहीं आने वाली थी—जानते थे।

विलायती ने कहा, "ये इलीक्सन चीज़ ही ऐसी है। लगता है दस-बीस लड़कियों का एक साथ ब्याह कर रहे हों। सारे अजर-पजर ढीले हो जाते हैं भाई!" उसने शरीर अकड़ाया।

मुन्नालाल दीवार से टिका हुआ सोच रहा था कि यह इब्तिदा है ···आगे न जाने क्या हो!

घन्ना ने कहा, "कल सुबेरे···एकदम सुबेरे मीटिंग कर लो। अब सब हिसाब जमाना पड़ेगा।"

"कित्ते बजे आया जाये?" विलायती ने पूछा।

मुन्ना ने थके हुए मास्टरजी की ओर सहानुभूति से देखा। घन्ना ने उत्साह के साथ कह दिया, "छह बजे आ जाओ। हाथ-मुंह यहीं से धोने चलेंगे। साथ-साथ।"

विलायती उठ पड़ा। घन्ना गाड़ी में गया। थैले से कपड़े

आधा थान निकाल लाया। लाकर मास्टरजी के पास रख दिया। कहा, "झंडों के लिए कपड़ा है !" और फिर तेज चाल में वाहर हो गया।

मास्टर जादोराम निरीह भाव से कपड़े की ओर देखने लगे। सुबह घर की कुल पूंजी तीन सौ रुपया लेकर निकले थे। ढाई सौ रुपये धन्ना ने ले लिये थे। कहा था कि जरूरी खर्च के लिए चाहियेंगे। वाद में हिसाव दे देगा।

रात का पहला पहर ढलने को हो आया था। लालटेन अव भी जल रही थी। जादोराम के वदन में थकान थी, इसके वावजूद नींद गायव। कभी दूसरों पर हंसते थे। एक वार ऐसे ही कल्याणसिंह खड़ा हो लिया था अरजुन के खिलाफ। जादोराम ही थे, जिन्होंने दस वातें कह सुनायी थीं। कहा था—'ये चुनाव-वुनाव करवाने से पहले जरा अपनी हैसियत देख ली होती कलयान ?···तीन वेटियां व्याहने को वैठी हैं। खेती-वाड़ी तू ठीक तरह करता नहीं। जुए की तुझे लत है···उस पर ले वैठा है पंचायत चुनाव। भगवान तुझे सद्‌वुद्धि दे !"

कलयान हंसकर रह गया था। जुए में हजारों-हजार गंवा चुका था। भय नहीं था मन में। या यों कहलो कि वेशर्मी समा गयी थी। वोला था, "जुआरी ही ठहरा, मास्टरजी ! सोचा, जिन्दगी का आखरी जुआ और सही।"

मास्टरजी ने कहा था, "खेल ले, भाई। पर सच जानना यह जुआ हम-तुम जैसों के वस का नहीं है !"

और आज उसी जुए में खुद जादोराम उतर चुके थे। इतने उतर चुके थे कि अव वाजी का फैसला हुए विना वापसी कठिन। कलयानसिंह तो जैसे ही मात खाने लगा था, वैसे ही दन् से चाल चल दी थी उसने। दो हजार रुपया ठाकुर अरजुन से लेकर ठीक वखत वैठ गया था। सारे-गांव से वड़ी वेसरमाई से कह डाला था उसने, "भाइयो, माताओ, वहिनो !···मैं चुनाव से अपना नाम वापिस ले रहा हूं। अव आप लोग अरजुन ठाकुर को ही वोट दें। उनसे वढ़िया उम्मीदवार कोई नहीं था···

मैंने अपने बारे में गलत समझ लिया था।"

बड़ी जगहंसाई हुई थी कलयान की। पर उस पर असर नहीं था। जुआरी-शराबियों के साथ सुविधा यही होती है कि भरम लिहाज मर चुकता है। ढलुआं पत्थर हो जाते हैं।

उन्होंने एक करवट से ली। इतनी दौड़भाग कभी नहीं की। पैर की एड़ी से लेकर कपाल तक ठकठकाहटें हो रही थी।

अब क्या होगा? वह सोचने लगे थे। जीत सकेंगे?···पर आज जिस तरह उन्हें उम्मीदवार देखकर गांव वाले एकदम 'जिन्दाबाद' करने लगे थे, उससे लगता है कि जीत ही जायेंगे···

मगर चुनाव के बारे में आज तक कोई निश्चित कह नहीं पाया। ठीक समय कहते हैं, ऐसी-ऐसी गोटियां चली जाती हैं कि आदमी दंग हो जाये। घोर अविश्वास छल-प्रपंच और मक्कारी का खेल है! वैसा सब कुछ जादोराम कर सकेंगे? कर भी सकते तो करते?

उन्हें लगा कि रोशनी आंखों में गड़ने लगी है। लालटेन मन्दी करके लेट रहे। पर नींद नहीं आ रही थी। बराबर सवाल कौंध रहा था—बेकार ही उलझ गये! सच पर इस कदर भरोसा करना भी मूर्खता नहीं है क्या कि जादोराम कोरी भलमनसाहत की सीख पर चुनाव जीतने का विचार कर डालें?

बेशक मूर्खता है।

पर आदमी की मुसीबत तो यह है कि मूर्खता करने के बाद उसे निबाहना पड़ता है। तिस पर सच के लिए की गयी मूर्खता···वह तो सौ फीसदी निबाहनी पड़ेगी। जादोराम ने सोचा। पलकें फिर से मूंद लीं।

रोशनी कम हो गयी थी, फिर भी लग रहा था कि चटक धूप में खड़े हुए हैं।

सुबह वे सब फिर आ पहुंचे थे। धन्ना ने आते ही बतलाया था कि रात देर तक जागकर उसने खर्च का कुछ हिसाब बनाया है और कुछ आंकड़े तैयार किए हैं। विलायती ने कहा कि आंकड़े उसके दिमाग़ में भी हैं। गांव में मुख्य वोट चार किस्म के ही थे। ब्राह्मण, ठाकुर, हरिजन और मुसलमान।

और इन चारों बिरादरियों के चार आदमी भी मौजूद थे। विलायती ने कहा था कि मुसलमानों को वही सम्हाल लेगा। धन्ना की जिम्मेदारी हरिजन थे। सकुन ठाकुर घेरे में बात करेगी। मास्टर जादौराम खुद दिन भर ब्राह्मणों से मिलेंगे।

मुन्ना ने कहा, "मिल-जुल भले ही लो। पर हर तरफ के मुखिये सम्हालना जरूरी है। असल पकड़ उन्हीं पर होनी चाहिए।"

सकुन ने समर्थन किया था। बोली, "मैं तो कलयानसिंह के घर में बात करूंगी।"

"सही है।" मुन्ना ने कहा था, लुगाई से बहुत दबता है। अगर तुम कटोरी पर जादू-मंतर फेर पायीं तो समझलो कि अरजुन के आधे बिरादरी के वोट ही साफ हैं।"

मुन्ना को सामान की जिम्मेदारी सौंपी गयी थी। मीटिंग का सामान था। गैस की लालटेनें मंगवानी थीं, एक पंडाल आना था। तख्त, जाजम ढोल और माइक भी जरूरी समझा गया था। धन्ना ने उसे अपनी बैल-गाड़ी से सब सामान किराये पर उठा लाने को कहा था।

दस बजते-न-बजते सभी अपने अपने अभियान पर निकल पड़े थे। शाम तक सब लौट पाये। बीच-बीच में गांव के यहां-वहां भटकते सब मिलते भी रहे थे। सब खुश थे। सबको वायदा मिला था। सभी ने एकमत राय दी थी कि अरजुन की दारू और पैसा इस बार कुछ असर नहीं करने वाला।

सारी खबरें अरजुन के पास पहुंच रही थी। नत्थीलाल शर्मा ने कहा था, "ठाकुर साहब, आप सुस्त न हुए तो समझना कि डूब गये!" फिर मास्टर जादौराम और उनके समर्थकों की गतिविधियां जा सुनायी थी।

अरजुन रणनीति तय कर चुका था। बोला, "महीना बीतने दो। वोटिंग से आठ दिन पहले काम शुरू करूंगा। फालतू की घूमाचौकड़ी किसलिए करूं!"

"पर जनसम्पर्क···?" नत्थीलाल ने सलाह दी थी।

"वह तो चल ही रहा है। थोड़ी आवाज धीमी करनी पड़ेगी और क्या!·····"अरजुन हंसा था, "असल फैसला तो ठीक वखत ही होता है भाई! उस दम जिसने चोट मार ली सो मार ली। वोटर स्साले की याद-दाश्त ही कितनी है। अब देखो ना, चरणसिंह-राजनारायण ठीक वखत पर इन्दिराजी के घर समर्थन का कटोरा लेकर पहुंच गये कि माई सरकार बनवा दो। और उन्होंने बनवा दी। यह होती है राजनीति।"

नत्थीलाल कुछ परेशान था। गांव में जो हवा बन रही थी, वह सूंघ पा रहा था। साफ-साफ जादौराम भारी हो गया है। इतना कि ठीक समय कमर भी नहीं निकल पायेगा ठाकुर!

पर ठाकुर से बहस भी करना ठीक न था। कह देता—"तुम क्या जानो! तुम्हारी तीन पुश्तों में भी कभी यहाँ चुनाव लड़ा है? पालिटिक्स की है?"

अरजुन दिमाग ही दिमाग में सब बिठाये हुए था। दो दिनों से जादौराम और उनके आदमियों ने सारा गाँव पोत डाला था। हर कच्चे घर पर खड़िया या गेरू से बड़ी-बड़ी लालटेनें बना दी थीं। पक्की सड़क की पुलिया और वहां के पार तक "गौसपुरा के पंच-पद हेतु मास्टर जादौराम को वोट दो' लिख डाला था। हरिया ने सूचना दी थी कि आज मुन्ना और सकुन मिलकर सीतला माता के मन्दिरवाले मैदान में पंडाल तनवा रहे थे। सुना था कि अफसरों को बुलाया था···तहसीलदार तहसीलदार

सुवह वे सब फिर आ पहुंचे थे । धन्ना ने आते ही वतलाया था कि रात देर तक जागकर उसने खर्च का कुछ हिसाव वनाया है और कुछ आंकड़े तैयार किए हैं । विलायती ने कहा कि आंकड़े उसके दिमाग़ में भी हैं। गांव में मुख्य वोट चार किस्म के ही थे । ब्राह्मण, ठाकुर, हरिजन और मुसलमान ।

और इन चारों विरादरियों के चार आदमी भी मौजूद थे । विलायती ने कहा था कि मुसलमानों को वही सम्हाल लेगा । धन्ना की जिम्मेदारी हरिजन थे। सकुन ठाकुर घेरे में वात करेगी । मास्टर जादौराम खुद दिन भर ब्राह्मणों से मिलेंगे ।

मुन्ना ने कहा, "मिल-जुल भले ही लो । पर हर तरफ के मुखिये सम्हालना ज़रूरी है । असल पकड़ उन्हीं पर होनी चाहिए ।"

सकुन ने समर्थन किया था । वोली, "मैं तो कलयानसिंह के घर में वात करूंगी ।"

"सही है ।" मुन्ना ने कहा था , लुगाई से वहुत दवता है । अगर तुम कटोरी पर जादू-मंतर फेर पायीं तो समझलो कि अरजुन के आधे विरादरी के वोट ही साफ हैं ।"

मुन्ना को सामान की जिम्मेदारी सौंपी गयी थी । मीटिंग का सामान था । गैस की लालटेनें मंगवानी थीं, एक पंडाल आना था । तखत, जाजम ढोल और माइक भी जरूरी समझा गया था । धन्ना ने उसे अपनी वल-गाड़ी से सव सामान किराये पर उठा लाने को कहा था ।

दस वजते-न-वजते सभी अपने अपने अभियान पर निकल पड़े थे शाम तक सव लौट पाये । वीच-वीच में गांव के यहां-वहां भटकते स मिलते भी रहे थे । सव खुश थे । सवको वायदा मिला था । सभी एकमत राय दी थी कि अरजुन की दारू और पैसा इस वार कुछ अस नहीं करने वाला ।

सारी खबरें अरजुन के पास पहुच रही थी। नत्थीलाल शर्मा ने कहा था, "ठाकुर साहब, आप सुरु न हुए तो समझना कि डूब गये !" फिर मास्टर जादोराम और उनके समर्थकों की गतिविधियां जा सुनायी थी।

अरजुन रणनीति तय कर चुका था। बोला, "महीना बीतने दो। वोटिंग से आठ दिन पहले काम शुरू करूंगा। फालतू की घूमाचौकड़ी किसलिए करू !"

"पर जनसम्पर्क ···?" नत्थीलाल ने सलाह दी थी।

"वह तो चल ही रहा है। थोड़ी आवाज़ धीमी करनी पड़ेगी और क्या!····"अरजुन हंसा था, "असल फैसला तो ठीक वखत ही होता है भाई ? उस दम जिसने चोट मार ली सो मारली। वोटर स्साले की याद-दाश्त ही कितनी है। अब देखो ना, चरणसिंह-राजनारायण ठीक वखत पर इन्दिराजी के घर समर्थन का कटोरा लेकर पहुच गये कि भाई सरकार बनवा दो। और उन्होंने बनवा दी। यह होती है राजनीति।"

नत्थीलाल कुछ परेशान था। गांव में जो हवा बन रही थी, वह सूघ पा रहा था। साफ-साफ जादोराम भारी हो गया है। इतना कि ठीक समय कमर भी नही निकल पायेगा ठाकुर !

पर ठाकुर से बहस भी करना ठीक न था। कह देता—"तुम क्या जानो ! तुम्हारी तीन पुश्तों में भी कभी यहां चुनाव लड़ा है ? पालिटिक्स की है ?"

अरजुन दिमाग ही दिमाग में सब बिठाये हुए था। दो दिनों में जादो-राम और उनके आदमियों ने सारा गांव पोत डाला था। हर कच्चे घर पर खड़िया या गेरू से बड़ी-बड़ी लालटेनें बना दी थीं। पक्की सड़क की पुलिया और वहां के पार तक "गोसपुरा के पच-पद हेतु मास्टर जादोराम को चोट दो' लिख डाला था। हरिया ने सूचना दी थी कि आज कुन्दन और सकुन मिलकर सीतला माता के मन्दिरवाले मैदान में पडाल तनवा रहे थे। सुना था कि अफसरों को बुलाया था···तहसीलदार दरोगा वगैर

के गांववाले अब्बासी मास्टर, सिन्धी मोटनदास, सभी आ रहे थे। इनमें जो गैर-सरकारी थे, बोलने वाले थे। सरकारी लोग और जनता सुनने वाली थी।

अरजुन का माथा ठनक गया था। यह खबर कुछ चौंकाने वाली थी। उसे भी लगा था कि चुप बैठे रहना ठीक नहीं होगा! सबसे दो घंटे की मोहलत मांगकर सिर्फ हरिया को बुलाया था। कहा था कि जिन-जिन लोगों को वह सन्देशा देगा, उन्हें अलग-अलग टाइम भी दे···फिर कई लोगों को बुलावा भेज दिया था।

चार दिन से चैन की नींद ले रहे मास्टर जादीराम को सपना आया था—पंच हो गये हैं। सब गाँव के बीचोंबीच मालाएँ पहने हुए हंस-हंस कर हाथ जोड़ रहे हैं और कह रहे हैं कि गांव वाले चिन्ता न करें। अब गांव का उद्धार भी होगा, विकास भी।

पर पांचवे दिन की दोपहर समर्थकों की मीटिंग में जो खबर मिली, उसने हड़बड़ा दिया। धन्ना लाया था खबरें।

श्यामा चाय बना रही थी। सकुन 'टिरे' में दो बार कप लाकर सबके सामने रख गयी थी।

जादीराम बुत बने बैठे थे। रोज़ की तरह मोटन सिन्धी का नौकर आकर उस सामान की लिस्ट थमा गया था, जो गये दिन मास्टरजी के यहां गया था।

धन्ना ने कहा, "अब हवा बदली है···इसका मतलब है कि अरजुन ठाकुर भी शुरू हो गया है।"

"मगर बड़े कमीनेपन से शुरू हुआ है। विलायती ने कहा था।

सकुन अपना कप लेकर एक ओर आ बैठी। पूछा, "सो, कैसे ?"

धन्ना और विलायती ने विवरण दिया। उसने यानी अरजुन ने बस्ती के हर जातवाले मुखिया को बुलवाया था। उनके दिमाग खराब किये हैं।

किसी को धौंस धमकी दी है, किसी के लिए टुकड़े फेंके हैं।

"वही तो पूछूं, किस तरह ?" सकुन बुदबुदायी थी।

विलायती ने कहा, "मुसलमानों में से मौलवी अताउल्लाह को बुलाया था। आप लोग जानते हैं कि मजहब का बड़ा कट्टर होता है मुसलमान। सुनते हैं कि अब अताउल्लाह अरजुन के लिए घर-घर कहते फिर रहे हैं। कुरान की कसम लेकर वोट का वायदा ले रहे हैं। मक्का-मदीने का नाम ले रहे हैं और कह रहे हैं कि जादोराम का कनेक्सन आर० एस० एस० से है।"

सभी भौंचक हो लिये। पूछा, "कैसा कनैक्सन ?"

कुछ लोग राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के इस अंगरेजी नाम से आर० एस० एस० को जानते थे, कुछ नहीं। विलायती बोला, "अरे तुमने देखा नहीं बगल के रामनगर में खाकी निकर और सफेद कमीज पहने हुए काली टोपी लगाये कुछ जवान और बच्चे हर शाम खेलते-कूदते हैं—वही !"

सकुन बोली, "पिछली बार जब नदी का पानी हरिजन-बस्ती तक आ गया था तो पुलिस के साथ-साथ ये लड़के भी एक साथ आकर लोगों की सेवा में जुटे थे…"

"पर उनसे इलैक्शन का क्या मतलब है ?" मुन्ना ने सवाल किया ?

"मुझे तो मालूम नहीं, पर मौलवी साहब सब तरफ यह कहते फिर रहे हैं कि जादोराम का उनसे कनेक्शन है और ये खाकी नेकरवाले लोग मुसलमानों को मुल्क से भगा देंगे।"

"अरे ?" हैरत में पड़ गया मुन्नालाल। बोला, "यह गणित किस तरह का है, मेरी तो समझ में नहीं आ रहा भाई ?"

"समझ में तो मेरी भी नहीं आता।" विलायती ने कहा, "पर पालिटिक्स में गणित इसी तरिया होता है। ये परचार तो ऐसी जलालत है कि चिल्ला-चिल्लाकर सीता माता को सूपनखा में बदल दे और सूपनखा को सीता माता में।"

मुन्ना तिलमिला उठा, "जब जानते थे तुम लोग कि यह सब कमीनगी कारोबार है, तब बेचारे मास्टरजी को किसलिए इस नरक में खींच ाये ?"

"कारोबार बुरा नहीं होता मुन्ना। कमीनगी बुरी होती है।" धन्ना कहा, "मास्टरजी चुनाव में खड़े हुए हैं तो इसका मतलब यह तो नहीं क झूठी, बेअकली की बातें करके लोगों को भटकाएं। अपनी ईमानदारी ौर हक के लिये लड़ रहे हैं।"

"पर सोचो, इस कमीनगी का क्या जवाब दिया जायेगा ?" मुन्नालाल उसी तरह झुंझलाता जा रहा था।

जादौराम ने टोक दिया, "इतना क्रोध मत कर मुन्ना। शांति से सुन। ओछा काम जित्ता बुरा है, ओछी बात करना उससे भी ज्यादा बुरा है।"

"ईंट का जवाब पत्थर से न दिया जाय तो चुनाव नहीं लड़ पायेंगे, मास्टरजी !" मुन्ना ने अकुलाकर कहा, "इस तोड़-फोड़ और झूठे प्रचार की जड़ तो काटनी ही पड़ेगी। भले झूठ से ही क्यों न काटी जाये ?"

जादौराम एक पल खामोश होकर देखते रहे···वे सभी जादौराम का चेहरा देख रहे थे। एक गहरी सांस लेकर जादौराम ने गंभीरता से कहा, "अगर इसी शर्त पर चुनाव जीतना है तो मैं नहीं लड़ूंगा—बैठ जाऊंगा।"

सब स्तब्ध हो गये ! कुछ भयभीत और चिंतित होकर एक-दूसरे को देखने लगे। मास्टर जादौराम को बेकार ही उलझा बैठे। ऐसा सीधा शरीफ आदमी भला क्या चुनाव लड़ता ?···घर सिन्धी किरानी के यहां गिरवी हो चुका था। चुनाव खर्च के लिए चार हजार रुपये लिये थे। एक दिन पहले मास्टरजी अपनी ग्रेच्युटी ले आये थे। साढ़े तीन हजार रुपया थी। उसमें से भी काफी कुछ खर्च हो लिया था। सकुन ने सोचा—यह पाप उसे भी लगेगा···ठीक है कि सभी ने न्याय-धरम के नाम पर उन्हें चुनाव के लिए लाचार किया था···पर पाप हुआ। ऐसे ही जैसे कसाईखाने में सब मिलकर गाय बांध आये हों। सब थोड़े-थोड़े

अपराधी। मन भारी हो गया।

मास्टरजी कह रहे थे, "एक बात अच्छी तरह समझ लो तुम लोग। जिस ईमान पर खड़ा हुआ हूं, उससे डिगकर चुनाव जीतने तो क्या सुरग पाने के लिए भी मैं ऐसा करने को तैयार नहीं हूं। यही सोच-समझकर तुम लोग जो ठीक समझो सो करो!" जादौराम उठ पड़े थे। कमरे में चले गये।

वे सब-के-सब थोड़ी देर स्तब्ध बैठे सुनते रहे थे। धन्ना ने चिन्तित स्वर में कहा था, "मास्टरजी जरा-जरा बात पर न्याय-धरम को बीच में लायेंगे तो कैसे काम चलेगा यार?" वह मुन्ना की ओर देख रहा था। चेहरे पर चिन्ता और उदासी बिखर आयी थी। उसने कुछ दाव-पेंच सोच रखे थे, मगर मास्टरजी के निर्णय ने उसका हर दाव-पेंच काट दिया था।

सकुन बोली, "जैसे भी हो अब काम किये जाओ। मास्टरजी की आत्मा दुखे ऐसा कोई काम नहीं होना चाहिए। बस!"

"भले चुनाव हार जायें!" बिलायती ने कहा। खीझ उठा था वह, "चुनाव में तो यह सब चलता ही है। एक पटखनी वह देगा तो हम भी टंगड़ी मारेंगे। इसी तरह चलता है। यह मन्दिर में पूजा करना नहीं है। पालिटिक्स है। इसमें तो दरजीवाला सुभाव चाहिए। ऐसा ईमान हो कि मां की अंगिया सिये और उसमें से कपड़ा चुरा ले। तब बात बनती है।"

"बनती होगी, पर यहां तुम्हारा दरजीपन नहीं चलेगा।" मुन्ना ने कहा, "यहां उसी तरह काम होगा जैसे मास्टरजी चाहते हैं!"

"पर मास्टरजी यह कैसे भूल जाते हैं कि उनके साथ-साथ हमारी इज्जत भी दाव पर लग गयी है। किसी न किसी तरह यह चुनाव जीतना हमारे लिए इज्जत का सवाल है!" धन्ना बोला।

"होगा, पर मास्टरजी की इज्जत और हमारी-तुम्हारी इज्जत में बहुत फरक है। हमारी-तुम्हारी बात लौंडियाओं में

साथ ऐसा नहीं होगा। जिन्दगी भर जिस आदमी ने सत्त-धरम निबाहा हो अब आकर झूठ में जा गिरे—यह नहीं होगा। हम ईमान से प्रचार करेंगे···"

"वह भले ही स्साला सुबेरे से शाम तक झूठ बोले और बुलवाये ?" हिचक्कर बोल गया था विलायती, "उसने हरिजन-बस्ती के मांगीलाल को चिट्ठी लिखकर दे दी है कि रोज चालीस बोतल दारू ठेके से ले आये और बस्ती में बांटे···नत्थीशर्मा घर-घर जाकर बाम्हनों के यहां कहता फिरता है कि जिस मास्टर जादौराम के यहां धन्ना जैसे हरिजन और मुझ जैसे मुसल्ले को प्याले में चाय पिलायी जाती हो और जिसकी बिटिया कप पलेट साफ करती हो—उसको वोट देकर धर्म न बिगड़वाएं ! और तुम कहते हो कि धरम-ईमान से काम लेना है? आदमी हो कि पैग़म्बर ?"

"पैगम्बर होता तो यहां न बैठा होता। तुम्हारी मस्जिद में घुसकर उस मूरख मौलवी को समझाता कि हिन्दू-मुसलमान में फालतू बैर न बढ़वाये···ये देश उन सबका है जो यहां पैदा हुए हैं और वोट मुसलमान और हिन्दू को नहीं—इस देश के आदमी को जा रहा है। उसे सिरफ आदमी देखना है। उसका ईमान-धरम देखना है।"

"अहा-हा···!···वाह-वाह !···गौसपुरा में गांधी जनमेगा—कौन जानता था !" बिलबिलाकर धन्ना ने जवाब दिया था।

विलायती ने कहा, "रहने दो यार !···गलती हमारी ही थी कि मास्टरजी को चुना। बदमास के साथ बदमासी से न निबटो तो भला पार पड़ेगा ?"

सकुन चुप थी। किस तरफ, क्या कहे, समझ नहीं आ रहा था। धन्ना ने कहा, "मूड बिगड़ गया। श्यामा बहना से कहना कि चाय बनाये। फिर काम पर निकलेंगे, देखेंगे कि क्या होता है। अब फंसे तो हैं ही !"

सकुन चाय के लिए कहने चली गयी। मुन्ना चुपचाप बैठा था।

सहसा उसे याद हो आया कि पंडाल पर आदमी काम कर रहे हैं। उठा और जाने लगा। विलायती ने पूछा, "अब कहां चल दिये धरमराज महाराज ?"

"सभा का काम देखने जा रहा हूं।" मुन्ना ने जवाब दिया। बाहर निकल गया। विलायती ने जो-जो सूचनाएं दी थीं, उनसे चौंक वह भी गया था। अगर इस तरह के हथकंडों का ताकतवर ढंग से सामना न किया गया तो जादौरामजी को इस चुनाव के भंवर से भगवान भी नहीं बचा सकेंगे—साफ दीख रहा था।

☐ ☐

अरजुन का जोर बढ़ता ही जा रहा था। चुनाव में आठ दिन बच रहे थे। अरजुन के आदमियों ने रातों रात खड़िया से वे सारे नारे पोत डाले थे, जिन पर 'जादौरामजी को वोट दो' लिखा हुआ था। लालटेनें पुछी-मिटी नजर आती थीं। वे सब परेशान हो रहे थे। झुंझला-झुंझला पड़ते। यहां तक कि सकुन को भी लगा था कि मास्टर जादौराम जरूरत से ज्यादा ही आदर्श बघार रहे हैं। धन्ना न जाने कितनी बार कह चुका था "उस लीडर की स्साले की जमानत जब्त होती है, जो अपने वर्कर की इज्जत नहीं करता। बात नहीं मानता, सलाह नहीं सुनता।" झुंझलाहट और खीझ के कारण उनका असन्तोष अब गाली-गुत्ते तक आ पहुंचा था।

अरजुन के आदमी जोर पकड़ रहे थे। हरिजन-बस्ती के कुछ लड़के पकड़ रखे थे उसने। दस रुपया रोज देता था, एक दारू की बोतल। यही हुआ था ठाकुरों के मामले में। कुछ तो जाति जोर मारती, कुछ आये दिन की मुलाकातें और कुछ साथ-बैठ-उठकर होने वाली दावतें।

बाम्हणों में बहुत ताकत और जोर से नत्थीलाल ने प्रचार किया था कि जादौराम धर्मभ्रष्ट आदमी हैं। अब जादौराम का नाम आते ही तुरंत उत्तर फूट निकलता—'नहीं-नहीं भाई। जादौराम मास्टर अच्छे हैं, पढ़े-

लिखे हैं, पर धरम नष्ट हो चुका है। उनके जीत जाने से ब्राह्मणों का भला नहीं है। आदमी सौ पाप करले, पर धरम-छोड़ दे उससे बड़ा पाप कोई नहीं।'

स्थिति निरन्तर गंभीर और गंभीर हुई जा रही थी।

मुन्ना और मास्टरजी सुबह से शाम तक कहते घूमते। कभी गांधी का नाम आता, कभी तिलक का, किसी बार विवेकानन्द उलझते, किसी बार गुरु नानक। तर्क भी कि हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख सब इन्सान हैं। आदमी खान-पान से नहीं, ईमान सचाई और शराफत से पहचाना जाता है। यही सबसे बड़े धर्म हैं। सब धर्मों में यही लिखा है, पर बेकार···

कोई हवा न बन पाती। होता यह कि ऊलजलूल तर्क, बहसों और यहां तक कि दुत्कारों तक से सामना पड़ जाता।

इस दुरदुराहट ने धन्ना, विलायती और सकुन को बेतरह उखाड़ दिया। सोचते कि बुरे फंसे!

इधर एक और बला आ गयी। जादौरामजी का रुपया खात्मे के बिन्दु पर आ पहुंचा। जिन वोटों और नारों को अरजुन के आदमियों ने दीवारों से पोत डाला था, एक बार फिर से धन्ना उन्हें लिखवाना चाहता था···यह योजना भी थी कि कुछ लालटेनें खरीदकर हरिजन-बस्ती में बांटी जायें। यह एक तरह से रिश्वत भी हो जायेगी और मास्टर जादौराम कुछ कह भी नहीं सकेंगे।

पैसा बिल्कुल ही चुक गया हो—ऐसा नहीं था। कुछ खास खर्चा नहीं था धन्ना के अनुसार। कुल दो सौ रुपया चाहिए था। रोज रात को होनेवाली बैठक में प्रस्ताव हुआ। मास्टरजी ने धीरज से सुना, फिर पूछा, "एक बात बतलायेगा धन्ना ?"

"जी साब ?" धन्ना ने चेहरा उठाया। थकान से सभी के चेहरे धुंधले हो रहे थे···तिस पर आये दिन की कमजोर होती स्थिति भी उत्साह को मारने लगी थी।

"लालटेनें न बांटी जायें, तो ?" मास्टरजी ने पूछा।

"पर इसमें खास खरचा नहीं है मास्टरजी !" धन्ना ने कहा, "सौ दो सौ के भीतर-भीतर सब हो लेगा। हरिजन भाई खुश हो जायेंगे। अरजुन की दारु हवा में उड़ जायेगी !

"यानी अरजुन वोटर को दारु पिलायेगा और हम उसे लालटेन देंगे क्यों ?" कुछ परेशान स्वर में मास्टर जादौराम ने पूछा।

"हां !" विलायती ने उछलकर योजना का समर्थन किया, "जोरदार हो जायेगी। दारु तो पी-पाकर साले खत्म कर देते हैं, लालटेन घर में जलेगी। औरत खुश हो जायेंगी। वाह-वाह !"

हंस पड़े मास्टरजी, "नहीं, हम कुछ नहीं देंगे। उनका जी चाहे तो वोट दें, न चाहे तो न दें !"

"पर मास्टरजी, इसमें हरज क्या है? सौ-सवा सौ की बात है··· पूरा खेल न पलटा तो आधा तो पलट ही जायेगा !" धन्ना कह रहा था, "मजा तो तब रहेगा, जब वोटवाले दिन से एक दिन पहले लालटेनें बांटी जायें ?"

"मैं तो कहता हूं, जैसे सवा सौ वैसे पांच सौ।" विलायती ने योजना आगे बढ़ायी, "पूरे गांव को ही बांट दो। क्या याद करेंगे कि मास्टरजी लड़े हैं···हां !"

मास्टर जादौराम कुछ कहें, तभी मुन्ना बोला, "बेकार बात है। हम वोट मांग रहे हैं कि वोट का दाम दे रहे हैं, रिश्वत दे रहे हैं ?"

"इसमें रिश्वत कैसी ?"

"रिश्वत ही है।" मास्टरजी ने कहा, "ऐसा कुछ भी नहीं किया जायेगा।"

विलायतखान और धन्ना ने एक-दूसरे को देखा—बुझ गये।

सकुन को भी कुछ अच्छा नहीं लगा। ऐसा महसूस हुआ, जैसे मास्टरजी और मुन्ना चुनाव नहीं लड़ रहे हैं, धरमराज बनने का ढोंग कर रहे हैं। हद होती है किसी बात की !

मीटिंग बर्खास्त हो गयी थी। जब सब चले गये, तब मास्टरजी लेट

रहे थे। चेहरा सूखने लगा था उनका। अब न ठीक तरह जी सकेंगे, न मर सकेंगे। आगे सोचते, पर मोटनदास किरानी आ पहुंचा, "अरे मास्टर-जी !···ओ मास्टर ! ···"

"आओ आओ, भाई मोटन !" मास्टरजी उठ बैठे। आवाज़ पहचान ली थी। मोटन बड़बड़ाता अन्दर घुसा, "बड़ीं क्या कर रहे हो, सांई ?"

"कुछ नहीं, भाई।" मास्टरजी ने उत्तर दिया, "चार घड़ी सोने के लिए लेटा था···"

"राम्म राम्म···यह तो गलती हुआ हमसे। पर कोई बात नहीं।" मोटन सामने बैठ गया, "जरा काम-धन्धे की बात हो जाये तो फिर जावें। बड़ीं तुम्हारा अलिक्सन कैसा चल रहा है—जरा बताओनी ?"

"ठीक ही है। भगवान के भरोसे हूं। तुम सुनाओ, कैसे आना हुआ ?"

"भगवान के भरोसे तो सब्बी है, भाई।" मोटन ने 'ई' पर खास तरह दबाब दिया। कहा, "तुमने नौकरी छोड़के अच्छा नहीं किया मेड़ां। सबी फैमिली को डिस्टरब कर दिया। ये देस-वेस करने से क्या होता है सांई, देश तो चलता ही है। गांठ में चार पईसा हो तो इज्जित होता है नी ?···भगवान ने तुमको अक्किल भी दिया, चार शब्द भी सिखाया। पर इत्ती-सी बात तुम नहीं समझा···कि ये राजनीति काम धन्धेवाले आदमी का कारोबार नहीं है नी। ये फालतू लोगों का धन्धा है !"

"तुम तो अपनी बात कहो, मोटन सांई" मास्टर जादौराम बोले। वे सिन्धी किरानी को खूब जानते थे। ज्यादातर के सोचने का तरीका-ढर्रा एक ही होता है। आया होगा किसी स्वार्थ से—धर्म कर्म और भगवान पर उपदेश कर रहा है। सीधे-सीधे पूछ लिया।

मोटनदास समझ गया कि इधर-उधर की बातों का कोई अर्थ न होगा। जादौराम का स्वभाव जानता था। न बेतुकी बातें करते हैं, न पैसे को लेकर उस फलसफे के साथ जीते हैं, जो मोटनदास सिन्धी का है। बोला, "बड़ीं सांई, बात इत्ती सी है कि सुबेरे अरजुन ठाकुर ने तुम्हारा

देना-लेना साफ कर लिया है। रजिस्ट्री वह ले गया। अब ये घर का गिरवीवाला काम वही देखेगा।"

मास्टरजी को बुरा लगा। सुना बहुत था कि चुनाव में जितने नीच कर्म होते हैं, उतने किसी अपराध में नहीं होते, पर उनका स्तर इतना घिनौना होता होगा — कल्पना नहीं थी। जादौराम वेदही से बन्द फोड़े की टीस सहते ही रह गये थे। चाहें तो वे भी निम्न स्तर तक आ सकते हैं — धन्ना और विलायती अरजुन की तुलना में ज्यादा गलीज और गिरा हुआ सोच-कर सकते हैं, किन्तु जादौराम स्वयं ही सह नहीं पायेंगे।' '

मन पल-पल करवट बदलता हुआ सोचने लगा। एक ओर यदि आत्मा घिना उठती थी तो दूसरी ओर सहमा लावे का थपेड़ा खाये हुए तिल-मिला उठते। बोले "घर तो मैंने तुम्हारे यहां गिरवी रखा था मोटन··· ?"

"अब्बी तुम भी हद करते हो मास्टरजी। भेणा घर इदर रखो चाहे उदर—तुम्हारे को तो गिरवी करना था नी ?···अरजुन के पास रकम दे के उठा लेना—देखो साईं, अरजुन तुम्हारा अच्छा ही किया है। काल तुम्हारा ब्याज का महीना पूरा हो गया था। अरजुन हमारे को ब्याज भी दिया, पूरा मूल रकम भी दिया। अबी समजो नी—तुमको इस बखत बजन नईं पडा नी ?···"

मास्टरजी का चेहरा पिट गया!

"अबी हमारा-तुम्हारा लेन-देन सामान की उधारी का रह गया, साईं।" मोटनदास उठ पडा, "जब तुम बोलेगा हम तुम्हारे पास बिल भिजवा दूगा। राम्म्-राम्म्!" मोटनदास बाहर निकल गया।

मास्टरजी जड़ होकर रह गये। अपमान के थप्पड़ पड़ेंगे और हार से पहले ही पड़ेंगे—यह कब सोचा था? जी हुआ था कि उठें और इसी वक्त धन्ना और विलायती के घर जा पहुंचें। कहदें—'अब तुम लोगों को सब कुछ सौंपता हू, जैसे भी हो उखाड़ फेंको इस घटिया अरजुन ठाकुर को!···'

पर मन था कि तुरंत करवट बदलकर धिक्कारने लगा—कब्र के करीब आ खड़े हुए हैं। इतने सस्ते दामों में आत्मा, सिद्धांत और विश्वास बेच खायेंगे ? छिः छिः ! ऐसा सोचकर भी पाप कर बैठे।

गीता में कहा है—'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन…' मास्टरजी ने सोचा। निश्चिन्तता महसूस की। हल्के होकर लेट रहे। उन्हें लगा कि इसी में शान्ति है। बेचैन थे कि सो नहीं सकेंगे किन्तु बूढ़े, पराजित शरीर को किस क्षण नींद ने निगला, मालूम ही न हुआ ?

चार

धन्ना को सहसा विश्वास नहीं हुआ था—अरजुन ठाकुर, और धन्ना के यहां ?··· एक बार आंख मली, फिर देखा। अरजुन ही था। सौ फी सदी अरजुन। पीछे-पीछे हरिया। उससे भी पीछे-पीछे गदाधर पटवारी का बेटा रामसेवक।

अरजुन आगे बढ़ा, हाथ जोड़े, "राम-राम धन्ना ठाकुर !"

"पा-लागें महाराज !" धन्ना एकदम से उठ खड़ा हुआ। बोला, "बैठो बैठो ठाकुर साहब। कैसे तकलीफ की ?···क्या जूते मारने आये हैं जो पहले होकर राम-राम की, हाथ जोड़े ?"

अरजुन ठाकुर आगे होकर बैठ लिये। हंसते हुए। उसके बाद पटवारी का बेटा रामसेवक। एक रजिस्टर उसकी बगल में दबा हुआ था।

धन्ना चौंक जरूर गया था, किन्तु घर आये मेहमान वाला धर्म निबाहने की बात। पूछा, "क्या हुक्म है, कक्का ?"

"पहले तो अपनी बात का जवाब सुनलो।" अरजुन ने कहा, "जब बेटा बरोब्बर का हो जाये तो शास्तरों में लिक्खा है कि उसे मित्तर-सखा समझना चाहिए। क्यों भई रामसेवक ?"

"सही है ठाकुर साहब।" पटवारी का बेटा तत्काल बोला।

अरजुन ने कहा, "इसीलिए न तो मेरे हाथ जोड़ने से मैं छोटा हो

गया, न तुम बड़े हुए। फिर तुम हो, नयी उमर के आदमी। मुझसे ज्यादा समय को देख रहे हो। रामजी की मेहर से सरसुती भी बैठी है मस्तक में। तुम्हें हाथ जोड़ने से अधरम नहीं हुआ।"

धन्ना ने खिसियायी-सी हंसी हंसकर कहा, "ये तो आपका बड़प्पन है, अरजुन कक्का! हुक्म करो, कैसे आना हुआ?"

अरजुन ने हंसते हुए रामसेवक को देखा, फिर बोला, "कमाल है! अरे, भईया, यही तो मौसम है सब जगह हाजिरी देने का। वोट लेने हैं तो क्या प्रार्थना करने नहीं आना पड़ेगा? मान लिया कि तुम जादौराम जी के समर्थक हो, पर नागरिक तो हो ही। वोट जादौराम भी तुमसे मांगेंगे, मैं भी मांगने आया हूं।"

"उसके लिए तो छिमा करें कक्का। झूंठ नहीं बोलूंगा।" धन्ना ने कहा, "मास्टरजी को वचन दिया है। वोट उन्हीं को दूंगा। बुरा मत मानना।" धन्ना ने हाथ जोड़ दिये। अरजुन से भी ज्यादा विनम्र बना खड़ा रहा।

अरजुन पुनः हंसा, "वाह-वाह! इसमें बुरा मानने को क्या है? अरे, जनतंतर है। सबके पास वोट हैं, जो आये—वहाँ डालदें। किसी पर किसी का दबाव है क्या?···क्यों भाई रामसेवक?"

रामसेवक का चेहरा पिट गया था धन्ना के उत्तर से। जानता था कि वोट नहीं मिलेगा, पर इतनी अकड़ और अक्खड़पन से भरा उत्तर मिलेगा—कल्पना नहीं थी। धन्ना हरिजन के दुस्साहस पर मन ही मन सहमकर रह गया पटवारी पुत्र।

"खैर भईया, जैसी तुम्हारी मरजी। मैंने अपना धरम पूरा कर दिया। हर देहरी वोट की भीख मांगने जाना उम्मीदवार का धरम होता है। मेरा पूरा हुआ, तुम जानो, तुम्हारा काम जाने।" अरजुन उठ पड़ा, "चलो छोटे पटवारी!"

पटवारी भी रजिस्टर सम्हालकर उठ पड़ा।

धन्ना ने पूछा, "पानी-वानी···?"

"न-न, सब ठीक है।" अरजुन ठाकुर दरवाजे की ओर बढ़ गया, फिर सहसा मुड़ा, "अरे-रे, याद आया भईया। तुम्हें एक बात बतलानी थी।"

धन्ना चौंका, "क्या ?"

"अरे, कल ये पटवारीजी बोले थे कि तुम्हारी हरीकिसन वाले खेत की धरती की नाप-जोख होनी है। हरकिसन ने शिकायत की है कि तुमने मेंढ़ बनाते वखत जमीन दबा ली है उसकी ?"

धन्ना के माथे पर सलवटें पड़ गयी, "नहीं-नहीं, बिलकुल झूठ है! मैं क्यों दबाऊंगा उसकी जमीन।"

"मैंने भी समझाया था, पर हरकिसन नहीं माना। फट से रामसेवक को बुलवाया और नक्शे खुलवा दिये। कई साल का हिसाब-किताब भी···" *अरजुन ने पटवारी की ओर देखा,* "अच्छा-अच्छा, रजिस्टर भी तुम्हारे साथ ही है ? इसी वखत जो बता दो धन्नालालजी को। तसल्ली हो जायेगी। किसलिए कोर्ट-कचहरी की जायें आपसदारी में ? बतला दो ?···कानून हरकिसन के साथ जायेगा। नक्शे के हिसाब से जमीन तो दबी है।"

"बिलकुल झूठ है।" धन्ना का चेहरा एकदम पिट गया। सारी बुलन्दी हवा हो ली। समझ गया कि कोई बदमाशी हुई है, पर फिर भी कहा "देखूं तो ?"

पटवारी रामसेवक ने फौरन रजिस्टर बिछा दिया। नक्शा खोल दिया। धन्ना ने गौर किया—होश उड़ गये। सचमुच काफी धरती हरकिसन के नाम थी। धन्ना तो मारा जायेगा!···कागज-पत्र भी सरकारी तौर पर सामने पड़े थे। यही तो सुबूत हैं। गांव से धन्ना के लिए सुबूत जुटा पाना कठिन होगा—यह भी वह खूब जानता था। घिग्घी बंध गयी। यहां तो धन्ना का सारा संसार ही चौपट हो रहा है! मासूमियत से बोला, "धरम की बात तो आप भी जानते हो अरजुन कक्का!···ये कागज सही नहीं हैं।"

"पर भाई कागज तो कागज़ ही होते हैं। कागजों से तो पूरी सरकार चलती है। सब कुछ कागज का खेल है। मैं तो तुम्हारे साथ हूं, इसीलिए ये खबर देने चला आया था। सोचा, कल तुम परेशानी में पड़ो तो अकारथ ही···आपसदारी में···"

"अब तुम्हीं बतलाओ, कक्का। क्या करूं?" धन्ना रूआंसा हो गया। हाथ-पैरों में बैठा इन्कलाब—सब झूठा पड़ गया।

"तुम कहते हो तो रस्ता सोचते हैं।" अरजुन ठाकुर ने गंभीरता के साथ कहा था, "ऐसा करो—कल हवेली पर आ जाना। बिलकुल सुबेरे। हरकिसन को भी बुलवा रखूंगा। मामला घर का ही है···चिन्ता मत करो, पर कुछ तो तुम्हें भी करना ही पड़ेगा, भईया?"

और धन्ना समझ चुका था कि क्या करना है। हाथ जोड़कर बोला था, "मैं आप ही के साथ हूं कक्का !···आपका तो छोटा ही हूं। रामायनजी में लिखा है—"छिमा बड़न को चाहिए, छोटिन को उत्पात···"

"कोई बात नहीं। सब ठीक हो जायेगा।" अरजुन और छोटा पटवारी बाहर चले गये। धन्ना उस समय तक खड़ा देखता रहा, जब तक कि वह कच्चे रास्ते में अन्धेरे में लोप नहीं हो गये। इसके बाद धन्ना ने दरवाजा बन्द किया। चुपचाप चारपाई में जा लेटा।

और कोई राह नहीं थी···आदमी कभी-कभी कितना मजबूर होता है? धन्ना ने सोचा था। थूक निगल लिया। किन्तु यह सब सोचकर धन्ना को चैन मिल जायेगा—सम्भव नहीं था। धन्ना खूब जान रहा था। बार-बार आंखों के सामने मास्टरजी का उदास, पिटा हुआ चेहरा जवाबतलबी करता आ खड़ा होता। महसूस होता, जैसे चुप निगाहों से सवाल कर रहे हैं—"धन्ना, क्या मैंने सब सुना है—तूने समझौता कर लिया? उस स्तर पर?···"

धन्ना की गरदन झुकी हुई है। फिर यह गरदन सिर्फ मास्टरजी के सामने ही तो नहीं झुकी रहेगी? विलायतखान, मुन्ना, सकुन और

शायद उन सबके सामने, जिनसे कभी घन्ना ही बड़ी-बड़ी डींगें हांकता हुआ 'सचाई के लिए—मास्टरजी के साथ' की दुन्दुभी फूंकता रहा था···?

घन्ना अपने ही भीतर कुछ खोजने लगा। शायद अपने आपको··· अपने उस विश्वास को, जिसे लेकर उसी ने लड़ाई में मास्टरजी को झोंका था। विश्वास दिलाया था। पर लगा था कि घन्ना ने ही अपने विश्वासघात से उसे गुमा दिया है। बदले में धरती का एक टुकड़ा पा लिया है। क्या बहुत सस्ता नहीं बिक गया घन्ना ?···

□ □

सायकिल के कैरियर पर सकुन बैठी थी। कच्चे-रास्ते पर सायकिल, जिस पर डबल सवारी चलना आदत में न हो तो कठिनाई होती ही है। यही कठिनाई महसूस कर रहा था मुन्ना। फिर सकुन, औरत जात। उसकी नजाकत का भी ध्यान रखना था।

रास्ते में विलायती खान मिला था। और विलायती खान की सायकिल हवा से बातें करती जा रही थी। चकित होकर सकुन बोली थी, "यह कहां जा रहा है ? बहुत जल्दी में है।"

और रोक लिया था मुन्ना ने, "विलायती !···ओ···, जरा थम के।"

विलायती पैर टेककर ही थम गया। पूछा, "क्या है ?"

"कहां जा रहे हो ?" मुन्ना ने पूछा।

"सहर।" विलायती ने जवाब दिया, "एक जरूरी काम है !" वह बोला। जो हुआ था कि बतला दे। रात को मास्टरजी के घर से लौटते समय घन्ना और उसने तय किया था कि मास्टरजी से छिपाकर ही सही, वह लालटेनें खरीद लायेंगे और बांट देंगे। बाद में मास्टरजी को हुआ तो खीजेंगे, गुस्सा होंगे, पर बात तो बन जायेगी। इसलिए ज्यादा

मास्टर जादौराम कर भी क्या सकते थे। धन्ना और विलायती निर्णय लेकर अपने-अपने घर चले गये थे। उसी योजना के अनुसार इस समय विलायती शहर जा रहा था। ऑर्डर देकर लौटना था, ताकि शाम तक लालटेनें आ जायें। बोला, "चलता हूं। देर हो रही है···"

"मगर काम तो वतलाते जाओ?" मुन्ना ने कहा था।

विलायती सायकिल भगाते-भगाते कह गया था, लौटकर बताऊंगा। सकुन और मुन्ना देखते ही रह गये थे। फिर सकुन कैरियर पर सवार हुई, मुन्ना ने सायकिल सम्हाली।

सकुन को वहुत सम्हलना पड़ता था पीछे। हाथ में ब्रुश थे। जिन दीवारों को अरजुन ठाकुर ने पुतवा दिया था, उन्हीं पर नाम लिखने जा रहे थे वह। वोटिंग में चार दिन वचे थे। गेरू और खड़िया के डिव्वे हैन्डिल पर लटका रखे थे।

अरजुन ने सारी पुलियां और मन्दिर का खंडहर सफेदी से पुतवा डाले थे। मास्टरजी की लालटेन और नामोनिशान गायव हो गये। उन्हीं को पुनर्जीवित करना था। इसी अभियान पर निकले थे।

दोपहर तक पुताई करनी थी। वड़े-वड़े शव्द तरतीव से लिखने में भी कम समय नहीं लगता।

मन्दिर तक पहुंचते-पहुंचते रास्ते की तीन पुलियों पर लालटेन वनायी और 'जादौराम को वोट दो' 'जादौराम जनता के सच्चे साथी' 'जादौराम को पंच वनाओ, आदि वेनर लिखे। दोपहर सिर पर उतर आयी।

सकुन ने कहा, "मन्दिर में पहुँचकर थोड़ी देर सुस्ता लेंगे, फिर ठीक तरह लिखना हो पायेगा।"

मुन्ना ने कैरियर पर डिव्वा लटकाते हुए उत्तर दिया, "अव क्या है, यह सप्ताह और। इस पार या उस पार। पर इस सप्ताह पलक से पलक नहीं मिलेगी।" सकुन जव कैरियर पर वैठ गयी तो मुन्ना ने सायकिल चलानी शुरू कर दी। मन्दिर कुछ ही आगे था।

पक्के रास्ते से कम से कम सौ कदम कच्चे में उतरकर मन्दिर के खंड-हर फैले हुए थे। ग्रामीण कभी-कभार सुधि लिया करते। सुधरवाने लायक पैसा कभी किसी ने खर्च नहीं किया था, पर मन्नतें सब मान जाते थे। सिर्फ गौसपुरा ही नहीं, इर्द-गिर्द के और गांवों में भी मन्दिर की साख थी। एक बार मन्नत मांगो तो पूरी जरूर होती है।

पक्के रास्ते पर ही सायकिल से उतर पड़े थे दोनों। मुन्ना ने सायकिल संभालकर कच्चे रास्ते में उतारी और ऊबड़-खाबड़ रास्ते से सायकिल को ढोता हुआ आगे बढ़ गया। पीछे-पीछे सकुन।

मन्दिर के पास चबूतरे से सायकिल टिकाकर मुन्ना ने क्रमशः गेहूँ और खड़िया के डिब्बे निकाले। ब्रुश सकुन ने एक ओर रख दिये। बैठ रही।

मुन्ना ने एक ब्रुश उठा लिया और उस ओर बढ़ा जिधर जादौराम का नाम पोता गया था।

सकुन ने कहा, "एक मिनट रुक तो जाओ। थोड़ा सांस ले लो।"

मुन्ना ने सकुन की ओर देखा, मुसकरा दिया। औरत जात है। चेहरा कुम्हला गया। उसकी बात भी रखनी पड़ेगी। चबूतरे पर डिब्बा रखकर छांह में बैठ रहा। ऊपर एक बरगद का पुराना पेड़ छांह किए हुए था। गहरी छांह। हवा में ठंडक थी। वे करीब बैठे हुए थे। सहसा मुन्ना बोला, "तुमने इस बार बड़ी मेहनत की।"

"मेहनत-वेहनत की तो कोई चिन्ता नहीं, पर मास्टरजी जीतने चाहिए। सब मेहनत वसूल हो जायेगी।" सकुन ने उत्तर दिया।

"हां, सो तो है ही।" मुन्ना ने कहा। थोड़ी देर के लिए दोनों ही चुप भी होगये, उदास भी।

सकुन को ये एकांत और मुन्ना का करीब बैठे होना अच्छा लगा। एक बार शहर में फिल्म देखी थी। बिलकुल ऐसे ही एक लड़का-लड़की गांव से दूर एकान्त पुराने मन्दिर में मिलते हैं। वहीं शादी कर लेते हैं। एक क्षण को सकुन ने मुन्ना का चेहरा देखा तो कुछ-कुछ वैसा

ही नजर आया, जैसा फिल्म वाले लड़के का था'''यों ही पूछ बैठी, "कभी सनीमा देखा है तुमने ?"

मुन्ना ने चौंककर उसे देखा, फिर जैसे उसे बुरा लगा कि सकुन अपमान कर रही है। मुन्ना दिल्ली तक हो आया है, सिनेमा नहीं देखा होगा क्या ? बोला, "बहुत देखे हैं'''और तो और जो लोग सिनेमा करते हैं, उनमें से भी दो-चार देख लिये हैं। तुम अपनी कहो।"

"मैंने तो एक देखा है।" सकुन ने लजाकर कहा।

"पर यहां सिनेमा कैसे याद आया तुम्हें ?" "मुन्ना ने पूछा।

"इसीलिए कि बिलकुल ऐसे ही एक लड़का-लड़की मन्दिर में दिखाए गए थे। सकुन ने कह दिया। नीचे की ओर देखने लगी। चेहरे पर लज्जा की चमचमाहट थी। मुन्ना कुछ पल उसे देखता रहा। अच्छी लगी। फिर जैसे कुछ याद हो आया था उसे। सिनेमा में कुछ भी हुआ हो, पर मुन्ना नहीं भूल सकता कि वह है जात से छोटा, सकुन ठाकुर की बेटी। दिमाग में उग आयी कोंपल सहसा ही मुरझा गयी। बोला, "तुम एक बात भूल गयी सकुन, सिनेमा और गांव में बड़ा फरक है। मैं छोटी जात का आदमी हूं।"

"मैं भी जानती हूं।" उसने बड़ी बुलन्दी से कह डाला। इस तरह जैसे वह यह सब कहने के लिए शब्द खोजे बैठी थी। बोली, "पर जात पांत के जमाने अब रह ही कहां गये हैं ? मुझे तो ठाकुर समाजवाले यह कहकर ही क्या कम कोसते हैं कि मैं उन जच्चाओं को भी देखती हूं, जो गैरजात हैं। पर मैंने तो कभी किसी का कहा नहीं माना। कह दिया कि दुख-दर्द सब के एक-जैसे होते हैं, जात के हिसाब से तो होते नहीं, तब फरक कैसे करूं ?"

मुन्ना के भीतर जनमी कोंपल में फिर प्राण-संचार होने लगा। एक तरह से सकुन ने साफ-साफ कह दिया था कि वह विवाह करने को तैयार है। जात-समाज सबसे जूझ लेगी। यह सोच समझ लेने के बावजूद मुन्ना कुछ बोल नहीं सका। बस उसे सकुन ज्यादा और ज्यादा अच्छी

लगने लगी। देखने का भाव बदल गया। सोचने का तरीका भी।

"मैं तो ये सब नहीं मानती। किसी से डरती भी नहीं हूं।" सकुन ज्यादा इकलाबी ढंग से कहती जा रही थी। विस्मय से मुन्ना देख रहा था। जो शब्द मुन्ना के मुंह से आने थे, वे सकुन बोल रही है—वाह-वाह!···ऐसी औरत कोई निश्चय कर लेगी तो मुन्ना भले ही ढीला पड़ जाये, वह जरूर बात निबाह जायेगी। सकुन ने कहा था, "मुझे लगता है, तुम डरते हो!"

"हूं?" वह आहत हो गया था। अचानक कठोर भी हुआ, "नहीं-नहीं, बिल्कुल नहीं। अगर तुम ही कह रही हो तो फिर···" अनायास विषय बदल दिया था, "चलो, फिलहाल यह सब बाद में देखा जायेगा। इस वक्त तो काम पूरा कर लो।" उसने गेरू से भरा डिब्बा उठाया और ब्रुश लेकर आगे बढ़ गया। सकुन पीछे-पीछे।



मुन्ना लौटा तो दो बुरी खबरों ने धक्का पहुंचाया। सकुन अपने घर चली गयी थी। वह सायकिल लिये हुए मास्टरजी की तरफ जा रहा था कि राह में विलायतखान मिल गया। चेहरा तनाव और गुस्से से भरा हुआ था उसका। मुन्ना के सामने आते ही उसने घृणा के साथ एक गाली उछालकर कहा था, "कुत्ता है स्साला! आखिर-आखीर में अपनी जात बतला दी हरामी ने।"

"क्या हुआ?" परेशान होकर मुन्ना सायकिल से उतर गया था। पूछा, "किस पर भनक रहे हो?"

"धन्ना चमार पर!···" विलायती ने शब्द चबाते हुए उत्तर दिया था। कुछ गालियां फिर उगलीं, "वह ठाकुर से मिल गया। ईमान धरम सब बेच खाया। बड़ी-बड़ी बातें करता था। सवेरे से ठाकुर की हवेली पर ही बैठा है।" विलायतखान भड़कता ही जा रहा था।

"तुम्हें किसने बतलाया?" मुन्ना सहसा विश्वास न कर सका था।

ग्न्ना इस तरह बदलेगा ? नहीं-नहीं, लगता नहीं है ।

पर विलायती ने सुबूत दे दिया। बोला, "विश्वास न हो तो ये देख लो।" जेब से चिट्ठी निकालकर मुन्ना की ओर बढ़ा दी, "उसकी लिखी है ना ! ठाकुर का समर्थन करते हुए कॉपी मास्टर जी को भेजी है हरामी ने !"

मुन्ना ने स्टैण्ड पर सायकिल खड़ी की। चिट्ठी खोल ली। धन्ना की ही हैंडराईटिंग थी। लिखा था कि बहुत सोचने-समझने के बाद अन्त में वह समझ चुका है कि मास्टर जादौरामजी जैसे आदमी के द्वारा गाँव का भला नहीं हो सकेगा। कारण है उनका अनुभवी न होना। मास्टरजी के पास गांव-समाज सेवा का कोई अनुभव नहीं है। इसलिए तय किया है कि धन्नालाल अरजुन ठाकुर के पक्ष में रहे। पंच रहने का अरजुनसिंह को अनुभव भी है और गांव की सेवा में उन्होंने अपनी जिन्दगी के कई बरस खर्च किए हैं। पत्र में वे काम भी गिनाये गये थे, जो अरजुन के कार्यकाल में गांव में हुए थे। उनका श्रेय अरजुन को देते हुए धन्ना ने स्पष्टत: लिख दिया था कि आज के बाद से वह ठाकुर के साथ है। प्रतिलिपि मास्टर जादौराम को भेज दी थी।

मुन्ना का चेहरा पिट गया। क्रोध भी आया, मन में धन्ना के लिए गालियां भी उगीं, किन्तु पचा गया। विलायती की ओर चिट्ठी बढ़ाता हुआ बोला, "यह तो उसके मन की बात विलायती, हम लोग जोर-जबरदस्ती थोड़े ही कर सकते हैं कि मास्टरजी के साथ रहो ?"

"अरे उस कमीने को मास्टरजी का साथ नहीं देना था तो 'तटस्थ' हो जाता।" विलायती बोला, "पर यह तो गद्दारी हुई। धोखेबाजी भी है, नमकहरामी भी। बात करता हूं उससे। अगर ठाकुर के सामने ही हवेली से खींचकर जूते न दिये तो अल्ला कसम रहीमखान का बेटा नहीं, गधे का बच्चा कह देना !" विलायती आगे बढ़ने लगा।

मुन्ना ने लपककर बांह थाम लीं, "यह सब मत करो, विलायती। इस वखत अपनी खातिर नहीं तो मास्टरजी की खातिर हीं ये जहर पी जाओ।

मारपीट से अलीक्सन में साफ-साफ अपने उम्मीदवार के खिलाफ बात जायेगी। चुप हो जाना ही ठीक है।"

विलायती रुकता तो नहीं, किन्तु मुन्नालाल ने इतना बड़ा सच उजागर किया था कि विलायती को भी अपना आपा कुचल लेना पड़ा। दांत भींचता हुआ रह गया। मुन्ना समझा-बुझाकर उसे वापस ले चला था।

वे चुपचाप चले आए थे सारे रास्ते। मुन्ना सोच रहा था, जादौ-रामजी पर क्या गुजरी होगी? जिन्होंने साथ देने को कहा था, वही दगा कर गए···इलेक्शन जीतें न जीतें, कहीं बात दिल में न बैठ जाए। बुरा हुआ। धन्ना के प्रति घृणा और दुख से वह भी बोझिल हो उठा था। समझ चुका था कि चुनाव लड़ना भले आदमी का काम नहीं रहा। पहले यह सब सुना भर था, पर अब जाहिर हो रहा था···जाहिर ही नहीं, जखम की तरह मुन्ना के दिल में कसक रहा था।

दोपहर सन्नाटे में ही गुजर गयी। जादौराम भी कुल जमा चार बार बोले, विलायती भी। मुन्ना को खुद काफी चोट लगी थी। ज्यादातर चुप ही रहा। चुनाव अभियान एकदम ठंडा पड़ गया।

श्यामा भीतर से चाय बना-बनाकर हर आधा पौना घन्टे में भेजती रही और वे चुपचाप बैठे-बैठे पीते रहे।

शाम की शुरुआत के साथ एक और रंग बदला। एक ग्रामीण बच्चे के साथ घोड़ेवाला रेड़ा दरवाजे पर आ रुका। मुन्ना हैरान होकर बाहर निकल आया। बच्चे ने खबर दी, "विलायती भईया को ये आदमी ढूंढ रहा था। घर मिले नहीं, सो यहां ले आया हूं।"

जादौराम मास्टर मसनद से टिके अधलेटे पड़े थे। बैठे रहे। विलायती को झपक आ गयी थी। मुन्ना ने रेड़ेवाले से पूछा, "क्या बात है भाई?"

रेड़ेवाला कह रहा था, "वैंड मास्टरजी रुपए जमा कर आए थे दुकान पर। माल लाया हूं।" कहते हुए उसने पूछा, "वह कहां हैं?"

"सो रहे हैं। पर माल क्या है?" मुन्ना के माथे पर सलवटें पड़ीं।

"लालटेनें।" रेड़ेवाले ने वतलाया, "साठ हैं। आप कहो वहाँ उतार दूं। रसीद पर दस्तखत कर दो कि पा लीं।"

मुन्ना का चेहरा पिट गया। कुछ भयभीत होकर मास्टर जादौराम की ओर देखा, जिनके चेहरे पर एक लपट दीखने लगी थी। लगा कि वुरी तरह सुलगने लगे हैं। एकदम कुछ वोलते नहीं वना।

रेड़ेवाले ने रसीद निकाल ली थी। और उनकी ओर देख रहा था···

मास्टर जादौराम आगे वढ़ आये। कहा, "ठीक है। भीतर वहाँ रख दो।" उनके स्वर में भारीपन भी था, खरखराहट भी। मुन्ना सहमा हुआ देखता रहा। यह तो गज़व कर दिया विलायती ने। मास्टर इस चोट को नहीं सह पायेंगे।···पर ज्यादा हैरानी इस वात की थी कि मास्टर जादौराम वहुत संयत दीख रहे थे। ऐसे जैसे हलाहल पचा रहे हों।

यह हालात से समझौता करना है? या मरते-मरते विद्रोह की वुलन्दी? मुन्नालाल सोच में पड़ गया था।

लालटेनें कोने में उतारकर रेड़ेवाले ने परची ली। मास्टरजी ने स्वयं प्राप्ति की रसीद लिख दी थी। वह चला गया।

मास्टरजी थोड़ी देर चुपचाप वैठे कभी लालटेनों और कभी विलायत खान को देखते रहे, जिसके नथुने नींद में फूले हुए थे। सहसा उन्होंने मुन्ना को हुक्म दिया था, "इसे जगा तो सही जरा।"

मुन्ना ने विलायती को जगाया, "उठ्।···ऐ विलायती!"

वह कुनमुनाता हुआ उठा।

मास्टरजी की ओर अलसायी निगाहों से देखा। कोने में रखी लालटेनों पर नज़र नहीं गयी। मास्टरजी कठोर आवाज़ में वोले, "विलायती! तू जा···मुझे तेरे साथ की ज़रूरत नहीं है। किसी के साथ की ज़रूरत नहीं है!" उनकी आवाज कटु थी। इतनी कटु कि उन्हें स्वयं ही गड़ती महसूस हुई।

मुन्ना सकपकाया हुआ था—चुप। विलायती हक्का-वक्का होकर

मास्टरजी का चेहरा देखता रह गया। तुरंत कुछ समझ नहीं सका कि वह ऐसा क्यों कह रहे हैं ? क्या घन्ना के दर्द ने बिल्कुल ही निराश कर दिया है ?

मास्टरजी ने दोबारा कहा, "जा यहां से !"

"पर··· पर बात क्या है मास्टरजी ?" वह परेशान स्वर में बोला था। एक नज़र मुन्ना की ओर देखा—आंखों में नासमझी का भाव था।

"इसलिए कि तूने मुझे नीचे गिरा दिया।··· ऐसे जैसे मरते आदमी के मुंह में गंगाजल की बजाय थूक दिया जाये। ···" मास्टरजी का स्वर अनायास ही क्रोध की कौंधने वाली तेज़ी से बदलकर बरसाती हवा जैसा नम हो आया, "अब बस यही कह सकता हूं कि तू जा !··· जितना हुआ, काफी है।" मास्टरजी ने हाथ जोड़ दिये।

मुन्ना ने देखा कि मास्टरजी की आंखों में पनीलापन है।

विलायती अब भी परेशान था। मास्टरजी का करवट-दर-करवट बदलता स्वर और रंग ज़ाहिर कर रहा था कि कोई बड़ी बात हुई, पर क्या ?"

मुन्ना बोला, "ये लालटेनें तूने मंगवायी थी ना ?"

तमाचा-सा पड़ा था विलायती के चेहरे पर। एकदम निराश भाव से मास्टरजी को देखने लगा, फिर गरदन झुक गयी। हकलाकर कहा, "असल में·· असल में मैंने सोचा था कि यही ठीक रहेगा·· इसीलिए···"

"मुझे सफाई नहीं सुननी।" मास्टरजी की आवाज़ पुनः कठोर हो गयी थी, "बस, आखिरी बार कह रहा हूं कि तू जा सकता है !··· आगे से कभी मेरी देहरी पर पैर मत रखना !"

"मास्टरजी···" विलायती रुआंसा हो गया।

"जा !···" एकदम चीख पड़े थे मास्टर जादौराम।

विलायती चुपचाप उठा था—बाहर निकल गया।

मुन्ना और मास्टरजी आमने-सामने थे—इसके बावजूद बैठक में सन्नाटा था। ऐसे, जैसे पल भर पहले ही कोई लाश रखी थी यहां !

पांच

न जच्चा, न बच्चा। सकुन आ ठहरी थी आठ मील दूर छोटे-से गांव में। दूर के एक रिश्तेदार हैं। देखकर हैरान हो गये थे। पूछा था, "कैसे भूल पड़ी सकुन?" और सकुन ने मुस्कराकर उत्तर दे दिया था, "ऐसे ही। मन हुआ कि दो-चार दिन फूफाजी के यहां हो आऊं। बरसों से नहीं देखा है।" फिर बात को वजन देने के लिए कहा था, "सच्ची बात तो ये है फूफा कि मुआ मन बड़ी बुरी चीज है। किसी को भूला रहे, तो भूला रहे…फिर जो उबलकर याद करने लगे तो बस। न दिन में चैन लेने देता है, न रात आराम।"

वह भी बोले थे, "सही कहती है तू।" फिर सब घर ने घेर लिया था उसे। सबका कहना एक ही था, "अब सकुन को इस अकेली ज़िन्दगी से छुटकारा पाना चाहिए। आखिर आदमी अकेला कब तक रह सकता है?"

सकुन सुनती रही थी। सुनती रही थी और सोचती रही थी। दोपहर यहां पहुंची थी, शाम ढल गयी। छोटे से बड़े तक एक ही बात थी कि सकुन को अकेलापन खाने लगा है। घर बसा लेना ठीक रहेगा।

और जैसे-जैसे ये बातें उठी थीं, वैसे-वैसे सकुन को मुन्ना याद आया था। वह भी तो अकेला ही है, पर ईमान से नहीं डिगा। सकुन भी अकेली

थी। आगे नाथ न पीछे पगहा। पर सकुन हार गयी। इनमें से कोई नहीं जानता कि अकेले रहने का जो सुख है, वह भीड़ का नहीं। सकुन सच में अकेलेपन से डरकर नहीं, भीड़ न होने की भूख से भागकर आयी। वरना यह कोई समय था, जब उसे गोसपुरा छोडकर इधर-उधर जाना चाहिए ?

चुनाव अगले दिन शुरु होगा। दिन भर पुरानी गढ़ी में वोट डाले जायेंगे। यही दिन था, जिसके लिए जादौराम को औरों के साथ-साथ सकुन भी घेरने गयी थी। उस बेचारे को क्या लेना-देना था इस प्रपञ्च से ? पर ईमान के नाम पर उन्हे खड़ा कर दिया। विश्वास का सहारा देकर ऐसी लड़ाई में झोंक दिया, जिसने जादौराम का भूत, भविष्य, वर्तमान सब बिगाड डाला। ठीक समय पर मुन्ना भी किनारा कर गया और सकुन भी।

सकुन को उसका अपना आप ही काटने लगा था—विश्वासघात किया उसने ! लगता है कि जादौराम से नहीं, मुन्ना से किया।...और यह भी नहीं—सच में सकुन ने अपने आप से किया !... उसने भीड़ के लिए जादौराम जैसे मन्दिर के बजाय, अरजुन का नरक चुना। भीड़ के लिए उसने मुन्ना के प्यार के बजाय, वह सम्मान चुना—जिसकी गलतफहमी में आदमी इंसान को—इंसान नहीं समझता !

क्या जादौराम या मुन्ना समझ नहीं सके होंगे कि सकुन ने इस वेला पर क्यों अनकहे ही चेहरा चुराया होगा ?...आदमी सादगी में जीकर भले ही शैतानी न समझता हो, शैतानी में आकर सादगी को पहचानने लगता है। और जब सादगी को पहचानने लगा हो—तो शैतानी समझना आगे के लिए कठिन काम नहीं है। जादौराम और मुन्ना ने जरूर सब कुछ समझ लिया होगा। समझ लिया होगा कि सकुन कन्नी काट गयी !

सकुन की शाम इसी तरह बीती। जितनी बात आती, उतना जब दे देती, फिर चुप। यह आवाज का चुप धीमे-धीमे समूचे शरीर : आत्मा में समाने लगा था। लगा था कि सच्चा अकेलापन तो यही

आदमी के मन में उसका सच हो, उसका व्रत-निश्चय हो तो वह अकेला होकर भी अकेला नहीं होता—पर सकुन एक ही झटके में अकेली हो गयी। पहली बार उसे अकेलेपन का अहसास हुआ। ऐसा पहले कभी नहीं लगा। कई बार बुखार में तपती अकेली ही पाटोर में पड़ी रही थी। यहां तक कि एक गिलास पानी पीने के लिए लाचार हालत। किन्तु सकुन ने उस समय भी महसूस किया था कि अकेली नहीं है। बस, इतना ही लगता था कि कहीं कुछ है। ऐसा जो सकुन को दीखता भले ही न हो, पर है। यह था उसका मन। मन, जिसमें विश्वास था। मन, जिसमें मुन्ना के प्रति ईमानदार प्यार था। मन, जिसमें सिद्धांत पर लड़-मर जाने की साध थी···

किन्तु यह सब अचानक ही सकुन से बिछुड़ गये !

सकुन से बिछुड़े या सकुन ही उनसे बिछुड़ गयी ? उसने सोचा था।

रात गहरा गयी थी। लालटेन की धीमी रोशनी पाटोर में बिछी हुई थी। इतनी धुंधलायी हुई कि सकुन को अपने भीतर-बाहर अन्धेरा महसूस हो रहा था। जब मन में कालिख पुत जाये तो हज़ार सूरज रोशनी बिखेरे रहें, लाख अशर्फियां सामने पड़ी दमदमाती रहें—आदमी किसी भी क्षण उजाला महसूस नहीं कर पाता। यही कुछ सकुन के साथ हो गया था।

इर्द-गिर्द घर की औरतें-बच्चे सोये हुए थे। देर तक बतियाते रहे थे। सकुन के बारे में ही बतियाते रहे थे। उसके भूत, भविष्य और वर्तमान को लेकर टीका-टिप्पणियां करते रहे थे। किन्तु सकुन 'हां-हूं' करके इन सारी बातों से उनींदी सी बैठी रही थी। वाचाल हुई थी इस सन्नाटे में। लग रहा था कि वही बोल रही है। तर्क-वितर्क, बहसें कर रही है।

···तो सकुन अपने आप से बिछुड़ गयी ! वह सोचती जा रही थी। इसके साथ ही उसे लगने लगा था जैसे उसकी आत्मा से कुछ रिसने लगा है···कोई घाव। घाव की पीव। और जब कोई घाव हो तो पीव काटती है···

सकुन के लिए घाव की तरह है ये दिन ! एक जख्म । ठीक है कि पानी की तरह बहता समय ऐसे घावों को भुला देता है, पर घाव के निशान तो शरीर से जाते नहीं ? वे याद दिलाते हैं कि यह शरीर दागीला है !

सकुन दागी हो गयी ! अभी घाव रिस रहा है, फिर दाग रह जायेगा हमेशा के लिए···

धन्ना ने किस तरह किनारा किया—सकुन का उसी दिन पता लग गया था। फिर पता लगी थी विलायती वाली घटना ! उसे याद आया था कि वह दोपहर लालटेनें लेने ही शहर गया था। कुछ तय नहीं कर सकी थी उस समय कि ठीक हुआ या गलत। जिस पल लालटेनें मास्टरजी के घर पहुची, उस पल गाव का कोई बच्चा खड़ा था वहां। मास्टरजी ने जो कुछ लालटेनवाले से कहा और बाद में विलायती को सुनाया—वह सब उसी बच्चे ने पहुचाया था सकुन तक। सुनकर सकुन सन्नाटे में आ गयी थी। गलती विलायती की ही रही। जो चीज मास्टरजी चाहते नहीं, वह किया क्यों जाना चाहिए ?···कह चुके थे कि इसी तरह अगर जीतना है तो फिर नहीं जीतना !···जो आदमी मौत भी बिना शर्त मागने तैयार न हो—उस आदमी को भला उस तरह समझा जाना चाहिए, जिस तरह विलायती ने समझा ?···सकुन को लगा था कि ठीक ही हुआ है। यही होना चाहिए था ! ··

खुशी ही हुई थी। सोचा था कि विलायती के भीतर बैठी बेईमानी इस घटना के कारण चरमरा गयी होगी। जहां तक मास्टर जादोराम के गुस्से का सवाल था, यह गुस्सा बाद में नहीं रहेगा। जिसका मन साफ हो, उसमें कलुष नहीं पलता। न ही बहुत दिनों तक किसी का विरोध या शिकायत रह पाती है। जो आदमी स्वय के प्रति किसी के मन में शिकायत न ला सके, उस आदमी के मन में किसी के प्रति शिकायत कैसे सकती है ? मास्टरजी ऐसे ही आदमी हैं।

वह रात चैन से कटी थी। सुबह जल्दी-जल्दी चाय पीकर

चाहती थी मास्टरजी के यहां, पर तैयार होकर निकलने को ही थी—कि नत्थी और अरजुन आ पहुंचे थे। एक क्षण में समझ लिया था सकुन ने—उसे वहलाने-फुसलाने आये होंगे। आज का दिन चुनाव-प्रचार का आखिरी दिन है। जी तो नहीं था कि उनसे वात की जाये, किन्तु संस्कारों ने वाध्य किया था। वे करीव आये तो सकुन ने शिष्टाचार से अभिवादन किया, दोनों चारपाई पर वैठ रहे।

सकुन उनकी ओर इस तरह देखने लगी कि उन्हें जो कहना हो, कहें और सकुन उत्तर देकर रवाना करे। आज सवसे ज्यादा काम का दिन था। रात को मुन्ना ने सलाह दी थी कि जिन-जिन घरों में सकुन जापा करवाने गयी है, उन-उन घरों में पहुंचकर औरतों से मिले और धरम-सरत की वात करे। सकुन की जो सेवा है, उसे देखते हुए महिलाएं विशेष निर्णय लेंगी।

और अरजुन भी कुछ यही सोचकर आया था। सकुन से इसी तरह खतरा है—यह खतरा उसे धन्ना ने वतलाया था। वोला था, "ठाकुर साहव! सकुन उन घरों पर असर डाल सकती है, जिन घरों में उसने जापे करवाये हैं। सकुन की वात का वे औरतें वहुत आदर करेंगी।"

सुनने वालों ने भी समर्थन किया था और अरजुन के दिमाग़ में घन्टियां वजने लगी थीं। खतरा-ही-खतरा। विल्कुल ठीक ही कहा था धन्ना ने। सकुन महिला वोटरों को 'वरगला' सकती है और जव महिलायें किसी को जिताने पर आमादा हो जायें तो वस···दूसरी पार्टी का खेल खत्म!

अरजुन ने तुरंत सोचविचार कर सकुन से वात करना तय किया था। उसी गर्ज से चला आया। धन्ना ने यों भी समझा दिया था, "सकुन ज़रा टेढ़ी खीर है ठाकुर! तुम तो जानते ही हो, औरत यों ही टेढ़ी खीर होती हैं। अगर जिद पकड़ वैठी तो फिर चाहे जो हो जाये···वात से फिरेगी नहीं। ज़रा सोच-समझ कर वात करना। हो सके तो जात-विरादरी की वात उठाना।"

धन्ना की हर सलाह सही थी। अरजुन ने कहा था कि साथ धन्ना

ही चले, पर घन्ना कतराने लगा था। किन्तु अरजुन मानने को तैयार नहीं हुआ था—घन्ना को बात करना आता है। उससे बढ़िया 'कारकरता' मिलना कठिन। फिर जिद की, तब घन्ना बोला था, "अच्छा, तुम पहुच लोगे मैं उसके बाद आऊंगा—दस पांच मिनट का फरक देकर।"

अरजुन और नत्थी बार-बार बाहर की तरफ नजरें दौड़ा रहे थे। घन्ना नहीं आया तब तक। नत्थी मन-ही-मन भुनभुना रहा था। एक पढ़ी-लिखी लड़की के सामने फंसाकर खुद किनारा कर गया। बदमाश कहीं का!···आदमी थोड़ा पढ़-लिख जाये तो धोखेबाजी के खतरे ज्यादा ही बढ़ जाते हैं। उसने सोचा था।

सकुन ने पूछा, "चाय पियोगे, कक्का?" अरजुन जात से ठाकुर—सकुन भी ठाकुर। तिस पर गांव का रिश्ता। गांवों में सम्बोधन जनम से ही मिल जाते हैं। 'कक्का' कहती थी।

"ना-ना, रहने दे बिटिया!" अरजुन ने उत्तर दिया था, फिर नत्थी की तरफ देखा। दृष्टि में सवाल था, जैसे पूछ रहा हो—'अब किस तरह कहना चाहिए?' नत्थी सोच चुका था, किस तरह बात शुरु करनी है। उसने कर भी दी थी। बोला, "सकुन! तूने गांव का नाम ऊंचा किया है। सब तरफ सोलह गावों में तेरे धरम-कारज का डंका बजता है। जाने कितनी माओं को तू ने मौत के मुह से बचा लिया है। बहुत परोपकार का काम···कल ऐसे ही चार जनों में जिकर चला तो हम सबने ठाकुर साहब को सलाह दी थी—अच्छा रहे, तेरी खातिर पचायत से एक छोटा-मोटा दवाखाना खोला जाये। गांव की दो-चार बहिनों को तुझसे टरेनिंग मिले और वह भी ये पुन्न का कारज करें। इसके जरिए 'सरकारु जोजना' का भी परचार कर सकते हैं कि भाई बच्चे कम पैदा करो।"

सकुन समझ गयी थी—बीज वो रहा है। असल बात पौधा पैदा क की नहीं है। असल है फल खाने की। चुप रही। निश्चित किया कि

सारी वात इन्ही की सुन लेगी। अन्त में अपनी सुनायेगी। ये सुनाना इस तरह होगा कि मुंह के वल देहरी के वाहर जा गिरें। वेसरम कहीं के! …उसने मन-ही-मन में भुनभुनाकर उनके लिए एक गाली सोची थी। बड़े घूर्त लोग हैं मुए!

अरजुन और नत्थी फिर एक-दूसरे का चेहरा देखने लगे। इस वार जैसे नत्थी कह रहा था अपने साथी से—'वोलो भला! मैं तो अपनी तरफ से सव कुछ कह चुका। दो-चार वातें कहकर तुम भी पटाओ?' तभी दरवाजे से वाहर निगाह गयी—धन्ना चला आ रहा था। सिर झुका हुआ। चाल में वहुत जोश नहीं था। भीतर-ही-भीतर संकोच।

नत्थी अनायास ही वुदवुदा उठा, "लो ठाकुर। अव आये धन्नालाल?"

ठाकुर मुस्करा पड़ा। सोचा—वात वन जायेगी। धन्ना को वात करनी आती है। जोड़-तोड़ की वुद्धि भी है उसके भीतर। इस विचार से कभी-कभी अरजुन ठाकुर का चेहरा वुझ जाता था कि धन्ना हरिजन है। वक्त इस तरह वदला है कि इन दो टके के लोगों को वरावर में विठालना पड़ता है। यह किस शास्तर में लिक्खा है कि आदमी ज्ञान-वान हो जाय चार दरजे पढ़ ले तो जात-औकात ही भूल जायेगा!…पर क्या कर सकते हैं! गांधी वावा ने जिस नयी तरह के राज का डमरू पूरे देश में वजाया उसने शास्तरों की सुरलहरी भी फिलहाल दवा रखी है। अरजुन ठाकुर इसी गरज से धन्ना को सह रहा है। वक्त वक्त की वात है!…यह वक्त ही तो था, जिसने राजा हरीचंदर को डोम के यहां विकवा दिया। आज अरजुन ठाकुर भी कुछ-कुछ ऐसे ही विकता हुआ लगता है…पर यही सोचकर कर्त्तव्य निभाहना पड़ता है कि समय की मार है। खुद को राजा हरिश्चन्द्र मान लो तो वड़ा सुख सन्तोष मिलता है।

धन्ना ने देहरी पर पैर रखा—सकुन उसे घूर रही थी। धन्ना ने एक जोर दृष्टि उस पर डाली और सवाल किया, आ जाऊं!…"

सकुन ने जवाव दिया। एक गहरी सांस लेकर इस तरह अपने आप

को दबोच लिया, जैसे जहर का एक घूंट पचाया हो।

"आओ, भाई। कहाँ रह गए थे तुम ?" अरजुन पूछ रहा था।

"ऐसे ही ''सवेरे देर से जाग पाया।" धन्ना ने उतना ही औप-चारिक-सा उत्तर दिया। एक ओर खड़ा हो रहा।

सकुन चुपचाप कच्ची माटी का फर्श कुरेद रही थी। वह ऊब रही थी। आज का दिन बचा है 'परचार' के लिए और सुबह सवेरे का समय ये लोग डकारे जा रहे हैं। उकताकर पूछ लिया था, "'''तो ठाकुर साहब'''?"

"कहीं जाना है ?" नत्थी ने सवाल किया। चेहरा जलता जा रहा था। जान-बूझकर किया गया सवाल है। सकुन के जबड़े भिंच गये थे। उसी तरह जाना-बूझा उत्तर दे दिया था, "हाँ'''मास्टरजी का थोड़ा-सा काम बचा है। आज-ही-आज में निपटाना पड़ेगा।"

"सही बात है। सही है ! ''" नत्थी ने कहा, "जनतंतर है साहब ! अपने अपने उम्मीदवार के लिए हर कोई परचार करता है !'''तो, धन्ना लालजी ?'''भई, तुम्हीं कहो—क्या कहना है ?"

बिलकुल ऊबने लगी सकुन। अब असह्य ! काम की बात न कर व्यर्थ ही वक्त जाया कर रहे है—समझना कठिन नहीं था।

धन्ना ने कहा, "देख सकुन, मुझे मालूम है, तू गुस्सा है कि मास्टरजी के साथ से हटकर ठाकुर साहब को किसलिए 'सपोरट' करने लगा, पहले तो तू वह बात सुन ले, फिर · "

"मुझे तुमसे कुछ नहीं सुनना।" सकुन ने कुढ़कर कह दिया, "तुम सिर्फ वही बात करो, जिसके लिए यहाँ तक आये हो।"

अरजुन, नत्थी और धन्ना एकदम सिटपिटा गए थे। एक दूसरे के चेहरे देखने लगे। सकुन की आवाज ने जाहिर कर दिया था कि सहज तरह बात नहीं बनेगी। एकाएक ठाकुर अरजुन ने बात सम्हाली। बोला, "ठीक बात है। बेकार बातों में वखत खराब करने में क्या फायदा? जो जिस तरह जिस पाल्टी का चाहे, परचार कर सकता है।

हाय जोड़े। उठ पड़ो। बुरी तरह उखड़ कर रह गया अरजुन।

नत्थी ने कहा, "तुम्हारी मरजी। जाते हैं, पर यह समझलो कि पानी में रहकर मगर से वैर नहीं किया जाता!"

सकुन तमतमा गयी। वह गरीब है, तकलीफ में है, मगर इसका यह मतलब तो नहीं कि चाहे जो कोई उसे धमकियां दे सकता है? पूछा, "आप लोग मुझे धमकाने आये हैं?"

"तुझे क्या धमकायेंगे? बरोबर का आदमी होता तो बात करते!" अरजुन ठाकुर का चेहरा भी सुर्ख हो गया था, "पर इतनी गाँठ बांध ले, अब से इस गांव तो दूर आसपास के किसी गांव में कोई स्साला हिम्मत नहीं कर सकता कि तुझे बुलाये। तू पैदा नहीं हुई थी तो क्या इन गांवों में बच्चे नहीं जनमते थे? एक-एक टुकड़े को तरसा दूगा···और यह भी याद रखना—तू अकेली रहती है गांव में। और इस गांव के किसी आदमी की हिम्मत नहीं है कि अरजुन ठाकुर के रास्ते में आये!" फिर वह तड़पकर उठ खड़ा हुआ था, "चलो धन्ना!"

वे दरवाजे से बाहर चले गये थे। क्रोध से उसे घूरते-बिलबिलाते हुए।

सकुन स्तब्ध खड़ी रह गयी थी। ऐसे जैसे बदन में किसी ने रक्त खींच लिया हो। अभी कुछ सोच सके, तभी धन्ना लौट आया था। धीमी आवाज में बोला था, "सकुन···!"

सकुन ने कुछ सहज होकर उसे देखा था।

धन्ना देहरी पर ही खड़ा हुआ था, "तू मुझसे गुस्सा रहे या कुछ भी कहे, पर सच मान—अरजुन बहुत बुरा आदमी है। अब तो तू समझ ही गयी होगी कि मेरा क्या हुआ होगा? तुझसे हाथ जोड़ता हूँ—तटस्थ' हो जा ···। कुछ न बने तो इस गांव में ही दो-चार-दिन के लिए चली जा। किसी दूसरे-गाव। न रहेगा बास, न बजेगी बासुरी···। पर सकुन, मैं अच्छी तरियां समझ चुका हूँ कि बच्चे खिलौनों से खेल सकते हैं नाग उनके खेलने की चीज नहीं है।"

सकुन रिक्त आंखों से देखती रह गयी थी···सन्नाटा उसी तरह तलुवों से लेकर मस्तक तक काले अंधेरे की तरह फैला हुआ था। इससे अन्धेरे में मन भी गुम था, विवेक भी। ऐसे ही अन्धेरे तो आदमी जिन्दगी भर फैसले करवाते है।

धन्ना ने कहा था, "जाता हूं, पर मेरी बात भूलना मत ··· मैं किसी पाल्टी की तरफ से नहीं बोल रहा हूँ। जो कुछ बोल रहा हूँ धरम से मन की बात बोल रहा हूँ। तू इकली-दुकली रहती है गांव में···अकेले-दुकेले आना-जाना पड़ता है और अरजुन खराब आदमी है···। अब तू जाने तेरा काम जाने।" धन्ना जिस गति से बोला था, उसी गति से लौट भी गया था।

और सकुन उसी तरह खड़ी थी। भूल गयी थी कि उसे आखिरी दिन का काम पूरा करना है। भूल गयी थी कि वही थी जिसने मास्टरजी को चुनाव में सत्य, ईमान और धरम की बातें सुनायी थीं। भूल गयी थी कि उस दिन बात-बात में मुन्ना बोल गया था 'किसी बड़े ने कहा है सकुन—योद्धा कभी पराजित नहीं होता!'

थोड़ी देर बाद वहां से हटकर सकुन चारपाई पर बैठ गयी थी। दिमाग उसी तरह सन्नाटे से भरा हुआ था···यदा-कदा इस सन्नाटे को तोड़ते हुए अरजुन के शब्द कानों में गूंज उठते—हर शब्द माथे को लहू-लुहान करता हुआ—हथौड़े जैसा शब्द···

'···पर इतनी गाँठ बांध ले, अब से इस गांव तो दूर, आसपास के किसी गांव में कोई हिम्मत नहीं कर सकता कि तुझे बुलाये। तू पैदा नहीं हुई थी तो क्या इन गांवों में बच्चे नहीं जनमते थे? एक-एक टुकड़े को तरसा दूंगा···। और यह भी याद रखना—तू अकेली रहती है इस गांव में···।'

सब कुछ तो साफ-साफ कह गया है अरजुन···? उसके भीतर से चेतावनी उठी थी, फिर यह समूचे शरीर को कंपा गयी थी। धन्ना ठीक ही कहता है—'अरजुन अच्छा आदमी नहीं है!'

पर मास्टरजी ? हल्की-सी आवाज कहीं से उठती, पर अरजुन की आवाज के सामने यह आवाज मालूम नहीं कितनी कमजोर महसूस होने लगी थी उसे।

नत्थो ने कहा था—'अरे, और कुछ नहीं कर सकती तो इतना कर जरूर कर सकती हो कि 'तटस्थ' हो जाओ ···! किसी के लेने-देने में नहीं।'

बेशक सकुन यह कर सकती है!

फिर बचा ही कितना समय? सिर्फ आज का दिन परसों मतदान होगा। एक दिन पहले चुनाव-प्रचार बन्द हो लेगा। आज अगर सकुन कतरा भी जाती है तो मास्टरजी का कुछ बनने-बिगड़ने वाला भी नहीं।

सकुन ने यही निश्चय कर लिया था। ठीक भी है। धन्ना का कहना ही सही—'कुछ बने तो इस गांव से दो-चार दिन के लिए चली जा···। किसी दूसरे गाँव! न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी!'

और उस दिमागी अन्धेरे में सकुन ने यही निर्णय किया था। वह चल पड़ी थी। पड़ोस में कह गयी थी कि मुन्ना पूछने आये तो बतला देना कि साथ के गांव में किसी जच्चा-बच्चा की जिंदगी का सवाल था यहां पहुँचना सकुन का धर्म···दो-चार दिन बाद ही लौटना हो सकेगा।

छह

सब तरफ़ से जैसे निराशा की वदलियां दीखने लगी थी—मुन्ना समझ चुका था कि परसों सूरज बिलकुल छिप जायेगा। मास्टरजी की पेटियाँ हंसी-मजाक की चीज वन जायेगीं।

सकुन शाम तक नहीं आयी तो मुन्ना उसके घर पहुँचा था। मालूम हुआ था कि पड़ोस के गांव में किसी जच्चा को देखने चली गयी है अव चार-पाँच दिन वाद आयेगी। निराश होकर लौटा था। चार-पाँच दिन में तो सव कुछ खत्म हो लेगा।

शाम ढल आयी थी वैलगाड़ी में अरजुन के समर्थक नारे लगा रहे थे—मैदान में एक वड़े तख्त पर गैस की दो लालटेनें रखे हुए अरजुन ठाकुर वैठा था। नकछेदीलाल एम० एल० ए० उसके समर्थन में भाषण करने आया था। एक तरफ आज्ञाकारी भाव से धन्ना खड़ा हुआ था।

दो ग्रामीण उन सभी को मालाएँ पहना रहे थे।

सारा गाव मौजूद था। मुन्ना भी इसी भीड़ में जा खड़ा हुआ। कुछ ने उसे हंसकर देखा, फिर एक युवक किनारे ले गया। वोला, "एक ज़रूरी खवर है तुम्हारे लिए।"

वह खिचा-सा चला गया कोने में। युवक ने वतलाया, "तुम्हें मालूम

है—हरिजन बस्ती में मन्ना के हाथ से दो रुपया फी वोटर बांटा गया है !"

मुन्ना चुप रहा। मालूम हो गया है, तब भी क्या किया जा सकता है ?

युवक ने गहरी सांस ली थी, "मास्टरजी ने चुनाव में खड़े होकर गलती की !"

मुन्नालाल ने कहा, "नहीं, यों क्यों नही कहते कि मास्टरजी अपनी बलि देकर वह गलती सुधार रहे हैं, जो हम सब करते हैं···"

युवक समझा नहीं।

मुन्ना ने फीकी-सी हसी हंसकर कहा, "जो आदमी विश्वास और ईमान बेचकर वोट खरीदता हो—उसे पच बनाकर तुम लोग उससे न्याय लोगे ?···मूरख कौन हुआ।"

युवक खड़ा रह गया।

मुन्नालाल चल पड़ा चाल में ढीलापन था। पर उसे अपने उत्तर से खुशी हो रही थी। मालूम नहो कितने उम्मीदवारो के पास आखिर में केवल यही उत्तर रह जाता होगा ? उसने कराहते हुए सोचा था।

शाम का सन्नाटा और अंधियारी हौले-हौले गहरी होने लगी थी। गैस की रोशनी से कहीं ज्यादा तेज नकछेदीलाल एम०एल०ए० की आवाजें आ रही थी।

"···तो भाइयो, गाधी बाबा ने कहा था कि सत्य, अहिंसा, न्याय और धरम बड़ी चीज है। जो इस रास्ते पर चलता है, वही देश और पूरी मनुष्य जाति को कुछ दे सकता है। जो अपना सब कुछ फूककर इस राह आये, वह महान है, पूजनीय है। आपके अरजुन ठाकुर ने भी यही राह पकड़ी है, खुशी की बात है। आठ साल से लगातार इस रास्ते पर अपना सर्वस्व न्यौछावर करके आप लोगों की सेवा करते आये हैं। अब शेष जीवन की राह ही बना ली है कि सेवा करेंगे ··आपका सहयोग इन्हें सिर्फ वोटों से चाहिए। बाकी तन, मन, धन जो है, सो सब आपका

का है···मैं आपसे यही निवेदन करने आया हूं कि आप अरजुन ठाकुर
वोट देकर गांधीजी को जिताएं—उनके सिद्धान्तों को, उनके विश्वासों
ो और मनुष्यता तथा ईमानदारी को जिताएं···"

सहसा मुन्ना को चलते-चलते ठोकर लग गयी थी। धन्नालाल के
तेज आवाज़ सुनी थी उसने, "अरजुन ठाकुर।···"

"जिन्दाबाद।'···"यह बहुमुखी और बहुत बुलन्द आवाज़ आयी थ

मुन्नालाल देर तक शोर सुनता रहा था···सुनता रहा था···इस
अंधियारे हिस्से में वह बिल्कुल अकेला खड़ा था। धन्ना, विलायती,
सकुन···सब छूट गये। क्या वह अकेला खड़ा रहेगा ?···उसके भीतर
प्रश्न उठा था।

अनायास ही उसका मन हुआ था—चीख उठे, "मास्टर जादो-
ाम।···" और खुद ही जवाब दे—"जिन्दाबाद।···"

मुन्ना के चेहरे पर मुसकान तिर आयी थी। क्या अकेली आवाज़,
आवाज़ नहीं होती ?···ठीक है कि शोर में कुछ देर सुनायी नहीं
पड़ेगी—पर कब तक सुनायी नहीं पड़ेगी ?

उसने सोचा था। उसका सीना फूल गया था। वह निश्चिन्त औ
दृढ़ चाल में मास्टर जादोराम के घर की ओर चल पड़ा था। अब न
उसे अकेलापन महसूस हो रहा था, और न ही धन्ना, विलायती
सकुन··· किसी की याद उसके भीतर शेष थी।

□ □

मास्टरजी भीतर थे। मुन्ना चुपचाप चबूतरे पर आ बैठा था
हिस्से में ढेर लालटेनें रखी थीं। मुन्नालाल उनकी ओर देख
था···दिमाग सुन्न था। ऐसे जैसे पत्थर हो गया हो।

फिर अचानक इस पत्थर पर चोटें पड़ने लगी थीं।
चोटें···नकछेदीलाल एम० एल० ए० कह रहा था—'अरजु

देकर वोटर गांधीजी को जितायें ! उनके सिद्धान्तों, विश्वासों, ईमानदारी और मनुष्यता को जितायें।'''"

कैसी विडम्बना ?

अन्धेरा धीरे-धीरे गहराने लगा और लालटेनों का वह झुन्ड उस अन्धेरे में लोप होता जा रहा था। ऐसे जैसे गांधीजी के विचार, सिद्धांत, ईमानदारी और मनुष्यता'''सब लोप होते जा रहे हों।'''

फिर लोप हो गये !

सहसा अन्धेरे को चीरता धीमा-सा प्रकाश भीतरवाले कमरे से बाहर आ गिरा। मुन्ना ने चौककर उस ओर दृष्टि उठायी———श्यामा लालटेन जलाकर ला रही थी। एक पल के लिए मुन्ना के भीतर फिर से 'जिन्दाबाद' शब्द उग आया। सकुन जा चुकी है———धन्ना भी दगा दे गया———विलायती को मास्टरजी ने ही छुट्टी दे दी'''पर अभी मुन्ना है यहा अकेले बरामदे में बैठा हुआ अन्धेरे में किसलिए खो गया है? उसने सोचा। अरजुन की मीटिंग खतम हो रही होगी, या हो चुकी होगी। आखिरी बात हो रही थी। ठीक है कि मास्टरजी हारेंगे, पर मुन्ना क्यों हारे।'''वह अभी दो-तीन घन्टे लगातार गाव के घर-घर फेरा ले सकता है। एक-एक का कच्चा चिठ्ठा खोल सकता है। कुछ न कर सका तो सौ में से पांच वोट तो तोड़ ही लेगा। कल से प्रचार बन्द हो रहा है। मुन्ना एक दम उठ खड़ा हुआ।

श्यामा लालटेन रखकर लौट रही थी। मुन्ना ने टोक दिया, "मास्टर जी क्या कर रहे हैं?"

"कोई किताब पढ़ रहे है'''" श्यामा ने उत्तर दिया, फिर पूछा, "बुला दूं?"

"नहीं।" मुन्ना ने कहा, "वह मेरे बारे में पूछे तो बता देना कि काम से गया हूं। देर बाद लौटूंगा और सुन'''यह लालटेन लिये जा रहा हूं। दूसरी जला लेना।"

"चाय नहीं पियोगे मुन्ना भईया ?"

"नहीं—टैम नहीं है।" मुन्ना ने लालटेन उठायी और वाहर
ल गया। उसने तय किया कि सवसे पहले धन्ना से ही वात करेगा।
वह सिर्फ वोटर है मुन्ना की नजर में।

ऊवड़-खावड़ रास्ते पर सन्नाटा फैलना शुरू हो गया थी। मुन्ना तेज
ज चाल से उस रास्ते पर वढ़ता जा रहा था…किस-किस तरह
समझाना कहना है——मुन्ना का मुखाग्र पड़ा है और समझाने के लिए
भी क्या कुछ शेप है? सव तो साफ है। रत्ती-रत्ती साफ। न समझें तो
उनकी मरजी, मुन्ना का धरम है——अपनी वात कहना। घर-घर कहता
जायेगा।

वे ठीक तरह सुनेंगे नहीं। वार-वार तर्क-वितर्क करेंगे…पर मुन्ना
को कहना है। कहते रहना है…अरजुन की ताकत के सामने ऐसे ही है
से इस समय, मावसी अन्धेरे में मुन्ना के हाथ यह लालटेन टिमटिमाती
.। रही है…सव तरफ ऊंची-नीची धरती, गढे पोखर और गन्दगी है
लालटेन सिर्फ एक पगडंडी के दो कदमों को ही उजाला दे पाती है। यही
सही। उजाला है, यह क्या कम सन्तोप की वात है? मावस में टिम-
टिमाहट वाली एक लालटेन ही सही—रोशनी तो है।…अभी पूरे गांव में
लोग लालटेनें लेकर निकल पड़े तो सारा अंधेरा, सिआर की तरह मुंह
छिपाकर भाग जायेगा। मुन्ना वढ़ता जा रहा था…

गांव के एकदम कोने में है हरिजन-वस्ती। हरिजन-वस्ती के विच
वीच धन्ना का टापरा। मुन्ना को वहीं पहुंचना होगा।

मुन्नालाल चलता गया। अनायास ही उसकी निगाह दायीं ओर
गयी। उस तरफ सकुन की पाटौरें हैं। अन्धेरे में डूव गयी हैं मुन्न
दिमाग में पंछी वनकर सकुन कहीं से उड़ आयी, वैठ रही।

कितनी-कितनी वातें करती थी वह?…पर पहले झटके में ही
वेल की तरह छिटककर पेड़ से परे हो गयी, जिसकी पकड़ सिर्फ अ
पौधे पर होती है। वाकी पता नहीं लगा कि जड़ ही नहीं थी।

किसी ने वतलाया था कि यों ही नहीं गयी थी वह। भेजी

पडोस में झूठ फैला गयी कि वह जापे के लिए जा रही है। सामना तक नहीं कर सकी थी। कैसे करती?···मुन्ना ने सोचा था। आदमी की *आत्मा पर एक बार कालिख पुत जाये तो रात के अन्धेरे जैसा हो जाता* है। सूरज की पहली चमचमाहट होते ही कायर होकर भाग निकलता है। किस जगह छुप जाता है, मालूम ही नहीं होता। सकुन का भी कुछ-कुछ ऐसा ही हुआ।

मास्टरजी को भी छला···मुन्ना को भी।

बरबस ही मुन्ना को याद हो आया—उस दिन बोली थी—'···दुख-दर्द सबके एक-जैसे होते हैं। जात के हिसाब से तो होते नहीं?···'और सुनकर मुन्ना के भीतर हिलोरें-सी उठने लगी थी। ऐसी अपरिचित हिलोरें जो सागर के पास होती हैं। उसके भीतर पहचानता किसी बार नहीं। मुन्ना की उम्र, जवानी, सपनों में भी ऐसी ही कुछ हिलोरें थी। पहले कभी महसूस नहीं हुई थी। उस दिन महसूस हुई थी। यह अहसास सकुन की बात ने और भी बढा दिया था। सकुन सिद्धान्त की पक्की है। मुन्ना से निभ जायेगी—मुन्ना ने सोचा था उस दिन।

और सकुन थी कि यहां तक कह गयी थी—'···किसी से डरती भी नहीं हू, पर मुझे लगता है कि तुम डरते हो।'

मुन्ना सिटपिटा गया था। किनारा कर गया···इसके बावजूद उसके मुंह से कुछ शब्द ऐसे निकल गये थे, जिन्होंने सकुन को निश्चिन्त ही महसूस कराया होगा—'बिल्कुल नहीं! अगर तुम ही कह रही हो तो फिर ··'

मुन्ना को लगा कि कहीं सीने के पास ही दर्द की हल्की लकीर खिंच गयी है। ऐसे, जैसे लहर एक बार माटी पर निशान छोड़कर चली गयी हो और उसके बाद लौटी ही न हो। मरुथल पर एक लकीर पडी रह गयी हो—कभी लहर आयी थी इस बात की गवाही देती हुई।

मुन्ना ने एक गहरी सास ली। अच्छा ही हुआ। यह सब न हो सका, जो सोचा था, उसके बाद सकुन बात-विश्वास में टिगती तो कष्ट बहुत होता मुन्ना को। एक तरह से जीना ही दूभर हो जाता। पहले ही

पर चढ़ गयी।

मुन्ना बढ़ता गया। धन्ना का घर सामने दीखने लगा था। घर के चबूतरे पर कुछ लोग दारु पी रहे हैं शायद मुन्ना ने महसूस किया था।

सच था। वे सब दारु पी रहे थे। धन्ना भी शरीक था। अंगरेजी दारू।

मुन्ना को उन्होंने भी देख लिया था। धन्ना ने नशे के खुलाव के बावजूद महसूस किया था कि सिकुड़कर अपनी ही आत्मा के लिफाफे में बन्द हो गया है। कुछ-कुछ घबरा ही उठा था। बिलकुल वही भाव। जैसे अन्धेरे पर सूरज की पहली किरन का आ गिरना, कालिख की छट-पटाहट।

मुन्ना सामने जा पहुंचा था। कई आवाजें उठी थीं एक साथ, "राम-राम, मुन्ना।"

"राम-राम।" मुन्ना ने लालटेन किनारे रख दी थी। पहले से ही एक लालटेन थी। उसके प्रकाश में बहुत कुछ उजागर हो रहा था। अब प्रकाश दोहरा हो गया। मुन्ना उनके साथ ही बैठ गया।

एक पल के लिए खामोशी रही। फिर धन्ना बोला था, "लोगे?"

"उंहुं!···यह सब खाने-पीने की मेरी औक़ात नहीं। एकाध बार जीभ का जायका बिगाड़ लूंगा, तो हमेशा के लिए मेरी जीभ बिगड़ जायेगी।"

धन्ना बिलकुल ही चुप हो गया—देर के लिए चुप। मुन्ना गाली दे रहा है उसे! गाली के लिए क्या सिर्फ कुछ खास शब्द ही होते हैं? कई बार गाली इतनी सभ्य होती है कि कोई असभ्यता उसके सामने टिक नहीं पाती। इर्द-गिर्द बैठे दो-चार लोग भी सिटपिटा गये थे। सब जानते हैं कि मास्टर जादौराम के साथ दगा हो रहा है···और वे ही सब दगा कर रहे हैं···जानबूझकर कर रहे हैं···

मुन्ना बोला, "कल से हम लोग वोट के बारे में बात नहीं कर सकेंगे।"

"हां।" किसी ने बोला था, "सरकारी नियम है चुनाव वाले दिन से पहले दिन वोटर को ठंडे दिल-दिमाग से सोचने का मौका दिया जाये"

"हां।" मुन्ना ने कहा, "कल वही दिन है। धरम-ईमान से समझने-सोचने और फैसला करने का दिन कि हम ठीक कर रहे हैं कि गलत!"

वे चुप रहे।

मुन्ना कहे गया, "असल में कल का दिन उम्मीदवार को परखने का नहीं है भईया! जिसने भी यह दिन खाली रखना तय किया है और कानून बनाया है, बहुत सोच-समझकर बनाया है। सोचा होगा कि चुनाव से पहले तो सभी इसको वोट दो, उसको वोट दो कहते हैं। नारे लगाते हैं। भीड़ जुटाते हैं, पर एक दिन तो ऐसा मिले जिसमें आदमी अपनी ही आत्मा के भीतर झांके कि भाई जिसे भी यह वोट देगा क्या सचमुच सही देगा?···यह आदमी की अपनी परख-पहचान का दिन है।"

सभी के दिल में कुछ डूबने-बैठने लगा। घन्ना को महसूस हो रहा था जैसे अरजुन ठाकुर से आयी शराब की बोतल से जितने घूट लिए थे—अंगारे बन गये हैं और उसके भीतर सब कुछ जलाकर राख किये डालते हैं।

एक ओर गजुआ बैठा था। तेल पिया हुआ लट्ठ हाथ में। बुद्धि कम थी। उस पर दारू दो पाव से ज्यादा उतर गयी थी भीतर। दिल-दिमाग सिर्फ एक लाठी बनकर रह गया था—जट, बात कुछ भी समझ में नहीं आ रही थी। पर गौर कर रहा था हर शब्द पर···कभी-कभी उसे महसूस होता था—विधाता ने ज्यादती करदी। ठीक वक्त बात समझ में नहीं आती। आती है तो अगले दिन या फिर दो-चार घन्टे बाद।

मुन्ना ने खामोशी को तोड़नेवाला आखिरी सवाल कर दिया, "तो अब क्या सोचनेवाले हो तुम लोग?"

उन्होंने एक-दूसरे के चेहरे देखे। गिलास सबके हाथों में। मुन्ना की भाषणबाजी और दिमागी ठोकरों में किस वक्त भूल गये थे कि अगला पैग लेना है—मालूम ही नहीं पड़ा था। इस कुरेदन ने सहसा याद दिला

दिया धन्ना ने बगल से बोतल उठायी और गिलास मुंह-मुंह तक भर दिये। कहा, "सच बात तो ये है मुन्नालाल कि फैसला सामने पड़ा दीख रहा है। इस बार का मैदान भी ठाकुर के ही हाथ रहेगा।"

"वह तो मैं भी देख रहा हूं।" मुन्ना ने जवाब दिया, "मैं तो ये सोच रहा हूं कि अगर भरी सभा में द्रौपती का पल्लू खिंच रहा हो तो कौन-सा किसुन पैदा होगा?"

"तुम हो तो गये हो!" धन्ना व्यंग से बोला।

"पर भईया, राखी तो तुमने भी बंधवायी थी—अकेला मैं ही थोड़े किसुन बना था।" मुन्ना ने उसी सादगी से उत्तर दिया। फिर पास बैठे लोगों से पूछा, "क्यों पंचो, धरम से कहना। गलत बोला हूं क्या?"

कुछ फुसफुसाहटों भरी हंसियां उभरीं। धन्ना तिलमिला उठा। मुन्ना पर व्यंग नहीं चलेंगे। उसने सोचा, फिर ध्यान हो आया—सिर्फ व्यंग क्यों, कोई बात नहीं जमेगी। कारण है—धन्ना के टूटे धरम ने पहले उसे कमजोर कर दिया है। कैसे ठहर सकता है मुन्ना के सामने? निश्चित किया कि मुन्ना को दुत्कार देगा। कुछ ऐसा ऊटपटांग बोल देगा कि तिलमिलाकर मुन्ना चला जाये। किसी-न-किसी तरह मुन्ना को यहां से खिसकाना ही ठीक होगा। यही सोचकर कहा था, "वह सब छोड़ो कि कौन दिरोपदी है और कौन किसुन है। असल बात कहो जिस मतबल से यहां आये हो?"

"समझ नहीं पा रहे हो क्या?" मुन्ना बोला, "सीधी साफ बात कहने आया हूं—कल के खाली दिन में सोचना, आत्मा किसके लिए बोलती है? तब तक इस दारू का नसा भी उतर लेगा।"

सन्नाटा फैल गया। धन्ना की लिफाफे के मुंह को फाड़कर आयी आत्मा फिर से बिलबिलाकर भीतर समा गयी। आत्मा क्या, कछुए का सिर हुआ। समझा कि पीठ में धंसाकर जान बचा लेगा।

मुन्ना मुसकराया। खुश था—सोचा, वोट न मिले जादौराम को, पर इतना सच है—एक बार आत्मा को तो झकझोर ही चला है। चोर

के पांव ही कितने होते हैं? कहा, "ठाकुर जीतेगा, अच्छी तरियां जानत हूं और यह भी जानता हूं कि तुम्हें जिस आदमी ने चार अक्षर सिखाये हैं तुम्हारी जात को आदमी की जात समझा है—वह हारेगा। पर कभी-कभी मुझे लगता है धन्ना कि वह आदमी नहीं हारेगा—तुम हार जाओगे। मन का घन भले ही करलो। सारे जमाने के सामने कतल करके मन्दिर चले आओ, अदालत में बच जाओ, पर अपने ईमान से कैसे बचोगे? वह तो हर पल भीतर पूछता रहेगा—क्यों रे भाई, यह तूने क्या किया?..."

वे सब चुप थे। गजुआ को लगा था कि भड़का रहा है—ठाकुर के खिलाफ दिरोपदी, किसुन, आतमा, धरम सबका नाम लेकर भड़का रहा है। गजुआ के बाजुओं में तड़पन होने लगी थी। ये तड़पन बिजलियों की कौंध की तरह दिमाग में भी थी। यह पहचान पाना उसकी समझ से बाहर था कि तड़पन शराब की है या बुद्धि की। बस, तड़पन थी और महसूस हो रही थी।

"मन का सामना करना बहुत कठिन होता है धन्ना..., चैन नहीं मिलता।" मुन्नालाल कहे जा रहा था, "यह जानता हूं कि पाप आदमी तो आदमी, भगवान को भी सालता है।"

"तुम अपनी बात कहो और यहां से जाओ।" धन्ना बिगड़ उठा पर। समझ चुका था कि इस सन्नाटे ने नशे उतार दिये हैं, भीतर कहीं सोयी बेसुध आत्मा जागने को कुलबुलाने लगी है। यह खराब हुआ। इस खयाल के साथ ही घबराहट भी बढ़ी थी।

धन्ना ने बगल से बोतल उठायी और गिलास मुंह-मुंह तक भर
। कहा, "सच बात तो ये है मुन्नालाल कि फैसला सामने पड़ा दीख
ा है । इस बार का मैदान भी ठाकुर के ही हाथ रहेगा ।"

"वह तो मैं भी देख रहा हूं ।" मुन्ना ने जवाब दिया, "मैं तो ये सोच
रहा हूं कि अगर भरी सभा में द्रौपती का पल्लू खिंच रहा हो तो कौन-सा
किसुन पैदा होगा ?"

"तुम हो तो गये हो !" धन्ना व्यंग से बोला ।

"पर भईया, राखी तो तुमने भी बंधवायी थी—अकेला मैं ही थोड़े
किसुन बना था ।" मुन्ना ने उसी सादगी से उत्तर दिया । फिर पास बैठे
लोगों से पूछा, "क्यों पंचो, धरम से कहना । गलत बोला हूं क्या ?"

कुछ फुसफुसाहटों भरी हंसियां उभरीं । धन्ना तिलमिला उठा । मुन्ना
र व्यंग नहीं चलेंगे । उसने सोचा, फिर ध्यान हो आया—सिर्फ व्यंग
ी क्यों, कोई बात नहीं जमेगी । कारण है—धन्ना के टूटे धरम ने पहले
उसे कमजोर कर दिया है । कैसे ठहर सकता है मुन्ना के सामने ?
निश्चित किया कि मुन्ना को दुत्कार देगा । कुछ ऐसा ऊटपटांग बोल
देगा कि तिलमिलाकर मुन्ना चला जाये । किसी-न-किसी तरह मुन्ना को
यहां से खिसकाना ही ठीक होगा । यही सोचकर कहा था, "वह सब छोड़
कि कौन दिरोपदी है और कौन किसुन है । असल बात कहो जिस मतल
से यहां आये हो ?"

"समझ नहीं पा रहे हो क्या ?" मुन्ना बोला, "सीधी साफ
कहने आया हूं—कल के खाली दिन में सोचना, आत्मा किसके लिए वो
है ? तब तक इस दारू का नसा भी उतर लेगा ।"

सन्नाटा फैल गया । धन्ना की लिफाफे के मुंह को फाड़कर
आत्मा फिर से बिलबिलाकर भीतर समा गयी । आत्मा क्या,
सिर हुआ । समझा कि पीठ में धंसाकर जान बचा लेगा ।

मुन्ना मुसकराया । खुश था—सोचा, वोट न मिले जावें
पर इतना सच है—एक बार आत्मा को तो झकझोर ही चल

के पांव ही कितने होते हैं? कहा, "ठाकुर जीतेगा, अच्छी तरियां जानता हूं और यह भी जानता हूं कि तुम्हें जिस आदमी ने चार अक्षर सिखाये हैं, तुम्हारी जात को आदमी की जात समझा है—वह हारेगा। पर कभी-कभी मुझे लगता है घन्ना कि वह आदमी न्हीं हारेगा—तुम हार जाओगे। मन का धन भले ही करलो। सारे जमाने के सामने कतल करके मन्दिर चले आओ, अदालत में बच जाओ, पर अपने ईमान से कैसे बचोगे? वह तो हर पल भीतर पूछता रहेगा—क्यों रे भाई, यह तूने क्या किया?…"

वे सब चुप थे। गजुआ को लगा था कि भड़का रहा है—ठाकुर के खिलाफ दिरोपदी, किसुन, आतमा, धरम सबका नाम लेकर भड़का रहा है। गजुआ के बाजुओं में तड़पन होने लगी थी। ये तड़पन बिजलियों की कौंध की तरह दिमाग में भी थी। यह पहचान पाना उसकी समझ से बाहर था कि तड़पन शराब की है या बुद्धि की। बस, तड़पन थी और महसूस हो रही थी।

"मन का सामना करना बहुत कठिन होता है घन्ना…, चैन नहीं मिलता।" मुन्नालाल कहे जा रहा था, "यह जानता हूं कि पाप आदमी तो आदमी, भगवान को भी सालता है।"

"तुम अपनी बात कहो और यहां से जाओ। "घन्ना बिगड़ उठा था। समझ चुका था कि इस सन्नाटे ने नशे उतार दिये हैं, भीतर कहीं सोयी बेसुध आतमा जागने को कुनबुनाने लगी है। यह खराब हुआ। इस खयाल के साथ ही घबराहट भी बढ़ी थी।

"जाता हूं…" मुन्ना ने उत्तर दिया था, "पर याद रखना भाई, कल का खाली दिन यह सोचने का नहीं है कि पच के लिए मास्टरजी ठीक रहेंगे या अरजुन ठाकुर। कल का दिन सिरफ यह सोचने का है कि तुम किसको वोट देकर अपने भीतर का सत्त निबाहोगे।"

"अबे, ओ…!" गजुआ चिहुंक पड़ा था। उसी चिहुक के साथ उठा भी। लाठी की मूठ पर पंजा कस गया था उसका। ठाकुर ने बड़े

पिलवाये हैं, वहुत दूध-दही पिया है उसके यहां। वदन की ये
मलीला ही अरजुन ठाकुर की देन है। उसे यह सब धरम के
लगा था कि जिसका नमक खाया हो, उसके खिलाफ वात सुने।
ढ़कर कहा था, "जो फैसला होगा, हो लेगा। तू जरा यहां से
तो पकड़! हरामी कहीं का !"

मुन्ना ने उपेक्षा से उसे देखा, फिर घृणा से उसकी लाठी पर नजरें
ायीं। बोला, "यह कुश्ती नहीं है गजुआ पहलवान। यह धरम की
ड़ाई है। यहां अकल काम करती है, लाठी नहीं।"

"वेटा...! लाठी भी वहुत काम करती है...न माने तो देख! तेरी
ो..." सहसा गजुआ के हाथ की लाठी जोर से तड़पी और सांय की
आवाज करती हुई मुन्ना पर गिर पड़ी...वह लालटेन लेने के लिए
नीचे झुका ही था—एकदम औंधे मुंह धरती पर जा गिरा।

धन्ना चीख पड़ा, "अवे ये क्या किया तूने...! मूरख!" सभी
सिटापिटा गये। मुन्ना के मुंह से निकली चीख़ इतने जोर की थी कि पल
भर में ही आसपास के टापरों के द्वार खुले। मर्द-औरतें और वच्चे वाहर
निकल आये!

मुन्ना धरती पर पड़ा कुनुमना रहा था...

"साला नहीं तो...! ठाकुर साहव के खिलाफ हमें वरगलाने आया
ा हरामी?" गजुआ गालिया वक रहा था।

धन्ना ने कांपते हाथों से लालटेन नीचे झुकायी। मुन्ना का चेहरा,
कमीज़ का ऊपरवाला हिस्सा और धरती का एक वड़ा टुकड़ा लहू से
सरोवोर था...वाल सन गये थे। लोगों की आंखें फट गयीं।

कोई वड़वड़ाया, "कत्ल हुआ समझो...!"

गजुआ ने जव नीचे निगाह डाली तो घवरा गया। कुछ सूझा नहीं
एक पल की देर किये विना भाग खड़ा हुआ।

कुछ लोग चिल्लाये, उसकी ओर दौड़ पड़े, "पकड़ो हरामी को
साले ने गो आदमी को मार लिया!"

"पकड़ो...! पकड़ो...!"

कुछ ने गजुआ को जा दबोचा।

मुन्ना की कुनमुनाहट ठंडी हो चुकी थी। एक ओर पड़ी लालटेन फक्-फक् करके जल रही थी।

कुछ पलों में ही सब तरफ बड़बड़ाहटें और शोर बिखर गया। नशा कब उतर गया था—किसी को मालूम ही नहीं हुआ। बोतलें इधर-उधर लुढ़क गयीं। कुछ लोगों ने गजुआ को उठाया और पीटने लगे। गालियां-ही-गालियां वातावरण में उछल रही थीं। धन्ना बड़बड़ाया था, "अरे, एक-दो लोग"'पुलिस थाने की तरफ दौड़ जाओ। ये मर गया तो सब बस्ती जेल में जायेगी—हो गया चुनाव !"

कुछ लोग आनन-फानन में दौड़ पड़े थे। धन्ना ने चार-छह लोगों की मदद से घायल, लहूलुहान मुन्ना को धरती से उठाकर चारपाई पर रखवाया। फिर धन्ना डॉक्टर बुलाने दौड़ पड़ा।

अन्धेरे में ही दौड़-धूप इस तरह शुरू हो गयी थी, जैसे एकदम उजाला हो गया हो।

□□

मास्टर जादौराम को खबर मिली तो नंगे-पैरों दौड़ पड़े। लगभग हांफते हुए उस घर में पहुंचे, जिसमें चारपाई पर मुन्ना लहूलुहान पड़ा हुआ था। पास पहुंचकर खड़े रह गये थे। शब्दहीन होकर लग रहा था कि सब कुछ उनके कारण हुआ है। वही अपराधी हैं। अगर मुन्ना को कुछ हो गया तो इस हत्या का दोष अंश मात्र ही सही उन पर भी कहीं न कहीं आयेगा। आत्मा कराह उठी। अच्छा नहीं हुआ इस प्रपंच-राग में पड़कर यह जनतंत्र हुआ या मौत का सरकस ?

मुन्ना बेहोश था। घाव पर पट्टियां कस दी गयी थीं। ठीक कनपटी के पास से सिर खुल गया था। खून थम रहा था, पर थमते-थमते तो न जाने कितना बह आयेगा ? सब तरफ घबराहट और बेचैनी थी।

ाहव···! गजुआ ने हमला किया। विचारा मुन्ना तो कुछ भी ला था उससे।" एक हरिजन वड़वड़ा रहा था, "उसने एक शब्द हीं कहा था गजुआ से···पर पता नहीं उसे कितनी चढ़ी थी। ठाकुर ोटियां जो लगी हैं ससाले को ! एकदम लाठी घुमा दी।"

और मास्टरजी कुछ तो सुन पा रहे थे—कुछ नहीं। आंखें छल-ा आयी थीं उनकी। विन मां-वाप का वेटा... सव सिर्फ मास्टर ादीराम के कारण हुआ। एक ही वारे में सारे कर्ज-कृपा से ऋणमुक्त हो या मुन्ना। हर हमेशा के लिए। मास्टरजी की पलकों के किनारों से ओस की तरह आंसू की वूंदें छलछला आयीं।

"वुरा हुआ···! ऐसे चुनाव लड़ा जाता है?" किसी औरत ने कहा था। किसी ने समर्थन किया था, "अरे गुण्डे-वदमाश पाल के चुनाव जीतेगा तो हमें क्या सम्हालेगा ठाकुर ···?"

"सम्हालना ? छोड़ दो ये वात। सच तो ये है कि हम सव कुत्ते की मौत मारे जाएंगे।" कोई कहे जा रहा था।

उसके करीव चारपाई की पाटी पर मास्टरजी झुक आये थे और वड़ा रहे थे, "मुन्ना···! ऐयू मुन्ना !"

उनकी आवाज में इतनी तकलीफ थी कि फुसफुसाहटें वन्द हो गयीं सव तरफ सन्नाटा उग आया।

□ □

भागते-भागते धन्ना थकने लगा था, किन्तु मालूम नहीं अन्धेरे में कितनी दम-खम की नजर पैदा हो गयी थी। ऐसे दौड़ रहा था जैसे कुछ साफ पड़ा हुआ हो। सव तरफ उजाला।

मुन्ना पर गजुआ के लाठी-प्रहार की तरह ही कुछ शब्द धन् माथे पर गिर रहे थे—'···मन का सामना करना वहुत कठिन हो धन्ना, पाप आदमी तो आदमी, भगवान को भी सालता है !'

और सालने लगा है पाप···

धन्ना ने पहले ही क्या कम किया था। उसके हर एकांत को आत्मा कोड़ों की मार से आहत कर देती थी। अपने लोभ में उसने न सिर्फ मास्टर जादोराम से विश्वासघात किया था, बल्कि सच्चाई को भी छोड़ बैठा था। तिस पर यह दूसरा पाप···मुन्ना सिर्फ धन्नालाल से बात करने आया था। दोस्ती के नाते, पुराना साथी होने के नाते ' पर उसे लहू देकर इस सबका बदला चुकाना पड़ा।

छिः छि ··! धन्ना की आत्मा कराह उठी थी। ऐसे को, जिसने गुण्डे पाल रखे हों, धन्ना और उसके साथी गाव का सिरमौर बना रहे हैं? इसी तरह गाधी की रक्षा करेंगे ये लोग? मजुआ को साथ लेकर इसे जिताया जायेगा? इससे बड़ा मखौल गांव और देश के साथ क्या हो है कि गोली की पूजा करके कहा जाये···अहिंसा आ रही है।

डॉक्टर के दरवाजे तक पहुंचते-पहुचते बुरा हाल हो गया था। जोर-जोर से दरवाजे पीटकर उसे जगाया और फिर सारी घटना कह सुनायी। सुनकर डॉक्टर भी सिटपिटा गया। कहा, "पुलिस केस बन गया है भाई! पहले पुलिस में रिपोर्ट···"

"वह तो अब तक हो चुकी होगी, साहब" धन्ना ने कहा था, "अब आपकी जरूरत है।"

डॉक्टर ने अपना बैग और स्टेथस्कोप सम्हाला था, जल्दी-जल्दी धन्ना के साथ हो लिया।

आधा घन्टे में पहुंच गये थे दोनों।

इस बीच पुलिस भी आ चुकी थी। दरोगाजी ग्रामीणों में बयान ले रहे थे। डॉक्टर और धन्ना उस पाटौर में समा गये थे जिसमें मुन्ना पड़ा हुआ था।

ज्यादातर ग्रामीणों ने उबलकर सब कुछ सच-सच कह डाला था। दरोगा ने बयानो को दर्ज करने के बाद हस्ताक्षर लिए थे, फिर डॉक्टर से घायल के बारे में जानकारी ली गयी थी।

डाक्टर ने बतलाया था, "मुन्ना को शहर के अस्पताल में ले जाना

ड़ेगा। केस सीरियस हो गया है।"

पुलिसवालों ने अपनी जीप से मुन्ना, मास्टरजी, और घन्ना को शहर रवाना कर दिया था। डॉक्टर साथ गया था।

सुबह के साथ बाजी एकदम पलट गयी ···!

□□

अरजुन ठाकुर ने माथा पीट लिया। गजुआ गांव से गायब हो गया। खबर लानेवालों ने रात को ही खबर ला दी थी। अरजुन भुनभुनाता हुआ जागा था, किन्तु जब कहानी सुनी तो हक्का-बक्का हो गया। पल भर में नींद उड़ गयी। तय किया था कि सुबह के साथ ही उस इलाके में जायेगा, जहां मुन्ना पर हमला हुआ था। मुन्ना के घर में मुन्ना के अलावा कोई था नहीं—वहां पहुंचकर किसके सामने क्या कहा जाता ? निश्चित किया था कि हरिजन-बस्ती में पहुंचकर ही गजुआ की निंदा करेगा। इस तरह पूरा नहीं तो मामला कुछ-कुछ रफा-दफा हो सकेगा।

पर वहां पहुंचकर लगा था—बेवकूफी है। चार जनों को इकठ्ठा करके बोला था, "गजुआ ने जो कुछ किया है, वह अहिंसा के मेरे सिद्धां के खिलाफ किया है। जनतंत्र में इस तरह की हरकत नहीं चल सकती

ग्रामीणों में से कुछ युवा लड़के बाहर निकल आये। बोले, गांधीजी को ही मानते हैं ठाकुर साहब ! फिर गजुआ को पालने की ज़रूरत थी ?···"

अरजुन सकपका गया। फौरन कोई उत्तर नहीं सूझा।

एक महिला ने परदे के भीतर से बहुत बेपरदा बात कहदी, ने बुरा किया हो कि भला, पर यह बात सच है ठाकुर साहब उसने तुम्हारी खातिर। मुन्ना तुम्हारे खिलाफ परचार कर तभी उसने लट्ठ चला दिया।"

एक क्षण शांत रहकर अरजुन सोचता रहा था कि क्या क्या नहीं। तभी नत्थी ने कहा, "ठाकुर साहब के इलीक्स

रक' जरूर था गजुआ, पर ये मतलब तो नहीं है कि वह मारपीट, गुन्डा-गर्दी करे···उसके गुण में ठाकुर साहब साथ हो सकते हैं, बदमासी में नहीं। उसने जो काम किया, गलत किया —यह तो कहना ही पड़ेगा।"

"वाह-वाह !···" एक महिला ने इतरा कर उत्तर दिया था, "एक बिना-मां-बाप के लड़के का सिर फोड़ दिया तुम्हारे आदमी ने···सब कहते हैं बिचारा एक बात नहीं बोला था उस बदमास से···फिर भी। किसके कारण ? ठाकुर साहब के कारण ना ?"

"यही तो मजा है रामदई काकी," किसी लड़के ने उत्तर दिया था, "जब गजुआ ने इनके लिए काम किया, इनके लिए सिर फोड़ा तब आज किनारा कर रहे हैं। गजुआ से भी किनारा कर रहे हैं···यही होती है नेतागीरी !···धन्न हो !"

अरजुन ठाकुर की हालत खराब हो ली थी—समझ लिया कि बाजी पलट गयी ! मन-ही-मन गजुआ को कोसते, बिलबिलाते घर लौटने को हुए थे। जाते-जाते कह आये थे, "अब आप लोग कुछ भी कहें भाई—मेरा वर्कर था—यह तो मैं मानता हूं, पर उसका कोई बुरा काम भी अपने माथे ले लूं, यह कैसे हो सकता है ?··"

बहरहाल उखड़ गया था सब ··ऐसे, जैसे बुनियाद ही नहीं थी। सुबह के आठ बजते-बजते बाजी और भी बदल गयी। सब जादोराम की वाह-वाह कर रहे थे। क्या आदमी है। इलेक्शन सिर पर था, फिर भी 'अपने आदमी' के साथ चला गया। इसे कहते हैं भलमनसी। धन्ना गाव लौट-कर खबर लाया था, "मास्टरजी, चार-छह दिन नहीं आ पायेंगे ··तब तलक, जब तलक कि उसको होस न आ जाये।"

यह खबर अरजुन ठाकुर को भी मिली। और परेशान हो उठा। गजुआ को इधर-उधर के गावों में तलाश करवाया—एक बार मिल जाये तो थाने में हाजिरी करवाकर बयान दिलवा दें कि मुन्ना को इलेक्शन के लिए नहीं, पुरानी दुश्मनी के कारण मारा था। आगे केस में भुगत लेंगे··· फिलहाल तो मामला सुलटे। पर समझ गये थे—गजुआ से भेंट के बिना

यह संभव न था।

और गजुआ इस तरह गायब हुआ था कि दूर-दूर गांवों में उसकी उपस्थिति तो दरकिनार, हवा तक नहीं थी।

दोपहर सिर पर चढ़ते-चढ़ते उत्तेजित वोटरों का गुस्सा भी सिर तक चला आया। लगने लगा जैसे जमानत जायेगी···जीतने का सवाल ही नहीं!

हार-खेतों से लेकर घर-गांव तक एक ही चर्चा फैल गयी थी—अर्जुन ने मास्टर का बढ़ता जोर देखकर मारपीट, गुन्डागर्दी का सहारा लेना शुरू कर दिया। बहुत बुरा हुआ···!

क्या ऐसे ही गुन्डे को गांव का नेता बनाया जायेगा ?···लोग सख्त नाराज़ हो गये। आज मुन्ना पर लाठी चलवायी है, कल सरेआम पूरे गांव पर चलवा देगा—बाद में कुर्सी भी उसके हाथ होगी—कोई क्या कर
गा उसका ? पैसे और लाठी का जोर ऐसा सिर चढ़कर बोला है कि
ज आदमी को आदमी ही नहीं गिन रहा···कल क्या होगा ?

सात

कल क्या होगा—शीशे की तरह साफ था !···सब स्पष्ट दीखता हुआ। मास्टर जादीराम गांव में नहीं होगा। इसके बावजूद उसका जुलूस निकलेगा। यही धन्ना और विलायती निकालेंगे···उसकी तसवीर को फूल-मालाएँ पहनायी जायेंगी और ठीक अरजुन की हवेली के सामने नारे लगेंगे, "मास्टरजी की···"

"जै हो !···"

सोच-सोच कर अरजुन ठाकुर का दिल बैठा जा रहा था। धन्ना को दो बार बुलावा भिजवा दिया था—अब तक नहीं आया। कहते हैं कि राजनीति में आदमी उस पतंग की तरह है, जिसको हवा का रुख बदलते ही मोड़ लेना पड़ता है। उस आदमी के हाथ में कुछ भी नहीं होता जो समझता है कि पतंग की डोर वह सम्हाले हुए है।

हवा का रुख बदल चुका है···शायद धन्ना भी कतरा रहा है। बहुत बुरा हुआ। निश्चय किया था कि स्वयं जाकर मिलेगा।

दरोगाजी की प्रतीक्षा थी। थोड़ी देर पहले खबर आयी थी—आ रहे है। सिपाही ने यह भी बतला दिया था कि क्यों आ रहे हैं। जिन लोगो ने मुन्नालाल पर हमले को लेकर बयान दिये थे, उन्होंने हर बार जिक्र यही किया था कि हमले का कारण केवल अरजुन ठाकुर हैं।

इसलिए अरजुन ठाकुर का बयान लेना भी जरूरी ——या था।

ार्रवाई में आदमी बिलकुल बेबस होता है। फिर पुलिसवाले तो
त होते हैं। जिस तरफ राजनीति की पतंग जाये, उन्हें वरवस ही
ड़ता है। सत्ता से स्वतंत्र अस्तित्व चाहें तो भी नहीं हो पाता ठीक
पतंग से पुंछल्ला कैसे स्वतंत्र हो सकता है। ठीक है कि पुछल्ला
महत्त्वपूर्ण अर्थ रखता है—पर टीका लिखकर ग्रंथ तो बनने से
पतंग अपने आप में एक ग्रंथ है, जबकि पुंछल्ला महज़···एक तरह
ीका।

अरजुन ठाकुर ने सारी खबर ले ली थी। कहा था, "ठीक है।
ोगाजी आयें—मैं इन्तज़ार करूंगा।" जाहिर था कि टीकाओं से ग्रंथ
हीं बनते, ग्रंथों से टीकाएँ बनती हैं।

इन्तज़ार चल रहा था। निगाह बार-बार उस रास्ते की ओर चली
जाती जिस रास्ते पर दरोगाजी एकाध कान्स्टेबिल को साथ लटकाये हुए
दीखेंगे···पर फिलहाल दूर तक नज़र नहीं आ रहे थे···

दरोगाजी आये—लगभग एक घन्टे बाद। शाम की चाय पीयेंगे।
वक्त गवाही दे रहा था। मन-ही-मन अरजुन ठाकुर भुनभुना कर रह गया
था—कितने वदमाश होते हैं स्साले! आने का ठीक वह वक्त चुना है
कि ठाकुर को चाय पिलानी पड़े। तिस पर ठाकुर ने देखा कि अकेले नहीं
आ रहे हैं—चार-पांच लोग साथ हैं। सब पुलिसिऐ।

अरजुन ठाकुर ने चबूतरे पर आकर स्वागत किया। धूप कमजोर
। गयी था। ऐसे जैसे कड़क-ताकत सहसा ही एक घटना ने लुजलुजी कर
डाली थी।

दरोगाजी मुसकराते हुए भीतर आये। आज अरजुन को उनकी मुस-
कराहट में भी कलफ-जैसी अकड़ नज़र आयी। कुल व्यवहार ऐसे लगा
जैसे पहली बार इस चौखट पर आये हों। कारण?···जाहिर था कि राज-
नीतिक पतंग रुख बदल गयी—पुंछल्ले भी उसी के साथ चले गये···
वही दिशा, वही रुख···यह भी सहा। सहना होगा। नकछेदीलाल एम०
एल० ए० का पालिटिकल उत्कर्ष देखा है। जानता था कि पालिटिक्स

आदमी को गधे की दुलत्ती भी इस मुसकान के साथ सहनी होती है जैसे अभिनन्दन हुआ हो। तब बात बनती है। राजनीतिक पतंगों के रुख की बात है, सो विपरीत हवा में भी ठुमके देते रहना चाहिए—एक आशा और विश्वास होना चाहिए मन में। किसी पल तो स्साला रुख बदलेगा··· और जब बदल जायेगा तब देखेंगे!

नकछेदी का यह अनुभव, उत्कर्ष-रहस्य ही अरजुन के काम आ रहा था। दरोगाजी के व्यवहार की दुलत्ती सह गया।

दरोगाजी ने दीवान को संकेत किया। उसने पैंड, कागज, कलम निकाल लिये। दरोगाजी ने कहा, "आपको तो मालूम ही होगा ठाकुरसाहब कि मुझे किसलिए आना पड़ा?"

अरजुन ने महसूस किया कि तमाचा पड़ा है, पर झेला गया। शब्दों से गाल सहलाते हुए उत्तर दिया, "मुझे ही क्या—सारे गांव को मालूम है। गजुआ ने ऐसा दुष्कर्म किया है कि खमयाजा मुझे भुगतना पड़ेगा!"

दरोगाजी मुसकराया। एक गहरी सांस ली। कहा, "ठाकुर साहब! ये पालिटिक्स बुरी चीज है···कालिज में यूनियनबाजी मैंने भी खूब की। वहां वाइस प्रेसिडेन्ट था मैं—कालिज का। पर उस कारोबार में वह-वह टंटे आते थे कि दिल उचाट हो गया। वरना आज मैं भी कुछ नहीं तो कम-से कम डिप्टी मिनिस्टर तो हो गया होता·· केरियर शुरू हो गया था, पर दिल नहीं माना। सोचा कि इस झूठ-फरेब के धन्धे से परे रहना ही ठीक रहेगा।"

"आपने बहुत अच्छा किया। बहुत अच्छा किया·· वरना दीन-दुनिया के नहीं रहते, भईया।" अरजुन ठाकुर ने जवाब दिया, "अब मुझी को लो·· क्या मतलब है ये गजुआ-मुन्ना केस का·· स्सालों की पुरानी दुश्मनी थी और जवाबदेह मैं हो गया [illegible]। बतलाओ, मैं अहिंसा का मानने-वाला, गांधीजी का आदमी···क्या मतलब मेरा इस मारपिटाई, बदमाशों से···?"

"गजुआ और मुन्ना की पुरानी दुश्मनी थी"

"हां, भाई !···" अरजुन ठाकुर ने जवाब दिया।

"पर···पर यह तो किसी ने वतलाया नहीं।" दरोगा ने हैरान होकर उत्तर दिया। फिर दीवान की ओर देखा। वोला, "नोट करते चलो मुवारिकसिंह !···ये तो 'की-प्वाइंट' है।"

"कौन जानता था···" अफसोस भरे स्वर में अरजुन कहे गया..., उसने गहरी-वेदनाभरी सांस ली।

"पर दुश्मनी किस मामले में हो सकती थी उनमें ?" दरोगाजी का प्रश्न था।

"आप तो पुलिसवाले हैं। जरा सोचिए, दुश्मनी किस कारण होती है···?" सरपंच ने उलट सवाल किया .

"जर, जोरु और जमीन···!" दरोगाजी ने दनाक् से कहा, "और तो दुनियां में कोई वजह बुनियादी नहीं है। पुलिस ऐक्ट और सारी कार-वाई की बुनियाद ही ये तीन प्वाइन्ट होते हैं।"

"तो वस !" अरजुन वोला, "इन्हीं में से कोई कारण रहा होगा।"

"जब आपको दुश्मनी की वात मालूम है, तो यह नहीं हो सकता कि आपको जड़ मालूम न हो !" दरोगा ने कहा, "वताइऐ, आपके वयान में मजबूती आ जायेगी। वल्कि मैं तो कहता हूं —आप इसी वात को प्वाइन्ट वनाकर पूरी फिजा वदल दीजिए। वाजी फिर आपकी तरफ रहेगी···"

"सोच तो रहा हूं पर दिल नहीं मानता, "अरजुन ने कहा।

"भला आपको क्या लेना-देना दोनों से ?···आप क्यों वीच में पिसें ?"

"यह भी सोचता हूं, पर उस लड़की का खयाल आता है···विचारी वदनाम हो लेगी।" अरजुन ने मुंह विगाड़ लिया, "कन्या की जात··· काम तो उसने वुरा किया है, पर मनुष्य स्वभाव है। गांधीजा को मानता हूं—-इसी कारण मेरी आत्मा तैयार नहीं हो रही है।"

"पर गांधीजी ने यह भी तो कहा था कि सत्य वोलना आवश्यक है।"

दरोगाजी ने सुझाया, "सत्य के लिए यह परवाह करना गलत है कि किसका भला होगा किसका बुरा होगा···आप तो सिर्फ सत्य बोलते जाइए। वही आपका ईश्वर है। और आत्मा भी एक तरह से ईश्वर ही होती है, इस तरह सोचोगे तो दन् से मान जायेगी।"

भूतपूर्व सरपंच एक क्षण चुप रहे फिर कहा, "आप कहते हैं तो ठीक है। ले लीजिए बयान। पूरा मामला ही बतलाये देता हू।"

दीवानजी ने सिलसिले से कागज सम्हाला। बयान दर्ज करने की मुद्रा मे मुबारिकसिंह बैठ गया। अरजुन ठाकुर ने भीतर खबर भिजवायी, "जरा आठ-दस प्याले चाय भिजवाए···साहब लोग आये हैं।" फिर उसने कहा, "लिखिए, साहब···मैं अरजुनसिंह, वल्द दुरजोधनसिंह जात-छतरिय-हिन्दू···साकिन गौसपुरा···

1150

□□

धोता लड़का दौड़-दौड़ा धन्ना के पास पहुचा। जो सुना था, उससे मन में घिन हो आयी थी। छि. छिः।···यह अरजुन ठाकुर तो बड़ा कमीन आदमी है।···एक जवान औरत की जिन्दगी अकारथ ही नाली मे डाल दी?···सब कुछ धन्ना को बतलाना होगा। धन्ना और विलायत-खान रास्ते मे ही मिल गये। विलायती के चबूतरे पर बैंड-बाजों की सफाई कर रहे थे लोग·· धन्ना वही आ बैठा था। लड़का वहीं पहुचा। दोनों बात बन्द करके उसका मुह देखने लगे।

"अबे, गयासिया! बडा परेशान लगता है। अब किसका सिर फूटा?" धन्ना ने सवाल किया।

गयासिया ने कहा, "जरा भीतर आ जाओ, धन्ना भईया···सुनाता हू।"

धन्ना भीतर पहुचा। गयासिया ने फुसफुसाकर कहा, "मुन्नालार पर हमने की बात को ठाकुर ने दूसरा ही रंग दे दिया है। कहा है कि सकुन की आस नाई के चक्कर में मुन्ना और गजुआ का झगड़ा हुं

गा—इस मामले पर दुश्मनी पहले से चल रही थी !"

धन्ना सारे कांड से दुखी पहले ही था—इस खबर ने एकदम सुलगा दिया। इतना नीच आदमी है ठाकुर? राम-राम ! घृणा और विरक्ति से दिल भर आया उसका।

ग्यासिया ने अगली सूचना दी थी, "इस बात की गवाही नत्थी ग्राम-सेवक और गदाधर पटवारी ने दी है।"

जी उबल आया।···अभी और कुछ सोचे या कहे, इसके पूर्व ही बाहर से कुछ आवाजें उभरने लगी थीं। अरजुन की आवाज वह साफ-साफ सुन पा रहा था। चबूतरे पर विलायत सेबात हो रही है। विलायत पूछ रहा था, "इस वखत किधर चल दिये होने वाले पंचजी ?"

"धन्ना के यहां तक जा रहा हूं, भाई···दो बार बुलवाया था उसे। ‥ना नहीं, किस काम में फंसा है···टैम नहीं निकाल पाया आने का। इसीलिए सोचा कि खुद मिल आऊं···"

"धन्ना तो यहीं है !" विलायत ने बतला दिया था, फिर पुकार भीतर फेंकी थी, "धन्ना !···अरे यार ठाकुर आए हैं—बाहर तो निकल !"

और दिल न होते हुए भी धन्ना बाहर निकल आया था। अनच ही हाथ जोड़ कर राम-राम की थी। अर जुन ठाकुर चबूतरे पर ही रहा। हंसते हुए पूछा, "किस चक्कर में उलझ गये थे धन्नालाल ?"

"काम लग गया था।" धन्ना ने उदासीनता से उत्तर वि निश्चय कर लिया था कि मुंहफट ढंग से जवाब देगा। इस तरह कि से बातचीत ही बन्द हो जाये। स्वार्थ के लिए आदमी इस कदर गिर है कि एक निर्दोष कुंवारी कन्या पर कीचड़ उछाले ?···धन्ना आदमी का साथ देकर न केवल मित्रों से विश्वासघात किया, ब किया। उससे मुक्ति कठिन।

"इन दिनों देश के काम से बडा काम भी है कोई ?···चुना है।" अरजुन बोला, "तुम जैसे सामाजिक 'कारकरता' अगर

बढ़ेंगे, तो फिर कौन सम्हालेगा यह सब?...तुम्हारी असली उपजोगिता तो इसी समय है भईया !"

मुस्कराता हुआ विलायती कभी धन्ना को देखता, कभी अरजुन ठाकुर को—किस कदर प्रपंच की बातें करते हैं लोग। दोनों एक-दूसरे के सामने नंगे हैं। पर बतिया ऐसे रहे हैं, जैसे सारे जमाने की मर्यादा का ठेका इन्हीं दोनों ने ले रखा हो। इससे बढ़िया आनंद तो फिल्म में भी नहीं आता। स्टेज के नाटक में वह रस कहां, जो जीवन के नाटक में है... और इस समय गांव का सबसे बड़ा अभिनेता मौजूद है—ठाकुर अरजुन सिंह। विलायती को याद आया—किसी ने कहा था कि नेता से बड़ा अभिनेता कोई नहीं होता—आंख से देख रहा है और मन से भोग रहा है।

धन्ना ने उत्तर दिया,"अब मैंने निश्चित किया है पटेल जी ! आगे से समाज के कारज बन्द।...अब जो कुछ करूंगा अपने लिए करूंगा। जब बेईमान और बदमाशी दूसरों के लिए करना ही हमारे भाग में लिखा है, तो अपने स्वारथ के लिए क्यों न करें ? हमारी तरफ से मां-बाप, बहिन, देश सब भाड़ में जाये।...अपने को बचाने के लिए बेटी के बदन से कपड़े उतारते भी लाज नहीं लायेंगे—अब से यही हमारा धर्म रहेगा, यही रहेगी देश भक्ति !"

ग्यासिया बाहर नहीं आया था। धन्ना ही भीतर खींच लाया था उसे। यह कहकर कि यहीं से सुनना—उस पाजी के किस तरह कपड़े उतारता हूं ! गुन्डा कहीं का !!

और भीतर खड़े ग्यासिया को लगा था कि धन्ना ने अपना कहा पूरा करना शुरू कर दिया है। मन में भय भी जागा, आनन्द भी महसूस हुआ।

अरजुन ठाकुर धन्ना की बदली आवाज, बदले रुख और बदले शब्द से कुछ-कुछ सिटपिटा-सा गया। जो हुआ कि भाग खड़ा हो। गरमी बतला रही है कि पीछे दूर कहीं लावा उबल रहा है...अभी गरमी आयी है

ावा आ गिरेगा। किन्तु राजनीति में सिखाया गया है कि जव
र थूका जाये तो एकदम मत भागो—पोंछने की कोशिश करते हुए
ी दयानतदारी और अहिंसा को जतलाते रहो थूकने वाले ही लज्जित
लगते हैं कि किस पर थूका, जिस पर असर ही नहीं हो रहा। यही
चकर जमा रहा। पूछा, "क्या वात है वावू धन्नालाल, तुम्हारा मूड
स टैम वहुत खराव दीख रहा है?"

"मूड खराव नहीं है साहव, आपकी राजनीति से खराव हो गया है,"
धन्ना ने तय किया कि कह डालेगा। विलायती भी सुनले, और सव
भी···ठाकुर कितना नीच है—यह पूरी तरह जाहिर हो जाये। समझ
सकता था कि इस हरकत को कोई पसन्द नहीं करेगा। सकुन के प्रति
सिर्फ इज्जत ही नहीं, गांववालों में सहानुभूति भी है। उसे व्यर्थ वदनाम
करके अपने को वचाने का षड़यंत्र इसी समय उजागर हो जाना आवश्यक
लगा धन्ना को। कह डाला, "सकुन को लेकर आपने पुलिस में क्या वयान
दिया है हजूर? ज़रा हम भी तो सुनें ?"

विलायती और इधर-उधर वैठे कई लोग चौंककर धन्ना का मुंह
देखने लगे। ये सकुन वातचीत में कहां से समा गयी ?···फिर पुलिस में
वयान, वह भी सकुन को लेकर !··· वेचैन होने की वात थी।

अरजुन ठाकुर सिटपिटा गया। वड़ी हड़वड़ी में उस समय वचाव
का रास्ता निकाला था। उसी हड़वड़ी में पुलिस के कागजों में वया
ठोक दिया था। गवाही करवा दी थी। पर उस वयान का कुछ औ
असर भी हो सकता है—इस ओर सोचने का अवसर ही नहीं मिला थ
कुछ परेशान होकर कहा, "वयान ?···क्या ?"

"वयान आप देंगे और वताऊंगा मैं ?" धन्ना ने तिलमिलाकर

"वाह-वाह साहव ! खूव कहा आपने !"

अरजुन ने कठिनाई से अपना विखराव वटोरा। वोला, "तुम
गजुआ और मुन्ना को लेकर हुई गड़वड़ की वात कर रहे हो ?"

"वह वात तो अलग ही है। पर सुना है कि आपने जोड़ दी

धन्ना ने कहा, "फिर अगर जोड़ी ही है तो वह भी चार लोग सुनलें— किस तरह जोडी है ?"

"जोडी नहीं है,धन्ना ! जुड़ी हुई है।" अरजुन ठाकुर ने निश्चय कर लिया था कि अब बरस पड़ेगा अपनी पूरी सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और संतागत शक्ति के साथ बरस पड़ेगा। इस तरह कि झूठ भी सच हो जाए। इतनी बार वही सब,इतनी जगह कहेगा कि झूठ भी सच हो ले ! गोयबल्स कहता था कि एक झूठ अगर हजार बार बोला जाए तो सच मे बदल जाता है। यही कुछ 'फिलासफी' काम मे लेगा वह। कहा, "सुनना है तो सुनलो। तुम लोग शायद जानते नही कि मुन्ना और गजुआ मे झपट का कारण यह चुनाव या मैं नही हू, बल्कि असली कारण है सकुन।"

"सकुन ··?" विलायतखान ने हैरत से पूछा।

"हा।" अरजुन ने उत्तर दिया, "गजुआ है ठाकुर···जात-पात माननेवाला आदमी। सकुन ठाकुर की बेटी · मुन्ना पढ-लिख गया, पर जात तो मिट नही सकती ? पुराने खयालवाले नयी बातो को मानते नही है। सकुन और मुन्ना का चक्कर चल रहा था। गजुआ भी एक उम्मीदवार था। यही बात हुई कि मुन्ना और गजुआ मे गाठ पड गयी—उस दिन जो मारपीट हुई है, उसका कारण चुनाव नही है। कारण है— आसनाई। चुनाव तो बहाना बन गया, भईया !···असल बात···"

"अरे नही-नही, ठाकुर साहब ! क्या बात करते है ?" विलायतखान ने कहा, "सकुन को बचपन से जानते है हम लोग। गाव के हर घर की उडती चिडिया और हर पछी के पाव मेरे देखे हुए हैं···सकुन उस तरह की लडकी ही नही है और मुन्ना चाहे जो करे···पर यह सच डके की चोट बोला जा सकता है कि वह उस तरह का ओछा इन्सान नही है !"

"पर दूसरे तो ओछे इन्सान हो सकते है विलायतखान !" धन्ना ने बीच में ही कहा। घृणा से ठाकुर अरजुनसिह को देखता हुआ बोला, "मुन्ना ओछा हो न हो, हमारे ठाकुर साहब तो ओछे हो ही सकते हैं !"

"धन्ना !" अरजुन गरजा, "जवान सम्हालकर बात कर ! दो टके
आदमी—स्साला ! अगर बहुत दिमाग चढ़ गये हैं तो याद रखना ।
ल के बाद बिलकुल ठंडा कर दूंगा—वरफ !...जिन्दगी भर गरमी
दा नहीं होगी ।"

"मेरी जवान सम्हली हुई है ठाकुर ! और सारा हिसाव लगाकर
वोल रहा हूं ।" धन्ना ने भी सीना फुलाकर जवाव दिया, "जानता हूं कि
तू क्या कर सकता है ? चुनाव हो लेगा तो इस गांव से मुझे निकलवा
देगा । दस लोग मेरे दुश्मन हो जायेंगे पर याद रख, उस गरीवनी अनाथ
लड़की पर तूने जो लांछन लगाया है—तुझे भगवान उससे माफ नहीं
करेगा ! तू यहां तो जीत लेगा, पर तुझे ऊपर हिसाव जरूर देना
पड़ेगा । वहां स्टंटवाजी काम नहीं देगी !..."

अरजुन ठाकुर ने जवड़े भींच लिये । उत्तेजना में खड़ा हो गया पल
भर में आते-जाते लोगों की भीड़ खड़ी हो गयी । अरजुन एकदम परेशान
हो गया था इस स्थिति से । कुछ कह सके, तभी विलायती ने कहा,
"ठाकुर साहव ! राजनीति हो—इसमें बुरा नहीं है । पर राजनीति किसी
अनाथ, वेसहारा लड़की की आवरू पर वोट वसूलने लगे—यह तो नाइंसा-
फी है मालिक !...यह वात मुझे भी अच्छी नहीं लगी ।"

"तुम कुछ नहीं जानते विलायती । सच वात न ही धन्ना को प
है..." अरजुन ने लगभग मिमियाकर फिर अपनी वात दोहरानी चाहि
पर धन्ना विगड़ता ही चला गया, "अरे जा !...यह सच जानेगा ।
गुन्डे इकट्ठा करके दारू पिलाने वाला आदमी हमारा नेता, हमारा
...धरमराजवन रहा है...हमें सच जानना होगा तो हम खुद जान
तेरी जरूरत नहीं है ।" धन्ना आवेश में चवूतरे से नीचे उतर आय
उसका पूरा शरीर क्रोध के कारण कांप रहा था । चेहरे का सां
हल्की ललामी में वदल गया था । जाहिर था कि आवेश के कारण
वदन में एक सनसनाहट रेंग रही है...

विलायतखान ने उसे थाम लिया, फिर हाथ जोड़कर सरपं

"आप इस वखत यहां से जाइए, हुजूर !···" फिर भीड़ में जुट आये ग्रामीणों की ओर मुड़कर कहा, "ठाकुर साहब भी इस वखत गुस्से में है, ले जाओ भाई।"

लोग समझा-बुझाकर दोनों को परे करने लगे। थोड़ी देर बाद अरजुन ठाकुर बिफरता, गरजता, लोगों से धकियाता हुआ अपने घर की ओर वापस हुआ।

इधर विलायती बिगड़ रहा था, "सबर से काम लेना चाहिए धन्ना ! देखना चाहिए कि दो तोले की जबान से कितने मन का पत्थर गिर रहा है···आखिर ठाकुर वजनदार आदमी है। हम हैं गरीब लोग। बात कहने से पहले···"

"और उस कुत्ते ने नहीं सोचा कि वह क्या कह रहा है ? धन्ना बिगड़ा, "वह बेचारी धरम-करम और इज्जत से जिन्दगी पाल रही है। ये हरामी उसकी इज्जत से राजनीति करते हैं ? गरीब हैं हम लोग तो क्या कोई ईमान-धरम नहीं है ?"

"पर धन्ना···सब जानते हैं कि सकुन किस तरह की लड़की है। इस कुत्ते के भौंकने से क्या होगा···"

"अरे होगा कैसे नहीं !" धन्ना ने बिगड़कर विलायती की पकड़ से हाथ छुड़ा लिया था, इन पैसेवालों के सामने सारे ईमान-धरम पानी भरते हैं। जिस ईमान-धरम की लुटिया लेकर हम लोग उस गरीब इन्सान के पास गये थे···आज उसका क्या हाल हो रहा है—देख नहीं रहे हो ? हमारा ईमान-धरम भी दो-दो कौड़ी में बिक गया !···"

"देर आयद, दुरुस्त आयद यार !" विलायतखान ने अफसोस भरे स्वर में उत्तर दिया था, "गलती तो हमसे हुई, पर आगे के लिए सबक मिल गया है···"

"आगे के लिए क्यों, इसी बार के लिए क्यों नहीं !" चिहुककर धन्ना ने कहा था, "अगर इसने सकुन को लेकर ऐसी-वैसी बात की तो चाहे जितना अमीर हो साला···इसकी जबान खींच निकालूंगा ! समझा क्या

है इसने ? 'गरीब की लुगाई, सब गांव की भौजाई वाले ज़माने लद गये !'
...ऐसे नहीं चलेगा !"

धन्ना की सांस जोर-जोर से चल आयी थी। विलायतखान और उसके गिर्द गांव के कुछ स्त्री-पुरुष जमा थे। सभी ठाकुर अरजुन की हरकत पर थू-थू कर रहे थे। शाम गहरी होने लगी थी।

सकुन के प्रति इस तरह का आरोप सहन कर पाना—सकुन से ज्यादा और लोगों के लिए कठिन हो गया था...

पर अरजुन ठाकुर की प्रचार-शक्ति और घटनाएं बुनने कि कथा-कला का भी जवाब नहीं।

वह-वह कहानियां रात होते-होते आसमान पर बिखरीं कि गांव दो हिस्सों में बंट गया।

आठ

सुबह-सवेरे धन्ना ने विलायती को जगाया था... अलसाता हुआ विलायती बाहर आया। नहाया-धोया धन्ना सामने खड़ा था। विलायती ने आश्चर्य से पूछा था, "अरे, तू इत्ते सुबेरे तैयार होकर आ गया?... कहां जा रहा है?"

"आज वोट गिरेंगे ना?" धन्ना ने जवाब दिया था, "तू भी तैयार हो जा! चलना नही है?"

"कहा?"

"गढ़ी में।" धन्ना ने बीड़ी सुलगायी। कलफ लगे कपड़े पहन रखे थे उसने। खादी की धोती और कुरता।

विलायती उसके कपड़ों और बनाव-सिंगार को घूरता रहा, फिर पूछा, "गढ़ी में क्या करेंगे?"

"पेटियों पर रहेंगे।" धन्ना ने उत्तर दिया।

"किसकी पेटी पर?" विलायती हंसा, "कल तय किया कि अरजुन का साथ देना नही है और मास्टरजी की तरफ से पहले ही धकियाये जा चुके हैं—अब हम लोगों के लिए ठौर कहा रहा?"

धन्ना ने बड़े विश्वास से उत्तर दिया था, "ठौर क्यो नही है। गलती हुई थी—सुधार लेंगे। मास्टरजी मुन्ना के पास अस्पताल में हैं। हम यहाँ उनकी पेटी पर रहेंगे। इस वखत यही हमारा धरम है। मास्टरजी धकि-

…ी तो इस बार नहीं जाना है।"

…विलायती ने एक पल सोचा—सहसा उसके भीतर भी जैसे एक महक …र गयी। कहा, "तो तू पांच मिनट रुक, मैं तैयार होता हूं।" कह वह लोटा लिये हुए बाहर निकल गया।

धन्ना आधा घन्टे चबूतरे पर बैठा रहा था⋯विलायती नहा-धोकर …हर से लौटा। तुरत-फुरत कपड़े बदले। कहा, "चल्!⋯"

दोनों गढ़ी की ओर चले।

गढ़ी बहुत पुरानी। गौसपुरा के जमींदार की गढ़ी। कभी राजपूती ज़माने में बनी थी। पंचायत का दफ्तर और स्कूल इसी गढ़ी के भीतर थे। कुछ हिस्सा उजाड़-वियावान पड़ा था। जिन हिस्सों की हालत ठीक थी, उन्हें थोड़ा-बहुत सुधरवाकर स्कूल और पंचायत भवन के रूप में उप-योग किया जा रहा था। एक कमरा हमेशा खाली रहता था। कभी-कभार जब तहसीलदार, नायब वगैरा आ पहुंचते तो इस कमरे में उनकी बैठक होती थी। ज्यादातर ठाकुर अरजुनसिंह की हवेली पर ही ठहरते थे।

गढ़ी के सामने भीड़ थी। एक सरकारी अफसर आये थे—दो …स्टर। ये सब चुनाव चलायेंगे।

जीप से पेटी उतारकर उस बैठक में रखी गयीं। एक पर लालटेन …ा निशान, दूसरे पर ठाकुर अरजुनसिंह का घोड़ा।

इन दोनों में ही गांव के लिये कई साल का प्रशासन बन्द हो जायेगा —फिर पेटियां खुलेंगीं, वोट गिने जायेंगे। आखीर में विजयी का नाम घोषित होगा। इस बात की सारी मारामारी।

मतदाता ग्रामीण धीमे-धीमे एकत्र होने शुरू हुए। ठाकुर अरजुनसि… और उसके चार-छह लोग पहले से ही मौजूद थे। धन्ना और विला… खान भी जा पहुंचे। अरजुन और उसके आदमियों के बीच दृष्टि… उनके प्रति कुछ कटु-अभिव्यक्तियों का आदान-प्रदान हुआ। अन्त में … से आये अधिकारी ने इर्द-गिर्द खड़े लोगों से सवाल किया, "अरजु… की तरफ से कौन लोग रहेंगे?"

दो व्यक्ति बढ़ आये। एक पटवारी गदाधर, दूसरा नत्थीलाल ग्रामसेवक।

दोनों व्यक्तियों के रजिस्टर पर हस्ताक्षर लिये गये। अरजुन ठाकुर एक ओर पड़ी पुरानी कुरसी में धंस गया। मतदाता गढ़ी के आंगन में यहां-वहां पेड़ों की छांह में एकत्र हो रहे थे। तहसील के एक-दो आदमी और थाने के चार सिपाही भी कभी भीतर और कभी बाहर राउण्ड ले जाते।

"मास्टर जादौराम के लोग ?···" अधिकारी का सवाल हुआ।

अरजुनसिंह ने कहा "वह खुद भी ऐब्सेंट है और शायद उनका कोई आदमी भी नहीं है···"

"हैं क्यों नहीं ?" पन्ना आगे बढ़ आया, "मैं हूं और यह है विलायत-खान—वैद्य मास्टर !"

अरजुन हैरान हुआ। इसका मतलब है कि बिलकुल ही बदल गये दोनों···? अधिकारी ने उन दोनों के रजिस्टर पर हस्ताक्षर लिये।

पेटियां कमरे में पहुंच चुकी थीं। अधिकारी उस कमरे की व्यवस्था देखने गया।

दो सिपाही आ पहुंचे थे। अधिकारी ने लौटकर दोनों उम्मीदवारों के दोनों आदमियों से कहा, "आप लोग पेटियां देख लीजिए—आइए।"

पांचों भीतर गये। थोड़ी देर बाद सन्तुष्ट होकर लौटे।

अधिकारी ने कुरसी में धंसते हुए कहा, "अब शुरू करवाता हूं··· पांच मिनट और हैं। ठीक नौ बजे से मतदान होना है।"

कोई कुछ नहीं बोला। अरजुन ठाकुर ने अपनी कलाई घड़ी देखी।

अधिकारी दोनों कान्स्टेबिलों की ओर मुड़ा, "आप लोग 'क्यू' लग-वाइए···एक आदमी इस कमरे के बाहर रहना चाहिए।"

अधिकारी की इच्छा-आदेश अनुसार व्यवस्था हुई।

नौ बजते ही मतदान प्रारंभ हो गया।

□

ठीक नौ बजे डाक्टर ने कहा था, "अब आप बयान ले सकते हैं !"

दरोगाजी अन्दर पहुंचे। लगातार दो दिनों से बयान लेने की कोशिश कर रहे थे, पर मुन्ना की हालत काबू में नहीं थी। डाक्टरों ने इनकार कर रखा था। अब इजाज़त मिली।

मास्टर जादीराम उन्हें देखते ही एक ओर खड़े हो गये। मुन्ना का सूखा चेहरा उस पेड़ की तरह गिरा पड़ा था, जिसे न सिर्फ पतझड़ की मार झेलनी पड़ी हो, बल्कि किसी ताकतवर आंधी के झोंके ने धरती पर गिरा भी दिया हो।

दरोगाजी ने मुस्कराते हुए स्टूल खींचा, करीब बैठ गये। दीवान मुबारिकसिंह कागज़-क़लम सम्हालकर एक ओर खड़ा हो रहा। दरोगाजी ने पहले कुशल-क्षेम की चार बातें पूछीं, फिर मृदु स्वर में सवाल किया 'आपमें और गजुआ में किस घटना के बाद कहा-सुनी हुई ?"

"घटना ?" आश्चर्य से मुन्ना ने कहा, "घटना कैसी ?"

दरोगा ने एक बार सहम के साथ मास्टर जादीराम को देखा जो खिड़की के करीब चुपचाप खड़े हुए थे। चेहरे पर उदासी थी। इस उदासी नें बुढ़ापे को ज्यादा ही उभार दिया था। दरोगा ने अन्त में बात किनारे पहुंचाया, "मुझे सारा केस मालूम हो चुका है मुन्नालालजी। भी मालूम हो चुका है कि इसके पीछे हम लोगों के समाज में फैला ज वाद है, जो इन्सान-इन्सान में फर्क करना सिखाता है। गजुआ को रात हमने मुकुन्दपुर से गिरफ्तार कर लिया है। बयान उसका भी हो बस आपकी तरफ से पूरा मामला लिखा-पढ़ी में आते ही देखिए क्या हाल करता हूं। बेटे को कम-से-कम दो साल सेंट्रल जेल न तो अपना नाम खुशवन्तप्रसाद सकसेना नहीं रहने दूंगा !"

"गजुआ को बन्द कर लिया आपने ?" मुन्ना ने पूछा। हल्की-सी कराह मिली हुई थी।

"जी हां। और आप को जानकर खुशी होगी कि हम उससे सारी बातें कबुलवा भी लेंगे।" दरोगा बोला, "पुलिस के पास इतने फार्मूले होते हैं कि मरीज की आंतों में हाथ डालकर सचाई को निकाल बाहर करें ''अभी तो डन्डा घुमाया नहीं है साब। आपका बयान मिल जाये, फिर देखियेगा करिश्मा'''" दरोगा एक पल रुका, कहा, "हां, तो''' जरा बोलिए—मामले की शुरुआत किस तरह हुई।"

"न तो मामला शुरू हुआ साहब, न खत्म हुआ'''" मुन्ना ने कहा, "आपको यह किसने बतलाया कि मुझ पर गजुआ ने हमला किया है?"

दरोगा परेशान हुआ। कुछ अस्त-व्यस्त होकर सवाल किया, "मैं समझा नहीं, आप क्या कहना चाहते हैं?"

"मेरा मतलब है कि गजुआ ने मुझ पर कातिलाना हमला किया —यह आपको किसने कहा है?" मुन्ना पूछ रहा था।

"सब कह रहे हैं'''और अरजुन ठाकुर ने तो यहां तक जानकारी दे दी है कि यह सब सकुन के कारण हुआ। गजुआ भी सकुन को चाहता था, आप भी'''जाहिर है कि एक म्यान में दो तलवारों वाला मामला बन गया। गजुआ ने गुन्डागर्दी की। उसको तो यह सजा मिलेगी कि उसकी तीन पुश्तें याद रखें। अगर बदमाशों को सजा ही न मिले तो हम लोग किसलिए वरदी पहने बैठे हैं?"

"पर गजुआ ने मुझ पर हमला किया ही नहीं है जनाब!" मुन्ना ने कहा।

"यह आप क्या कहते हैं?" दरोगा को झटका लगा।

"जी हां—मेरा बयान यही है।" मुन्ना के सूखे चेहरे पर भी चमक पैदा हो गयी थी, "उसे आप फौरन छुड़वा दीजिए। वह तो वहां था ही नहीं। जिस आदमी ने मुझपर हमला किया, उसे मैं जानता नहीं हूं। वह कोई नशेबाज था'''गजुआ नहीं था'''गजुआ तो बिल्कुल नहीं था!"

"आपको ठीक तरह याद है?" दरोगाजी गंभीर हो गये थे।

"एकदम ठीक तरह। गजुआ और मैं एक ही गांव के हैं। वह भी यहीं

दा हुआ है, मैं भी—मैं गजुआ को नहीं पहचानूंगा ?" मुन्ना ने वह
ाढ्यांपन से कहा।

"इसका मतलब है कि···लोग झूठ बोले हैं।"

"जरूर बोले होंगे, जब मैं जिसे खुद चोट पहुंची है, उसका नाम
नहीं ले रहा हूं—वो कहने वाले को क्या मतलब ?"

दरोगा जी ने निराश होकर दीवान मुबारिकसिंह की ओर देखा।
वह रुंआसा दीख रहा था।

"ठीक है—तब आप यही बयान नोट करवा दीजिए।"

"कर लीजिए।" मुन्ना ने कहा और मुबारिकसिंह ने बयान नोट
किया। दरोगाजी ने मुन्ना के हस्ताक्षर लिये। गवाही में जादौराम के
हस्ताक्षर लिये गये। अन्त में निराश भाव से उठते हुए दरोगाजी ने कहा
था, "ठीक है मुन्ना बाबू, आपने बदमाश को बचा तो लिया है, पर
भूलियेगा—नहीं सांप पर रहम करने वाले मूर्ख होते हैं। सांप का
स्वभाव नहीं बदलता।"

मुन्ना पुनः मुस्कराया था, "यह क्यों भूलते हैं दरोगाजी कि गजुआ
इन्सान है—सांप नहीं है। उसे बार-बार सांप कहकर दुत्कारियेगा,
एक दिन सांप जरूर बन जायेगा।"

"चलो, मुबारिकसिंह ···!" दरोगाजी विदा हो गये।

□ □

कान्स्टेबिल ताला खोलने लगा।

गजुआ के चेहरे पर रिरियाहट-सी तिर आयी। अच्छ
जानता था पुलिस के सारे फ़ार्मूले। अब फार्मूलों का उपयोग
और उस उपयोग के बाद भी गजुआ उसी झूठ पर कायम रहे
पहले था कि उसने हमला नहीं किया—कठिन बात थी। गजुअ
में भय की झुरझुरी बिखर गयी थी।

कान्स्टेबिल ने दरवाजा खोला और कहा, "बाहर निकल

सिटपिटाया-हुआ-सा गजुआ बाहर निकल गया। उसे खीझ आ रही थी ठाकुर अरजुनसिंह पर। गजुआ ने न जाने उसके लिए कितनों के सिर फाड़े हैं, किन-किन के बच्चे रुलाये हैं, किस-किस को जान लेवा धमकियां दी हैं, और अब उसकी परछायी का भी ठिकाना नहीं है। सोचता था कि अपने आदमी की मदद करेगा। तन-मन-धन, वैसे ही लगा देगा, जैसे गजुआ लगाता रहा है—पर कुछ घन्टे में ही समझ गया है कि गलतफहमी थी। साफ हो गयी। चुनाव हो जाने के बाद कौन किसे पूछता है? वही हाल गजुआ का हुआ है।

गजुआ को अनायास ही इस खयाल के साथ अपने आप पर खीझ हो आयी थी। किसलिए वह इस तरह के लोगों का साथ थामे रहा? क्या सिर्फ रोटी के कुछ टुकड़ों और शराब के दौरों के लिए···? किसलिए उसने अनाथ मुन्नालाल के सिर पर लाठी घुमादी? जादोराम के विरोध के लिए··· ? या मुन्ना द्वारा गजुआ का अपमान किये जाने पर? या सिर्फ अरजुन के प्रति अपने आपको वफादार सिद्ध करने के लिए?

उस आदमी के प्रति वफादारी—जो न अपने आदमियों के लिए वफादार है, न अपने गांव के लिए वफादार है, न अपने काम के लिए···?

गजुआ ने बहुत बुरा किया!

गजुआ बेबसी से सीखचोंवाले कमरे मे यहा-वहां नजर दौड़ाता रहा। क्या इसका दंड सिर्फ इतना ही है कि गजुआ महीने-दो महीने की जेल काटे···?

शायद नही। असली दंड तो गजुआ भुगत रहा है। आत्मा से मिलनेवाला दंड। यह पछतावा और अहसास कि गजुआ ने एक बुरा काम किया। एक निहत्थे गरीब आदमी के सिर पर लाठियां बरसायीं।

दरोगाजी ने जब पूछा, तब गजुआ बदल गया था। बोला था, "नही सरकार! मैं तो बिरादरी मे आया हुआ था··· भला मेरी और मुन्ना की क्या दुश्मनी है कि मारपीट करूंगा?"

दरोगा ने दनादन् दो-तीन थप्पड गजुआ के मुह पर जमा दिये.

"हरामज़ादे ! झूठ बोलता है। गांव के दस लोग गवाही दे रहे हैं कि तूने उनके सामने मुन्ना पर लाठी से हमला किया—सो क्या झूठ है ?"

"पर सरकार···गवाही तो मेरी भी हैं।" गजुआ बोला, "इस गांव के चार लोग कह रहे हैं कि मैं दो दिन से गांव में ही हूं—तो फिर यह कैसे हो सकता है कि एक ही वखत मैं गौसपुरा में भी था, और मुकन्द पुर में भी ?"

और दरोगा के लिए उलझन खड़ी हो गयी थी। गजुआ के रिश्ते-दारों और गांववालों ने गवाहियां दी थीं कि गजुआ पिछले दो दिनों से उनके गाँव में ही है। पर दरोगा समझ रहा था कि वदमाशी है और गजुआ भी जानता था कि दोनों दांव खेल रहे हैं···यह सब ऐसे ही था कि सरासर कत्ल करके कहा जाए। कि सुबूत नहीं है। कत्ल किया है, पर साबित करो कि क़तल किया है।

दरोगा ने एक क्षण सोचकर मुवारिकसिंह की ओर देखा था, "वन्द करो साले को ! शक में वन्द कर दो···फिर गवाह-सूबूत देखे जायेंगे।"

और पुलिस को अधिकार है—शक-शुवह में चौवीस घन्टे के लिए किसी को भी भीतर कर सकते हैं···

हवालात में लाकर कुछ और थप्पड़बाजी हुई, किन्तु गजुआ अपने पहले बयान से नहीं डिगा। डिगने का मतलब होगा—फंसना। जानता था कि ज्यादा मारपीट होगी नहीं। दरोगा को याद होगा इससे पहलेवाले दरोगा ने मुलजिम की पिटायी की तो मर गया था···और जब मर गया तो दरोगाजी को लेने के देने पड़ गये थे। उल्टे खुद सफाइयां देते घूम रहे थे कि उन्होंने कत्ल नहीं किया। यह दूसरा दरोगा आया था थाने पर। भूला नहीं होगा कि पहले वाले के साथ क्या वीती है। गजुआ निश्चिन्त था कि वह उस सीमा तक नहीं जायेगा।

वह गया भी नहीं था। पर बाहर जाते-जाते इतना ज़रूर कह गया था कि वह गजुआ को छोड़ेगा नहीं। थोड़ी देर में मुन्ना का बयान लेकर आयेगा···और जब मुन्ना ही कह देगा कि उस पर गजुआ ने

हमला किया, तब गजुआ लाख सफाइयां देता रहे—कुछ नहीं होगा। अच्छी खासी जमानत लगेगी गजुआ की। और गजुआ इस पर भी निश्चिन्त था कि अरजुन ठाकुर जरूर गजुआ की जमानत का बन्दोबस्त करवायेगा···! पर वैसा कुछ नहीं हुआ था।

हुआ कुछ उलटा ही। गजुआ समझा कि शायद ठाकुर आ पहुंचा है ···इसीलिए हवालात का दरवाजा खुला है···पर जब दरोगा के कमरे में पहुंचकर देखा कि कोई नहीं है—तब निराश हो गया। समझा कि पुलिस कोई नया चक्कर चलाने को है ··।

"बैठ !" दरोगा की कलफ-लगी आवाज कमरे में गूंजी।

सिटपिटाया हुआ गजुआ धरती पर बैठ गया—उकड़ू मासूम निगाहों से दरोगा की चढ़ी भवें और तने हुए चेहरे को देखने लगा। लग रहा था कि इस चेहरे के पीछे कुछ सलाखें हैं—मांस में खुपकर मवाद बाहर खींच लाने वाली सलाखें। अभी पल भर में गजुआ के भीतर घुसी सारी बदमाशी को उकेर निकालेंगी।

"यहां अगूठा लगा।" मुबारिकसिंह एक कागज लेकर आ पहुंचा।

गजुआ ज्यादा घबरा गया, "पर सरकार···आप तो जानते ही हैं कि मैं लिखा-पढ़ा नहीं हूं। कागज पर अगूठा लगाऊं, उससे पहले ··"

"बहुत कानून छांट रहा है हरामी···?" दरोगा और ज्यादा बिगड़ा, एक नजर मुबारिकसिंह पर डाली, फिर कहा, "देखा दीवानजी, यह है बदमाश और वह है एक भला आदमी·· जिसने इस स्साले के जुल्म को भी पी लिया और इसकी रिहाई का रास्ता भी साफ कर दिया।"

"कमीन तो कमीन ही होना है, साहब !" दीवानजी बोले, फिर कागज एक झटके से गजुआ के सामने रखा, कहा, "अगूठा लगाता है कि नहीं···? वरना ठीक करूं तुझे ?"

कांपकर गजुआ ने मुबारिकसिंह की नुकीली मूंछों, बगल में दबे लह-राते बेंत और होंठों के गिर्द खिंची खाइयों-जैसी लकीरों को देखा और चुपचाप उस जगह अगूठा लगा दिया जिस जगह पुलिसवाले चाहते थे।

समझ गया कि यहां अपना राग छेड़ना ठीक नहीं होगा। उसे अपनी गलती का अहसास भी हुआ—कैसा पागल हुआ था ? यह तो ऐसे ही हुआ जैसे बाघ के सामने खरगोश गरजा हो···उसे दुःख था—बेकार ही उसने वह सब कहा।

दरोगा ने आदेश दिया, "खोलदो स्साले को !"

गजुआ स्तब्ध हो गया।

मुबारिकसिंह ने उसके हाथ खोले और कहा, "अब जा यहां से···! और उस भले इन्सान के पैर छू, जिसकी जान लेने में तूने कसर नहीं छोड़ी थी और जिसने सब जानते-बूझते हुए भी तेरा नाम नहीं लिया। तुझे बचा दिया···! तू कोई आदमी है ? तू तो कुत्ता है, जिसने जूठे टुकड़ों पर ईमान बेचा···!"

गजुआ का मुंह अविश्वास और आश्चर्य से फैला ही रह गया ? इसका मतलब है कि मुन्ना ने बयान में गजुआ का नाम नहीं लिया ? पर यह कैसे हो सकता है ? गजुआ से उसकी बातचीत हुई थी मुन्ना कैसे भूल सकता है, गजुआ के शब्द, कहासुनी, फिर लाठी का प्रहार·· ?

दरोगाजी कह रहे थे, "गजुआ—अगर सचमुच तू अपनी मां का जाया है तो जाकर मुन्ना से माफी मांगना। एक तू है, और एक मुन्ना का बड़प्पन है, जिसने तेरा नाम न लेकर यह साबित कर दिया है कि तेरे गांव में वोट का अच्छा हक़दार मास्टर जादोराम ही था···।"

गजुआ के लिए अब विस्मय नहीं रह गया था—शेष रही थी। सिर्फ लज्जा। लज्जा, जिसके बोझ के कारण गजुआ का सिर एकदम झुका रह गया था।



हवालात से बाहर आया। पांच मिनट बरामदे में बैठा-बैठा बीड़ी पीता रहा···चुपचाप। लग रहा था कि मुन्नालाल ने उसकी सारी बहादुरी पर थूक दिया है। सारी लठैती भलमनसाहत की पहली मार में

ही हवा हो गयी है। ऐसे इन्सान को गजुआ ने चोट पहुंचायी? उसका लहू बहाया···? छि: छि: !

और यह सब एक बेईमान के लिए?···गजुआ अपने आप में कई-कई बार लाठियों की चोटें खाता और कराहता रहा था···

एक ओर कुर्सी में धंसा हुआ मुबारिकसिंह कुछ सिपाहियों से बात-चीत कर रहा था। विषय—चुनाव। गजुआ अनजाने ही सुनने लगा··· मुबारिकसिंह कह रहा था, "एक वह लड़का है—मुन्ना। मास्टर की खातिर जान जोखिम में डाल दी। पूरा धरम निवाह दिया भाई···"

"मास्टरजी भी कम नहीं हैं दीवान साहब।" एक और सिपाही बड़-बड़ाया था, "ज़रा उस आदमी की भलमनसाहत तो देखो·· चुनाव इधर चल रहा है और वह मुन्ना के पास अस्पताल में बैठे हैं। घर-द्वार सब रहन हो चुका···बरबाद हो गये, पर धरम पर अब भी डटा हुआ है। वाह-वाह!···"

"मगर चुनाव में जीतेगा ठाकुर···!" मुबारिकसिंह ने कहा था।

"वह तो है ही···पैसा, बदमासी, बेईमानी, सरकारी वजन क्या नहीं है उसके पास?···जरूर वही जीतेगा। पर बात देखी जाये तो धरम की है।"

दूसरे सिपाही ने बीड़ी सुलगायी और घृणा से गजुआ को देखते हुए कहा, "फिर इस तरह के गुन्डे-बदमाश भी तो ठाकुर ने ही पाले हैं, जो अपना ईमान धरम बेचकर स्साले अपनी नीचता दिखाते हैं।"

गजुआ हर शब्द पर थप्पड़ खाता गया···ज्यादा आहत होता गया······।

"ठाकुर की बदमासी तो देखो। बेचारी सकुन ने उसका क्या बिगाड़ा था?" दीवान मुबारिकसिंह ने कहा, "उसे तो अकारण ही लपेट लिया यार!···एक तो धमकी देकर उसे गाव से भगा दिया, उस पर इस हरामजादे की बदमाशी से बचने के लिए उसकी इज्जत को लेकर अफवाहें फैलायीं···राम-राम!"

गजुआ चौंका—"सकुन ?···सकुन से मामले का क्या लेना देना?"

एक सिपाही गजुआ की ओर मुड़ा, "क्यों रे, क्या ये सच्ची बात है कि मुन्ना को तूने सकुन की वजह से मारा था ?"

गजुआ ने आश्चर्य से सवाल किया, "सकुन ?···सकुन कहां से आयी इस मामले में हजूर ?"

"वही तो।" मुबारिकसिंह बोला, "मैं तो उसी वखत समझ गया था जब अरजुन ने बयान दिया कि स्साला झूठ बोल रहा है।"

"क्या कहा था ठाकुर ने ?" गजुआ ने साहस किया। पूछ बैठा।

मुबारिकसिंह ने गहरी सांस ली। कहा, "उसने कहा कि सकुन को लेकर तुम दोनों में मारपीट हुई थी। आसनाई का चक्कर था। और क्या ?···अपना नाम बचा लिया जिससे लोग समझें कि मुन्ना और तेरी मारपीट में चुनाव का चक्कर नहीं, तुम दोनों की निजी दुश्मनी है !"

गजुआ चकित रह गया !···इतना बड़ा झूठ ? सकुन बेचारी का तो कहीं कोई जिकर ही नहीं था···? पूछा, "ये सब किससे कहा सरकार ?"

"अबे कहता किससे ? सक्सेना साहब को बयान लिखवाया है उसने।" मुबारिकसिंह दीवान ने बताया, "तुम लोगों को सरम भी नहीं आती। अपने स्वार्थ के लिए गांव की बहू-बेटियों की आबरू पर कीचड़ उछालते हो !···राम-राम !"

गजुआ का चेहरा तमतमा आया। जवाब नहीं था उसके पास··· और जवाब इन लोगों को देना भी बेकार है !···उठा और गांव की तरफ चल पड़ा। अब पछतावा जिस्म में सुलगन बनकर फैल गया था···जो हुआ—उसे गजुआ बर्दाश्त कर सकता था। कर भी गया था···मगर उसके कारण ठाकुर ने एक लड़की के चरित्र को उछाला—यह उसके लिए असह्य था !

किन्तु इस सुलगन का करेगा क्या ? यह समझ में नहीं आ रहा था।

नौ

सकुन लौट आयी है—ये खबर घन्ना ने विलायती को दी। सारे दिन वोट पड़ते रहे थे। अनुमानों का दौर चलता रहा था···कहा नहीं जा सकता था कि कौन जीतेगा?

एस० डी० ओ० ने पेटिया सील करदी थी। दोनों पार्टियां उपस्थित रही थीं उस समय। रात आठ बजे के बाद घन्ना और विलायती वापस हुए थे। पिछले एक माह से गांव के आसमान पर फैली रही घपू-घपू, शोर-शराबा, घटनाएँ, दुर्घटना और अफवाहों का दौर-दौरा अचानक इस तरह शान्त हो गया था जैसे सब कुछ रीत चुका हो। बाढ़ के बाद का-सा सन्नाटा।

दोनों ने सोचा था—अगले दिन मुन्ना को देखने जायेंगे। मास्टरजी तक एक आदमी दौड़ाकर खबर भिजवादी थी कि वोट गिर गये हैं। मुकाबला बराबर का रहा। अब सारी कहानी पेटियों में बंद है।

यह भी कहा था कि लड़का पूछ आये—मास्टरजी क्या कहते हैं?

लड़के ने दस बजे रात लौटकर खबर दी थी। मास्टरजी कुछ नहीं बोले।

"और मुन्ना?"

"मुन्ना तो बार-बार बेहोश हो जाता है," लड़के ने कहा, "बीच में दो-ढाई घन्टे को होश आया था···फिर बेसुध हो गया!

चिन्ता बढ़ी, पर इतनी रात को जाने का फायदा न था। मुन्ना के पास पहुचकर भी उस तक नहीं पहुंचा जा सकेगा। सरकारी नियम लगा हुआ है। मिलने-देखनेवालों का एक वक्त निश्चित होता है।

लड़के ने दूसरी खबर दी थी, "सकुन लौट आयी है।"

"तुझसे किसने कहा?" धन्ना ने सवाल किया।

"अभी, थोड़ी देर पहले मैंने खुद देखा। मोटन के यहां से मिट्टी का तेल लेकर आ रही थी...बात हुई तो बोली कि अभी ही आयी है।"

"तूने बतलाया कि मुन्ना पर गजुआ ने चोट की?"

"नहीं। उत्ती बात नहीं हुई।" लड़के ने कहा। लौट गया। धन्ना ने कमरे में लेटे विलायती को ख़बर पहुंचायी। उपेक्षा से उसने कहा, "लौट आयी है तो लौट आने दो—क्या फरक पड़ता है?"

धन्ना चुप रह गया। विलायती की उपेक्षा समझ सकता था। जाहिर है कि अपरोक्ष रूप से कह रहा है कि उसे सकुन के मामले में कोई रुचि नहीं है।

विलायती ने करवट बदली। एक बीड़ी सुलगायी। दो कश लिये, फिर कहा, "उसने दगा किया। वोट डालने भी नहीं आयी...अब उससे हमारा क्या लेना-देना?"

"वह तो ठीक है यार, पर दगा तो हमने भी किया था..." धन्ना ने उत्तर दिया, "वख्त पर ईमान ने चेता दिया...उस विचारी के साथ भी कोई ऐसा ही चक्कर रहा होगा..."

"पर उसे तो वख्त पर अक्ल भी नहीं आयी," विलायती ने उत्तर दिया। धन्ना को चुप हो जाना पड़ा।

विलायती ने पुनः करवट बदल ली। जाहिर था कि उसे सकुन के बारे में बात करने की इच्छा नहीं है। धन्ना उठ पड़ा, "ठीक है, मैं भी घर चलता हूं। सुबेरे मुन्ना को देखने चलेंगे।"

विलायती ने उसी तरह करवट बदले, मुंह घुमाये हुए कहा, "ठीक है" धन्ना बाहर आ गया।

चांदनी थी। बदन में थकान इस तरह समायी हुई थी कि इच्छा होती थी तुरंत जाये और लेट रहे। पर सकुन से मिलने की इच्छा हो रही थी। एक बार उसे बतलाये तो सही कि उसके जाने के बाद कितना बड़ा काण्ड हुआ···फिर यह भी कि सकुन किस तरह और क्यों चली गयी थी —जानने की हल्की-सी इच्छा मन के किसी कोने में कुलबुला रही थी।

पर इतनी रात सकुन का दरवाजा खटखटाना ठीक होगा ? धन्ना ने अपने भीतर चेतावनी का हल्का-सा झटका सहा, पर मन नहीं माना— चल पड़ा।

सकुन को अब तक मालूम नहीं होगा कि उसके जाने के बाद किस तरह उसका नाम उछाला गया ?···किस तरह मुन्ना पर हमला हुआ ? ···किस तरह धन्ना और विलायती बदले ?···

यह सब कहने-जानने की इच्छा धन्ना के भीतर बलवती हो उठी थी।

सकुन को कुछ पता लगा था, कुछ नहीं। धुंधलके की शुरुआत के साथ जब वह गांव में आयी ही थी, एक-दो महिलाओं ने जो वोट देकर आ रही थीं, उसे देखकर आश्चर्य व्यक्त किया था। एक ने पूछा भी था, "तू वोट के टैम नहीं आयी ?"

"आ नहीं पायी।" सकुन ने कतराते हुए कह दिया था।

"तू चली गयी तो यहां गांव में गजुआ-मुन्ना में मारपीट हुई···पुलिस आयी, और जाने क्या-क्या होता रहा···" किसी महिला ने कहा था, किन्तु सकुन ने फिर भी दिलचस्पी नहीं जतलायी। कहा, "चुनाव में तो ये सब होता ही है।" बात आगे बढ़ती, पर सकुन आगे बढ़ गयी थी। महिलाएं चली गयीं।

सकुन ने चार दिन बाद घर खोला। सब धूल-धूल हो चुका था। जल्दी-जल्दी सफाई की फिर मोटनदास के यहां से मिट्टी का तेल खरीदकर

। भूख थी, पर रोटी बनाने की इच्छा नहीं हुई। आठ किलोमीटर
। चलकर आयी थी। सोचा—सो जाये। अगली सुबह देखा जायेगा…
महिला से मिला समाचार मन में कभी-कभी अस्तव्यस्तता पैदा कर
हा था…कह रही थी कि मुन्ना और गजुआ में मारपीट हुई। मालूम
हीं कितना क्या झगड़ा हुआ होगा। एकाध वार मन भी हुआ था कि
मास्टरजी के यहां पहुंचकर देखे—क्या गड़बड़ हुई है? पर साहस नहीं
हुआ। मुन्ना, मास्टरजी या श्यामा का सामना किस तरह कर सकेगी? जी
मसोस लिया। लेट रही।

आंखें मूंदीं। दरवाज़ा भीतर से वन्द कर लिया था। लालटेन की
वत्ती धीमी कर दी थी। अव शायद नींद आ जायेगी…पर कई करवटें
वदलीं, नींद नहीं आयी। मालूम नहीं चुनाव का क्या रिजल्ट रहेगा?
शायद मास्टरजी बुरी तरह हार जायेंगे! कितने अकेले हो गये थे बेचारे
मुन्ना के अलावा उनके पास कोई रहा ही नहीं था…फिर-फिर वही
सब याद आने लगा। किस तरह सब ने मिलकर जबरदस्ती इस
चुनाव में मास्टर ग्रादीराम को खड़ा किया था और किस तरह एक-एक
कर किनारा काटा था…शायद जीवन भर सकुन उनका या मुन्ना का
सामना नहीं कर सकेगी।

उनका तो दरकिनार, शायद सकुन अपने आपका सामना भी न
कर सकेगी।

आंखें फिर खुल गयीं। मालूम ही नहीं पड़ा कि कव खुलीं।
एकटक आले में रखी लालटेन की धीमी लौ की तरफ देखने लगी
सकुन तो इतनी कायर सावित हुई कि अपना वोट देने के लिए भी
में नहीं आ सकी!

कुन्डी खटकी…

सकुन ने दरवाज़े की ओर देखा। होठ खुले, "कौन है?"

"मैं—धन्ना!"

"ठहरो। खोलती हूं।" सकुन उठी। लालटेन की लौ वढ़

संभाले और दरवाजा खोल दिया । विस्मय से धन्ना को घूरते हुए पूछा "क्या हुआ ?"

"तुझसे बात करनी है।" धन्ना ने उसी तरह कड़क उत्तर दिया।

"इस बखत !" सकुन को अच्छा नहीं लगा।

"हां, इसी बखत।"

सकुन ने एक लम्बी सांस ली। कहा, " आओ ।" पीछे हो गयी। धन्ना आगे बढ़कर पलग पर बैठ गया।

दरवाजा उसी तरह खुला हुआ था। सकुन ने एक ओर खड़े रहकर सवाल किया "क्या बात है ?"

"तुझे मालूम है कि मुन्ना घायल हालत में अस्पताल में है?" धन्ना ने पल भर में ही तयकर लिया था कि कहां से किस तरह बात करनी है। अनुमान था कि सकुन को यह सब मालूम नहीं होगा। यदि हुआ भी तो उस तरह नहीं होगा जिस तरह धन्ना सुनाने वाला है —

सकुन का मन एकदम दूध की तरह फट गया। घबराकर पूछा "क्या हुआ उसे ?"

"गजुआ ने कपाल फोड़ दिया उसका।" धन्ना ने कहा, "तीन दिन हो गये। मास्टरजी हस्पताल में ही हैं। थोड़ी देर को होश आता है फिर बेसुध हो जाता है । इसी तरह चल रहा है..."

सकुन बुरी तरह परेशान हो गयी। पूछा, "पर हुआ क्या था ? किस तरह ? गजुआ किस ने लिए..."

"जरा शान्ति से पांच मिनट बैठ, फिर सब बतलाता हूं। इसीलिये आया भी हूं, नहीं तो इस टैम आने की जरूरत ही क्या थी ?" धन्नालाल ने कहा, फिर आदि से अन्त तक सारी बातें कह सुनायी।

सकुन के भीतर दुख और पछतावे के जाने कितने झरने अ

धन्ना सब कुछ कहने के बाद थोड़ी देर चुप रहकर उसका चेहरा दे

हा । वह एकदम उदास ही नहीं, रूआंसी हो गयी। धन्ना ने कहा हम सव से गलतियां हुईं सकुन···मास्टरजी को जो धोखा दिया—उस का पाप सारी जिन्दगी सालता रहेगा । चाहे जितनी वार गंगा नहा ले यह दोष नहीं मिटने का ।

सकुन के पास कोई जवाव नहीं था ।

"रिजल्ट कल आयेगा···देखो, क्या होता है ।" धन्ना ने कहा, और उठ पड़ा "अव चलता हूं ।"

सकुन ने पूछा, "मुन्ना को देखने नहीं गये तुम ?"

"नहीं । हिम्मत नहीं हुई···" धन्ना ने जवाव दिया, "अव सोच रहे हैं कि सुवेरे जायेंगे ।"

"मुझे ले चलोगे?" सकुन का गला भर्रा गया था ।

धन्ना ने चौंककर देखा—एकदम कुछ कह नहीं सका । विलायती का डर था । मालूम नहीं, क्या कहे ?···हो सकता है कि सकुन से भेंट को लेकर विगड़ ही पड़े, पर इनकार नहीं कर सका । देखा कि सकुन की आंखों पर पनीलापन था । वोला, "हां, जाते वखत तुम्हें वुला लेंगे···"

सकुन ने जवाव नहीं दिया ।

धन्ना दरवाज़े से वाहर आया । वोला, "विल्कुल सवेरे चलेंगे । हर तक लौटना पड़ेगा । रिजल्ट जो निकलने वाला है···तू तैया जाना सवेरे ।" फिर उसने उत्तर की प्रतीक्षा नहीं की । तेज़-तेज़ च चल पड़ा ।

सकुन अकारण, विचारहीन होकर उसे जाते हुए देखती रही तक, जव तक कि वह गांव के गलियारे में पाटौरों की ओट में नहीं हो गया ।

दस

इरादा था कि तुरंत वापस हो सकेंगे, पर वहां जो कुछ सुनने-जानने को मिला, उसके बाद वापसी असंभव थी।

तीनों अस्पताल के कारीडोर में आ खड़े हुए थे। पहल करके कौन कमरे में जाये—यह सवाल था। तीनों ही एक-दूसरे से अपेक्षा कर रहे थे कि पहले जाये। जाते ही मास्टरजी और मुन्ना का सामना होगा। उस पल क्या बीतेगी उस पर जो उनकी आख से आख मिलायेगा?

और मास्टरजी या मुन्ना पर क्या बीतेगी!···मालूम नहीं, वे क्या कहें? हो सकता है कि दुत्कारकर बाहर निकाल दें···यह हो भी सकता है कि वे कुछ न कहें। ऐसी स्थिति में वह क्या करेगा—जो सामने होगा?···

तरह-तरह की बातें, तरह-तरह के विचार·· तीनों एक-दूसरे का चेहरा देख रहे थे। रास्ते भर कहते आये थे कि गलतियां हुई, पर उसका मतलब यह नहीं है कि मास्टरजी या मुन्ना हमें हमेशा के लिए दुत्कार दें···आज जो उनके पास पहुंचकर क्षमा मांगेंगे—क्या यह प्रायश्चित कम होगा?

विलायतखान ने कहा था, "मैं तो जाते ही पैर पकड़ लूंगा। कहूंगा कि छिमा कर दो महाराज!···आपने बच्चे की तरह पढ़ाया-लिखाया, किसी काबिल बनाया है कि दीन-दुनिया समझने लायक बुद्धि आ गयी है?

अगर गलती हो गयी है, तब भी आपही का हूं । कहां जाऊं···?"
"मैं भी यही करूंगा ।" धन्ना ने कहा था ।

सकुन चुप थी । जानती थी कि कुछ नहीं कह सकेगी···एक शब्द भी
ह से बाहर नहीं आयेगा । चुपचाप गरदन झुकाये खड़ी रहेगी । वह सब
सुन-सह लेगी जो कहा जायेगा । न बोलकर भी क्या इस तरह सकुन
बहुत कुछ नहीं कह डालेगी ?

पर इस कारीडोर में आकर सबके इरादे, सारा सोचा हुआ हवा हो
गया···एक नया सवाल पैदा हो गया था—कौन पहले जाये ?

डाक्टर, नर्सें बार-बार दौड़-धूप करते हुए नजर आ रहे थे···जितनी
बार भीतर आये-गये थे—उससे लग रहा था कि पता नहीं क्या कुछ
गटशट चल रही है । सकुन बोली थी, "वह सब तो बाद में देखना···
हले यह तो जानकारी करलो—तबीयत कैसी है ?"

विलायत आगे बढ़ गया । मुन्ना के कमरे से एक नर्स बाहर आ रही
थी । उसके पास पहुंचकर सहमते हुए सवाल किया, "बहनजी, मुन्ना-
लाल का क्या हाल है ?"

नर्स जल्दी में थी । कहा, "अनकान्शस है ।" विलायती और कुछ पू
सके, इसके पहले ही तेजी से नर्स दूसरी ओर चली गयी ।

परेशान विलायती सकुन और धन्ना के पास आ खड़ा हुआ । क
"अंग्रेजी में जाने क्या कह गयी···मेरी समझ में तो कुछ आया नहीं

"कहा क्या था" सकुन ने सवाल किया ।

"अनकान्शस !" विलायती बोला । चेहरे पर चिन्ता और नास
का भाव था ।

"तू रहने दे—मैं पूछता हूं ।" इस बार धन्ना आगे बढ़ा । ि
दरवाजे पर जा खड़ा हुआ । हौले से उढका हुआ दरवाजा खो
भीतर झांका—मास्टरजी खिड़की के पास खड़े नज़र आये ।
धन्ना परेशान हो उठा । और दरवाजा ठेला तो मुन्ना का प
आया । कोई मशीन लगी हुई थी । इर्द-गिर्द डाक्टर, नर्स···स

बुदबुदाते हुए।

इसका मतलब है कि मामला गंभीर है···धन्ना के दिल में खलबली होने लगी। एक नजर एक ओर खड़े विलायती और मकुन के चेहरों पर दौड़ायी। वे भी बहुत घबराये हुए लग रहे थे। धन्ना ने ज्यादा सोचा नहीं। कहा, "आओ, मेरे पीछे···" फिर दरवाजा धकेलता हुआ भीतर घुसा।

डाक्टर ने चौंककर उसे देखा, फिर अंगुली के संकेत से ही बाहर रहने को कहा। मास्टर जादोराम लपके हुए आये और धन्ना को लगभग धकेलते हुए फुसफुसाये, "आओ, बाहर ही आओ मेरे साथ···"

वे सब सिटपिटाये हुए, लड़खड़ाने-से पीछे-पीछे होकर कारीडोर में आ गये। विलायती ने तुरत पैर पकड़ लिये, "मुझसे भूल हुई थी मास्टर जी। माफ कर दें···"

"वह सब छोड़ो···! मुन्ना की हालत बहुत खराब है।" मास्टरजी भर्राए गले से बोले, "डाक्टर लोग कोशिश कर रहे हैं···।"

वे तीनों एकदम खाली हो गये। पुतलियों की चमक गुम हो गयी और उसकी जगह एक रेगिस्तान बिखर गया। खुरदरा और खाली···

कुछ पल की खामोशी के बाद विलायती ने कहा, "पर यह हुआ कैसे साहब···? अभी कल रात गजुआ आया था मेरे पास···कह रहा था—मुन्ना ठीक हो रहा है। सुनते हैं उसने पुलिस में बयान भी दिया था···?"

"हां···" मास्टरजी ने कहा, "रात कुछ टांके खुल गये सोते में—मालूम ही नहीं पड़ा। सवेरे देखा तो लहू रिस गया था तमाम। आक्सीजन लगायी गयी है। थोड़ी देर बाद खून भी चढ़ायेंगे···पर खतरा है। सवेरे से डाक्टरों ने चैन नहीं ली।"

मकुन समझ सकती है—कितना गंभीर हो गया मरीज···आक्सीजन, खून चढ़ाना, यह सब जिन्दगी के आखिरी दौर का मामला होते हैं···आंसू छलछला आये। मास्टरजी देख रहे थे। बोले, "हिम्मत से काम लेना चाहिए बेटी···भगवान सब ठीक करेगा। भगवान सब···" हिम्मत

बंधा रहे थे, पर खुद रो पड़े।

मास्टरजी के शेष संवाद के शब्द गुम हो गये।

वे सभी हंआसे खड़े थे। शब्दहीन। पर भीतर ही भीतर क...
हाहाकार करते हुए।

"हम एक बार उसे देख सकते हैं मास्टरजी ?" धन्ना ने सवाल
किया।

"पूछता हूं..." कहते हुए मास्टर जी पुनः भीतर गये। सकुन,
विलायत और धन्ना बिना कुछ बोले कारीडोर में टहलते रहे। उनके
दिमाग खाली हो चुके थे, मन पर निराशा और दुःख की एक बदली छा
गयी थी।

सहसा उन तीनों ने चौंककर देखा—डाक्टर और नर्स बाहर आ
रहे थे। वे थके हुए थे। बदहवास थे।

मास्टरजी दरवाजे पर आये और उन्होंने तीनों को भीतर आने का
संकेत किया। वे सहमते हुए धीमे कदमों से एक-एक कर भीतर पहुंचे।

सफेद चादर ओढ़े हुए मुन्ना खामोश लेटा हुआ था। उसकी आंखें
बन्द थीं। नाक पर मास्क लगा हुआ था जो ऑक्सीजन सिलेन्डर से
जुड़ा था·· वे टकटकी बांधे उसे देखते रहे···दिल, दिमाग से खाली हो
—बुतों की तरह वे खामोश खड़े हुए थे।

कोने में खड़े मास्टर जादोराम की पुतलियां फिर से छलछला आ...

मुन्ना की सांस धीमे-धीमे चल रही थी।

डाक्टर और नर्सें फिर आ पहुंचे। तीनों पुनः बाहर निकल...
थोड़ी देर बाद मास्टरजी भी बाहर आ पहुंचे। वे चारों कारीडोर...
और बैठ रहे—बातों से खाली।

गजुआ ने जब कारीडोर में प्रवेश किया, तब भी वे खा...
उसे देखकर भी खामोश ही रहे। गजुआ बहुत घबराया हुआ थ...
चेहरे पर थकान और बदहवासी थी।

धन्ना का जी हुआ कि पूछ ले—'क्या रहा चुनाव प...

शब्द होंठों में ही दबे रह गये । अब पूछना न पूछना व्यर्थ ही लग रहा है। आंखों के सामने मुन्ना का मास्क लगा हुआ चेहरा उभर आया···

गजुआ ने खुद ही कहा, "फैसला हो गया, मास्टरजी···! एक वोट से हार गये आप।"

एक पल के लिए विलायतखान का मन हुआ था कि उठे और गजुआ को गरदन से पकड़कर बाहर खींच ले जायें और फिर दनादन···पर जबड़े भींचकर रह गया। यहां यह सब नहीं हो सकता···और अब इस सब का लाभ भी क्या है!

गजुआ की ओर मास्टर जादोराम ने देखा उनका चेहरा सपाट था। भावहीन। उसी तरह, जिस तरह गजुआ के शब्द सुनने से पहले था। सकुन, धन्ना और गजुआ उन्हें देख रहे थे।

सकुन के भीतर पछतावे की लकीर और गहरी हो गयी—अगर वह भी वोट डालने आ गयी होती तो पलड़ा बराबर का हो जाता।

गजुआ उत्तर न पाकर चुपचाप एक ओर बैठ रहा। मास्टरजी उठे और भीतर चले गये। मुन्ना सामने लेटा हुआ था। डाक्टर के चेहरे पर सुबह के बाद पहली बार हल्की-सी मुसकान उभरी थी·· मास्टरजी के पिटे हुए चेहरे को देखते हुए डाक्टर ने उन्हें दिलासा दिया, "खतरा कम हो गया है, मास्टर साहब! ईश्वर चाहेगा तो सब ठीक हो जायेगा।"

मास्टरजी के होंठों पर चमक पैदा हुई। मुन्ना के शरीर में खून चढ़ाया जाने लगा था। मास्टरजी ने शांति की एक सांस ली। बाहर आये। उन सभी ने घबरायी निगाहों से उन्हें देखा। मास्टरजी मुसकराते हुए सामने जा खड़े हुए, "अब खतरा कुछ कम हुआ है।"

उन सभी के भीतर अनायास ही महक बिखर गयी···कुछ लहलहा उठा। सरसों के खेत-जैसा अहसास। विलायत ने मन ही मन कुरान की एक आयत पढ़ी। गहरी सांस लेकर धन्ना बुदबुदा पड़ा—'हे भगवान्!··· तेरी किरपा ···' सकुन के भीतर की खुशी पलकें तोड़कर बह आयी जिसे उसने आंचल में छुपा लिया। गजुआ मासूम बच्चे की तरह एक ओर बैठा हुआ था।

धन्ना ने बड़बड़ाकर कहा, "मास्टरजी, एक ही मलाल रहेगा ··तक-

र ने एक वोट से साथ नहीं दिया। मुन्ना का लहू अकारथ…"

"पागल हुआ है तू ?" मास्टरजी ने जवाब दिया, "मैं तो कहता हूं, यह सब मुन्ना की ही देन है—एक अकेले की देन। तुम सब को कमा लिया उसने। लहू कहां अकारथ हुआ ?" वात पूरी करने से पहले पुनः मुन्ना के कमरे की ओर ध्यान चला गया—नर्स जा रही थी। मास्टरजी पुनः भीतर जा पहुंचे।

धन्ना ने कहा, "एक वोट की हार ऐसे ही हार नहीं मानी जा सकती !"

"पर हार तो हुई ही है…" विलायती ने कहा।

"नहीं।" धन्ना वोला, "गिनती फिर से करवायेंगे।"

"वह सब वाद की वात है।" सकुन वड़वड़ायी, "अभी तो मुन्ना का ध्यान लगा है।" वे वतियाते किन्तु मास्टरजी पुनः आते दीख पड़े। चाल में ज्यादा दम-खम दीख रहा था। मास्टरजी उनके पास आकर वैठ रहे।

वे सब चुप थे।

"क्या सोच रहे हो तुम लोग ?" जादीराम ने पूछा।

"कुछ नहीं" धन्ना ने कहा, "ऐसे ही चुनाव की वात सोच रहे हैं। एक वोट की वात है। गिनती फिर से…करवायेंगे। मन नहीं मानता हारे हैं।"

मास्टर जादीराम अनायास ही मुसकरा पड़े, "क्या मानना चाहि हम हारे है ? गिनती हो न हो, उसकी वात छोड़दो जरा तसल्ली मन में सोचो—कहां हारे हैं ?…तुम लोग हार तो तव जाते, ज अकेला ही रह गया होता। सच तो यह है कि तुम लोग जीत गये चुनाव की गिनती से थोड़े ही हार-जीत होती है ?"

वात फिर से अधूरी रह गयी। नर्स ने आकर सूचना दी, " आपके पेशेन्ट को होश आ गया है…"

मास्टर जादीराम वच्चों की तरह उछलकर कमरे की पड़े। धन्ना, विलायती, सकुन और गजुआ ने एक-दूसरे को कराये। फिर हंस पड़े…समझ में नही आ रहा था कि क्य शायद समझ में आ भी रहा था कि क्यों हंस पड़े है।

दरोगाजी ने सुझाया, "सत्य के लिए यह परवाह करना गलत है कि किसका भला होगा किसका बुरा होगा···आप तो सिर्फ सत्य बोलते जाइए। वही आपका ईश्वर है। और आत्मा भी एक तरह से ईश्वर ही होती है, इस तरह सोचोगे तो दन् से मान जायेगी।"

भूतपूर्व सरपंच एक क्षण चुप रहे फिर कहा, "आप कहते हैं तो ठीक है। ले लीजिए बयान। पूरा मामला ही बतलाये देता हू।"

दीवानजी ने सिलसिले से कागज सम्हाला। बयान दर्ज करने की मुद्रा में मुबारिकसिंह बैठ गया। अरजुन ठाकुर ने भीतर खबर भिजवायी, "जरा आठ-दस प्याले चाय भिजवाए···साहब लोग आये हैं।" फिर उसने कहा, "लिखिए, साहब···मैं अरजुनसिंह, वल्द दुरजोधनसिंह जात-छत-रिय-हिन्दू···साकिन गोसपुरा···



भोला लड़का दौड़-दौड़ा धन्ना के पास पहुचा। जो सुना था, उससे मन में घिन हो आयी थी। छि: छि:।···यह अरजुन ठाकुर तो बड़ा कमीन आदमी है।···एक जवान औरत की जिन्दगी अकारथ ही नाली मे डाल दी?···सब कुछ धन्ना को बतलाना होगा। धन्ना और विलायत-खान रास्ते में ही मिल गये। विलायती के चबूतरे पर बैंड-बाजों की सफाई कर रहे थे लोग·· धन्ना वही आ बैठा था। लड़का वही पहुचा। दोनों बात बन्द करके उसका मुह देखने लगे।

"अबे, गयामिया! बड़ा परेसान लगता है। अब किसका सिर फूटा?" धन्ना ने सवाल किया।

गयासिया ने कहा, "जरा भीतर आ जाओ, धन्ना भईया···सुनाता हू।"

धन्ना भीतर पहुचा। गयासिया ने फुसफुसाकर कहा, "मुन्नालाल पर हमले की बात को ठाकुर ने दूसरा ही रंग दे दिया है। कहा है कि सकुन की आस नाई के चक्कर में मुन्ना और गजुआ का झगड़ा हुं

होगा—इस मामले पर दुश्मनी पहले से चल रही थी !"

धन्ना सारे कांड से दुखी पहले ही था—इस खवर ने एकदम सुलगा दिया। इतना नीच आदमी है ठाकुर? राम-राम ! घृणा और विरक्ति से दिल भर आया उसका।

गुवासिया ने अगली सूचना दी थी, "इस वात की गवाही नत्थो ग्राम-सेवक और गदाधर पटवारी ने दी है।"

जी उवल आया।...अभी और कुछ सोचे या कहे, इसके पूर्व ही वाहर से कुछ आवाजें उभरने लगी थीं। अरजुन की आवाज वह साफ-साफ सुन पा रहा था। चबूतरे पर विलायत सेवात हो रही है। विलायत पूछ रहा था, "इस वखत किधर चल दिये होने वाले पंचजी ?"

"धन्ना के यहां तक जा रहा हूं, भाई...दो वार वुलवाया था उसे। पता नहीं, किस काम में फंसा है...टैम नहीं निकाल पाया आने का। इसीलिए सोचा कि खुद मिल आऊं..."

"धन्ना तो यहीं है !" विलायत ने वतला दिया था, फिर पुकार भीतर फेंकी थी, "धन्ना !...अरे यार ठाकुर आए हैं—वाहर तो निकल !"

और दिल न होते हुए भी धन्ना वाहर निकल आया था। अनचाहे ही हाथ जोड़ कर राम-राम की थी। अर जुन ठाकुर चबूतरे पर ही वैठ रहा। हंसते हुए पूछा, "किस चक्कर में उलझ गये थे धन्नालाल ?"

"काम लग गया था।" धन्ना ने उदासीनता से उत्तर दिया। निश्चय कर लिया था कि मुंहफट ढंग से जवाव देगा। इस तरह कि आगे से वातचीत ही वन्द हो जाये। स्वार्थ के लिए आदमी इस कदर गिर सकता है कि एक निर्दोष कुंवारी कन्या पर कीचड़ उछाले ?...धन्ना ने ऐसे आदमी का साथ देकर न केवल मित्रों से विश्वासघात किया, वल्कि पाप किया। उससे मुक्ति कठिन।

"इन दिनों देश के काम से वडा काम भी है कोई ?...चुनाव चल रहा है।" अरजुन वोला, "तुम जैसे सामाजिक 'कारकरता' अगर आगे नहीं

वढेंगे, तो फिर कौन सम्हालेगा यह सब?"'तुम्हारी असली उपयोगिता तो इसी समय है भईया !"

मुस्कराता हुआ विलायती कभी धन्ना को देखता, कभी अरजुन ठाकुर को—किस कदर प्रपच की बातें करते हैं लोग। दोनों एक-दूसरे के सामने नंगे है। पर बतिया ऐसे रहे है, जैसे सारे जमाने की मर्यादा का ठेका इन्ही दोनों ने ले रखा हो। इससे बढ़िया आनंद तो फिल्म में भी नही आता। स्टेज के नाटक में वह रस कहां, जो जीवन के नाटक में है''' और इस समय गाव का सबसे बडा अभिनेता मौजूद है—ठाकुर अरजुन सिंह। विलायती को याद आया—किसी ने कहा था कि नेता से बड़ा अभिनेता कोई नही होता—आख से देख रहा है और मन से भोग रहा है।

धन्ना ने उत्तर दिया,"अब मैंने निश्चित किया है पटेरा जी ! आगे से समाज के कारज बन्द।'''अब जो कुछ करूंगा अपने लिए करूंगा। जब बेईमान और बदमासी दूसरो के लिए करना ही हमारे भाग में लिखा है, तो अपने स्वारथ के लिए क्यों न करें ? हमारी तरफ से मां-बाप, बहिन, देश सब भाड में जाये।'''अपने को बचाने के लिए बेटी के बदन से कपड़े उतारते भी लाज नही लायेंगे—अब से यही हमारा धर्म रहेगा, यही रहेगी देश भक्ति !"

ग्यासिया बाहर नही आया था। धन्ना ही भीतर रोक आया था उसे। यह कहकर कि यही से सुनना—उस काजी के किस तरह कपड़े उतारता हू ! गुन्डा कही का !!

और भीतर खड़े ग्यासिया को लगा था कि धन्ना ने अपना कहा पूरा करना शुरू कर दिया है। मन में भय भी जागा, आनंद भी महसूस हुआ।

अरजुन ठाकुर धन्ना की बदली आवाज, बदले रुख और बदले शब्दों से कुछ-कुछ सिटपिटा-सा गया। जी हुआ कि भाग खड़ा हो। गरमी बतला रही है कि पीछे दूर कहीं लावा उबल रहा है'''अभी गरमी आयी है,

र लावा आ गिरेगा। किन्तु राजनीति में सिखाया गया है कि जब
ह पर थूका जाये तो एकदम मत भागो—पोंछने की कोशिश करते हुए
पनी दयानतदारी और अहिंसा को जतलाते रहो थूकने वाले ही लज्जित
होने लगते हैं कि किस पर थूका, जिस पर असर ही नहीं हो रहा। यही
सोचकर जमा रहा। पूछा, "क्या बात है बाबू धन्नालाल, तुम्हारा मूड
इस टैम बहुत खराब दीख रहा है?"

"मूड खराब नहीं है साहब, आपकी राजनीति से खराब हो गया है,"
धन्ना ने तय किया कि कह डालेगा। विलायती भी सुनले, और सब
भी···ठाकुर कितना नीच है—यह पूरी तरह जाहिर हो जाये। समझ
सकता था कि इस हरकत को कोई पसन्द नहीं करेगा। सकुन के प्रति
सिर्फ इज्जत ही नहीं, गांववालों में सहानुभूति भी है। उसे व्यर्थ बदनाम
करके अपने को बचाने का षड़यंत्र इसी समय उजागर हो जाना आवश्यक
लगा धन्ना को। कह डाला, "सकुन को लेकर आपने पुलिस में क्या बयान
दिया है हजूर? जरा हम भी तो सुनें?"

विलायती और इधर-उधर बैठे कई लोग चौंककर धन्ना का मुंह
देखने लगे। ये सकुन बातचीत में कहां से समा गयी?···फिर पुलिस
बयान, वह भी सकुन को लेकर!··· बेचैन होने की बात थी।

अरजुन ठाकुर सिटपिटा गया। बड़ी हड़बड़ी में उस समय बच
का रास्ता निकाला था। उसी हड़बड़ी में पुलिस के कागजों में
ठोक दिया था। गवाही करवा दी थी। पर उस बयान का कुछ
असर भी हो सकता है—इस ओर सोचने का अवसर ही नहीं मिला
कुछ परेशान होकर कहा, "बयान?···क्या?"

"बयान आप देंगे और बताऊंगा मैं?" धन्ना ने तिलमिलाक
"वाह-वाह साहब! खूब कहा आपने!"

अरजुन ने कठिनाई से अपना बिखराव बटोरा। बोला, "तु
गजुआ और मुन्ना को लेकर हुई गड़बड़ की बात कर रहे हो?"

"वह बात तो अलग ही है। पर सुना है कि आपने जोड़

धन्ना ने कहा, "फिर अगर जोड़ी ही है तो वह भी चार लोग सुनलें—किस तरह जोड़ी है ?"

"जोड़ी नहीं है,धन्ना ! जुड़ी हुई है ।" अरजुन ठाकुर ने निश्चय कर लिया था कि अब बरस पड़ेगा अपनी पूरी सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सत्तागत शक्ति के साथ बरस पड़ेगा। इस तरह कि झूठ भी सच हो जाए। इतनी बार वही सब,इतनी जगह कहेगा कि झूठ भी सच हो ले ! गोयबल्स कहता था कि एक झूठ अगर हजार बार बोला जाए तो सच मे बदल जाता है। यही कुछ 'फिलासफी' काम में लेगा वह। कहा, "सुनना है तो सुनलो । तुम लोग शायद जानते नहीं कि मुन्ना और गजुआ में झपट का कारण यह चुनाव या मैं नहीं हूं, बल्कि असली कारण है सकुन ।"

"सकुन ··?" विलायतखान ने हैरत से पूछा ।

"हां ।" अरजुन ने उत्तर दिया, "गजुआ है ठाकुर···जात-पात माननेवाला आदमी । सकुन ठाकुर की बेटी ' मुन्ना पढ-लिख गया, पर जात तो मिट नहीं सकती ? पुराने खयालवाले नयी बातों को मानते नहीं है । सकुन और मुन्ना का चक्कर चल रहा था । गजुआ भी एक उम्मीदवार था । यही बात हुई कि मुन्ना और गजुआ में गांठ पड गयी—उस दिन जो मारपीट हुई है, उसका कारण चुनाव नहीं है । कारण है—आसनाई । चुनाव तो बहाना बन गया, भईया !···असल बात···"

"अरे नहीं-नहीं, ठाकुर साहब ! क्या बात करते हैं ?" विलायतखान ने कहा, "सकुन को बचपन से जानते है हम लोग । गाव के हर घर की उडती चिड़िया और हर पछी के पाव मेरे देखे हुए हैं···सकुन उस तरह की लड़की ही नही है और मुन्ना चाहे जो करे···पर यह सब डके की चोट बोला जा सकता है कि वह उस तरह का ओछा इन्सान नही है !"

"पर दूसरे तो ओछे इन्सान हो सकते हैं विलायतखान !" धन्ना ने बीच में ही कहा । घृणा से ठाकुर अरजुनसिंह को देखता हुआ बोला, "मुन्ना ओछा हो न हो, हमारे ठाकुर साहब तो ओछे हो ही सकते हैं !"

धन्ना !" अरजुन गरजा, "जवान सम्हालकर वात कर ! दो टके
आदमी—स्साला ! अगर वहुत दिमाग चढ़ गये हैं तो याद रखना ।
के वाद विलकुल ठंडा कर दूंगा—वरफ !···जिन्दगी भर गरमी
नहीं होगी ।"

"मेरी जवान सम्हली हुई है ठाकुर ! और सारा हिसाव लगाकर
ल रहा हूं ।" धन्ना ने भी सीना फुलाकर जवाव दिया, "जानता हूं कि
क्या कर सकता है ? चुनाव हो लेगा तो इस गांव से मुझे निकलवा
देगा । दस लोग मेरे दुश्मन हो जायेंगे पर याद रख, उस गरीवनी अनाथ
लड़की पर तूने जो लांछन लगाया है—तुझे भगवान उससे माफ नहीं
करेगा ! तू यहां तो जीत लेगा, पर तुझे ऊपर हिसाव जरूर देना
पड़ेगा । वहां स्टंटवाजो काम नहीं देगी !···"

अरजुन ठाकुर ने जवड़े भींच लिये । उत्तेजना में खड़ा हो गया पल
भर में आते-जाते लोगों की भीड़ खड़ी हो गयी । अरजुन एकदम परेशान
हो गया था इस स्थिति से । कुछ कह सके, तभी विलायती ने कहा,
"ठाकुर साहव ! राजनीति हो—इसमें वुरा नहीं है । पर राजनीति किसी
अनाथ, वेसहारा लड़की की आवरू पर वोट वसूलने लगे—यह तो नाइंसा-
फी है मालिक !···यह वात मुझे भी अच्छी नहीं लगी ।"

"तुम कुछ नहीं जानते विलायती । सच वात न ही धन्ना को पता
है···" अरजुन ने लगभग मिमियाकर फिर अपनी वात दोहरानी चाही ।
पर धन्ना विगड़ता ही चला गया, "अरे जा !···यह सच जानेगा । चार
गुन्डे इकट्ठा करके दारू पिलाने वाला आदमी हमारा नेता, हमारा पंच
···धरमराजवन रहा है···हमें सच जानना होगा तो हम खुद जान लेंगे
तेरी जरूरत नहीं है ।" धन्ना आवेश में चवूतरे से नीचे उतर आया था
उसका पूरा शरीर क्रोध के कारण कांप रहा था । चेहरे का सांवला
हल्की ललामी में वदल गया था । जाहिर था कि आवेश के कारण उ
वदन में एक सनसनाहट रेंग रही है···

विलायतखान ने उसे थाम लिया, फिर हाथ जोड़कर सरपंच से

"आप इस वक्त यहा से जाइए, हुजूर !···" फिर भीड़ में जुट आये ग्रामीणो की ओर मुड़कर कहा, "ठाकुर साहब भी इस वक्त गुस्से मे है, ले जाओ भाई ।"

लोग समझा-बुझाकर दोनों को परे करने लगे । थोड़ी देर बाद अरजुन ठाकुर बिफरता, गरजता, लोगो से धकियाता हुआ अपने घर की ओर वापस हुआ ।

इधर विलायती बिगड़ रहा था, "सबर से काम लेना चाहिए धन्ना ! देखना चाहिए कि दो तोले की जबान से कितने मन का पत्थर गिर रहा है···आखिर ठाकुर वजनदार आदमी है । हम हैं गरीब लोग । बात कहने से पहले···"

"और उस कुत्ते ने नही सोचा कि वह क्या कह रहा है ? धन्ना बिगड़ा, "वह बेचारी धरम-करम और इज्जत से जिन्दगी पाल रही है । ये हरामी उसकी इज्जत से राजनीति करते हैं ? गरीब है हम लोग तो क्या कोई ईमान-धरम नही है ?"

"पर धन्ना ··सब जानते हैं कि सकुन किस तरह की लड़की है । इस कुत्ते के भौंकने से क्या होगा···"

"अरे होगा कैसे नहीं !" धन्ना ने बिगड़कर विलायती की पकड़ से हाथ छुड़ा लिया था, इन पैसेवालो के सामने सारे ईमान-धरम पानी भरते हैं । जिस ईमान-धरम की मुटिया लेकर हम लोग उस गरीब इन्सान के पास गये थे···आज उसका क्या हाल हो रहा है—देख नहीं रहे हो ? हमारा ईमान-धरम भी दो-दो कौडी मे बिक गया !···"

"देर आयद, दुरुस्त आयद यार !" विलायतखान ने अफसोस भरे स्वर में उत्तर दिया था, "गलती तो हमसे हुई, पर आगे के लिए सबक मिल गया है···"

"आगे के लिए क्यों, इसी बार के लिए क्यो नही !" चिढ़ककर धन्ना ने कहा था, "अगर इसने सकुन को लेकर ऐसी-वैसी बात की तो चाहे जितना अमीर हो स्साला···इसकी जबान खींच निकालूगा ! समझा क्या

है इसने ? 'गरीब की लुगाई, सब गांव की भौजाई वाले ज़माने लद गये !'
...ऐसे नहीं चलेगा !"

धन्ना की सांस जोर-जोर से चल आयी थी। विलायतखान और
उसके गिर्द गांव के कुछ स्त्री-पुरुष जमा थे। सभी ठाकुर अरजुन की हर-
कत पर थू-थू कर रहे थे। शाम गहरी होने लगी थी।

सकुन के प्रति इस तरह का आरोप सहन कर पाना—सकुन से ज्या-
और लोगों के लिए कठिन हो गया था...

पर अरजुन ठाकुर की प्रचार-शक्ति और घटनाएँ बुनने कि क-
कला का भी जवाब नहीं।

वह-वह कहानियां रात होते-होते आसमान पर बिखरीं कि गां-
रसों में बंट गया।

आठ

सुबह-सवेरे धन्ना ने विलायती को जगाया था··· अलसाता हुआ विलायती बाहर आया। नहाया-धोया धन्ना सामने खड़ा था। विलायती ने आश्चर्य से पूछा था, "अरे, तू इत्ते सुबेरे तैयार होकर आ गया ?··· कहा जा रहा है ?"

"आज वोट गिरेंगे ना ?" धन्ना ने जवाब दिया था, "तू भी तैयार हो जा ! चलना नही है ?"

"कहा ?"

"गढ़ी में।" धन्ना ने बीडी सुलगायी। कलफ लगे कपड़े पहन रखे थे उसने। खादी की धोती और कुरता।

विलायती उसके कपडो और बनाव-सिंगार को घूरता रहा, फिर पूछा, "गढ़ी में क्या करेंगे ?"

"पेटियों पर रहेंगे।" धन्ना ने उत्तर दिया।

"किसकी पेटी पर ?" विलायती हसा, "कल तय किया कि अरजुन का साथ देना नही है और मास्टरजी की तरफ से पहले ही धकियाये जा चुके हैं—अब हम लोगों के लिए ठौर कहा रहा ?"

धन्ना ने बड़े विश्वास से उत्तर दिया था, "ठौर क्यों नही है। गलती हुई थी—सुधार लेंगे। मास्टरजी मुन्ना के पास अस्पताल में हैं। हम यहाँ उनकी पेटी पर रहेंगे। इस वखत यही हमारा धरम है। मास्टरजी धकि-

यायें भी तो इस वार नहीं जाना है।"

विलायती ने एक पल सोचा—सहसा उसके भीतर भी जैसे एक महक विखर गयी। कहा, "तो तू पांच मिनट रुक, मैं तैयार होता हूं।" कह कर वह लोटा लिये हुए वाहर निकल गया।

धन्ना आधा घन्टे चवूतरे पर वैठा रहा था···विलायती नहा-धोकर वाहर से लौटा। तुरत-फुरत कपड़े वदले। कहा, "चल्!···"

दोनों गढ़ी की ओर चले।

गढ़ी वहुत पुरानी। गौसपुरा के जमींदार की गढ़ी। कभी राजपूती ज़माने में वनी थी। पंचायत का दफ्तर और स्कूल इसी गढ़ी के भीतर थे। कुछ हिस्सा उजाड़-वियावान पड़ा था। जिन हिस्सों की हालत ठीक थी, उन्हें थोड़ा-वहुत सुधरवाकर स्कूल और पंचायत भवन के रूप में उपयोग किया जा रहा था। एक कमरा हमेशा खाली रहता था। कभी-कभार जव तहसीलदार, नायव वगैरा आ पहुंचते तो इस कमरे में उनकी वैठक होती थी। ज्यादातर ठाकुर अरजुनसिंह की हवेली पर ही ठहरते थे।

गढ़ी के सामने भीड़ थी। एक सरकारी अफसर आये थे—दो मास्टर। ये सव चुनाव चलायेंगे।

जीप से पेटी उतारकर उस वैठक में रखी गयीं। एक पर लालटेन का निशान, दूसरे पर ठाकुर अरजुनसिंह का घोड़ा।

इन दोनों में ही गांव के लिये कई साल का प्रशासन वन्द हो जायेगा —फिर पेटियां खुलेंगीं, वोट गिने जायेंगे। आखीर में विजयी का नाम घोपित होगा। इस वात की सारी मारामारी।

मतदाता ग्रामीण धीमे-धीमे एकत्र होने शुरू हुए। ठाकुर अरजुनसिंह और उसके चार-छह लोग पहले से ही मौजूद थे। धन्ना और विलायतखान भी जा पहुंचे। अरजुन और उसके आदमियों के वीच दृष्टियों में उनके प्रति कुछ कटु-अभिव्यक्तियों का आदान-प्रदान हुआ। अन्त में शहर से आये अधिकारी ने इर्द-गिर्द खड़े लोगों से सवाल किया, "अरजुनसिंह की तरफ से कौन लोग रहेंगे?"

दो व्यक्ति बढ़ आये। एक पटवारी गदाधर, दूसरा नत्थोलाल ग्रामसेवक।

दोनो व्यक्तियों के रजिस्टर पर हस्ताक्षर लिये गये। अरजुन ठाकुर एक ओर पड़ी पुरानी कुरसी में धस गया। मतदाता गढ़ी के आंगन में यहा-वहां पेड़ों की छाह में एकत्र हो रहे थे। तहसील के एक-दो आदमी और थाने के चार सिपाही भी कभी भीतर और कभी बाहर राउण्ड ले जाते।

"मास्टर जादौराम के लोग ?···" अधिकारी का सवाल हुआ।

अरजुनसिंह ने कहा "वह खुद भी ऐब्सेंट है और शायद उनका कोई आदमी भी नही है···"

"हैं क्यो नही ?" धन्ना आगे बढ़ आया, "मैं हूं और यह है विलायत-खान—बैंड मास्टर !"

अरजुन हैरान हुआ। इसका मतलब है कि बिलकुल ही बदल गये दोनों···? अधिकारी ने उन दोनो से रजिस्टर पर हस्ताक्षर लिये।

पेटिया कमरे में पहुच चुकी थी। अधिकारी उस कमरे की व्यवस्था देखने गया।

दो सिपाही आ पहुचे थे। अधिकारी ने लौटकर दोनों उम्मीदवारों के दोनो आदमियो से कहा, "आप लोग पेटिया देख लीजिए—आइऐ !"

पाचों भीतर गये। थोड़ी देर बाद सन्तुष्ट होकर लौटे।

अधिकारी ने कुरसी में धंसते हुए कहा, "अब शुरू करवाता हू··· पाच मिनट और हैं। ठीक नौ बजे से मतदान होना है।"

कोई कुछ नही बोला। अरजुन ठाकुर ने अपनी कलाई घड़ी देखी।

अधिकारी दोनो कान्स्टेबिलों की ओर मुड़ा, "आप लोग 'क्यू' लग वाइऐ···एक आदमी इस कमरे के बाहर रहना चाहिऐ।"

अधिकारी की इच्छा-आदेश अनुसार व्यवस्था हुई।

नौ बजते ही मतदान प्रारभ हो गया।



ठीक नौ बजे डाक्टर ने कहा था, "अब आप बयान ले सकते हैं !"

दरोगाजी अन्दर पहुंचे। लगातार दो दिनों से बयान लेने की कोशिश कर रहे थे, पर मुन्ना की हालत काबू में नहीं थी। डाक्टरों ने इनकार कर रखा था। अब इजाजत मिली।

मास्टर जादीराम उन्हें देखते ही एक ओर खड़े हो गये। मुन्ना का सूखा चेहरा उस पेड़ की तरह गिरा पड़ा था, जिसे न सिर्फ पतझड़ की मार झेलनी पड़ी हो, बल्कि किसी ताकतवर आंधी के झोंके ने धरती पर गिरा भी दिया हो।

दरोगाजी ने मुस्कराते हुए स्टूल खींचा, करीब बैठ गये। दीवान मुबारिकसिंह कागज़-कलम सम्हालकर एक ओर खड़ा हो रहा। दरोगाजी ने पहले कुशल-क्षेम की चार बातें पूछीं, फिर मृदु स्वर में सवाल किया "आपमें और गजुआ में किस घटना के बाद कहा-सुनी हुई ?"

"घटना ?" आश्चर्य से मुन्ना ने कहा, "घटना कैसी ?"

दरोगा ने एक बार सहम के साथ मास्टर जादीराम को देखा जो खिड़की के करीब चुपचाप खड़े हुए थे। चेहरे पर उदासी थी। इस उदासी नें बुढ़ापे को ज्यादा ही उभार दिया था। दरोगा ने अन्त में बात को किनारे पहुंचाया, "मुझे सारा केस मालूम हो चुका है मुन्नालालजी। यह भी मालूम हो चुका है कि इसके पीछे हम लोगों के समाज में फैला जातिवाद है, जो इन्सान-इन्सान में फर्क करना सिखाता है। गजुआ को कल रात हमने मुकुन्दपुर से गिरफ्तार कर लिया है। बयान उसका भी हो गया। बस आपकी तरफ से पूरा मामला लिखा-पढ़ी में आते ही देखिए उसका क्या हाल करता हूं। बेटे को कम-से-कम दो साल सेंट्रल जेल न दिखायी तो अपना नाम खुशवन्तप्रसाद सकसेना नहीं रहने दूंगा !"

"गजुआ को बन्द कर लिया आपने ?" मुन्ना ने पूछा। आवाज़ में हल्की-सी कराह मिली हुई थी।

"जी हां। और आप को जानकर खुशी होगी कि हम उससे सारी बातें कबुलवा भी लेंगे।" दरोगा बोला, "पुलिस के पास इतने फार्मूले होते हैं कि मरीज की आंतों में हाथ डालकर सचाई को निकाल बाहर करें ''अभी तो डण्डा घुमाया नहीं है साब। आपका बयान मिल जाये, फिर देखियेगा करिश्मा···" दरोगा एक पल रुका, कहा, "हां, तो··· जरा बोलिए—मामले की शुरुआत किस तरह हुई।"

"न तो मामला शुरू हुआ साहब, न खत्म हुआ···" मुन्ना ने कहा, "आपको यह किसने बतलाया कि मुझ पर गजुआ ने हमला किया है?"

दरोगा परेशान हुआ। कुछ अस्त-व्यस्त होकर सवाल किया, "मैं समझा नहीं, आप क्या कहना चाहते हैं?"

"मेरा मतलब है कि गजुआ ने मुझ पर कातिलाना हमला किया—यह आपको किसने कहा है?" मुन्ना पूछ रहा था।

"सब कह रहे हैं···और अरजुन ठाकुर ने तो यहां तक जानकारी दी है कि यह सब सकुन के कारण हुआ। गजुआ भी सकुन को चाहता था, आप भी···जाहिर है कि एक म्यान में दो तलवारों वाला मामला बन गया। गजुआ ने गुन्डागर्दी की। उसको तो वह सजा मिलेगी कि उसकी तीन पुश्तें याद रखें। अगर बदमाशों को सजा ही न मिले तो हम लोग किसलिए वरदी पहने बैठे हैं?"

"पर गजुआ ने मुझ पर हमला किया ही नहीं है जनाब!" मुन्ना ने कहा।

"यह आप क्या कहते हैं?" दरोगा को झटका लगा।

"जी हां—मेरा बयान यही है।" मुन्ना के सूखे चेहरे पर भी चमक पैदा हो गयी थी, "उसे आप फौरन छुड़वा दीजिए। वह तो वहां था ही नहीं। जिस आदमी ने मुझपर हमला किया, उसे मैं जानता नहीं हूं। वह कोई नशेबाज था···गजुआ नहीं था ··गजुआ तो बिल्कुल नहीं था!"

"आपको ठीक तरह याद है?" दरोगाजी गंभीर हो गये थे।

"एकदम ठीक तरह। गजुआ और मैं एक ही गांव के हैं। वह भी वहीं

…क अकेला

…है, मैं भी—मैं गजुआ को नहीं पहचानूंगा ?" मुन्ना ने बड़े
…न से कहा।

…इसका मतलब है कि…लोग झूठ बोले हैं।"

…जरूर बोले होंगे, जब मैं जिसे खुद चोट पहुंची है, उसका नाम
…ले रहा हूं—वो कहने वाले को क्या मतलब ?"

दरोगा जी ने निराश होकर दीवान मुबारिकसिंह की ओर देखा।
रुंआसा दीख रहा था।

"ठीक है—तब आप यही बयान नोट करवा दीजिए।"

"कर लीजिए।" मुन्ना ने कहा और मुबारिकसिंह ने बयान नोट
किया। दरोगाजी ने मुन्ना के हस्ताक्षर लिये। गवाही में जादौराम के
हस्ताक्षर लिये गये। अन्त में निराश भाव से उठते हुए दरोगाजी ने कहा
था, "ठीक है मुन्ना बाबू, आपने बदमाश को बचा तो लिया है, पर
भूलियेगा—नहीं सांप पर रहम करने वाले मूर्ख होते हैं। सांप का
स्वभाव नहीं बदलता।"

मुन्ना पुनः मुस्कराया था, "यह क्यों भूलते हैं दरोगाजी कि गजुआ
इन्सान है—सांप नहीं है। उसे बार-बार सांप कहकर दुत्कारियेगा, तो
एक दिन सांप जरूर बन जायेगा।"

"चलो, मुबारिकसिंह …!" दरोगाजी विदा हो गये।

□ □

कान्स्टेबिल ताला खोलने लगा।

गजुआ के चेहरे पर रिरियाहट-सी तिर आयी। अच्छी तर…
जानता था पुलिस के सारे फ़ार्मूले। अब फार्मूलों का उपयोग होगा…
और उस उपयोग के बाद भी गजुआ उसी झूठ पर कायम रहे जिस…
पहले था कि उसने हमला नहीं किया—कठिन बात थी। गजुआ के …
में भय की झुरझुरी बिखर गयी थी।

कान्स्टेबिल ने दरवाजा खोला और कहा, "बाहर निकल !"

सिटपिटाया-हुआ-सा गजुआ बाहर निकल गया। उसे खीझ आ रही थी ठाकुर अरजुनसिंह पर। गजुआ ने न जाने उसके लिए कितनों के सिर फाड़े हैं, किन-किन के बच्चे रुलाये हैं, किस-किस को जान लेवा धमकियां दी हैं, और अब उसकी परछायी का भी ठिकाना नही है। सोचता था कि अपने आदमी की मदद करेगा। तन-मन-धन, वैसे ही लगा देगा, जैसे गजुआ लगाता रहा है—पर कुछ घन्टे में ही समझ गया है कि गलतफहमी थी। साफ हो गयी। चुनाव हो जाने के बाद कौन किसे पूछता है? वही हाल गजुआ का हुआ है।

गजुआ को अनायास ही इस खयाल के साथ अपने आप पर खीझ हो आयी थी। किसलिए वह इस तरह के लोगों का साथ थामे रहा? क्या सिर्फ रोटी के कुछ टुकडो और शराब के दौरो के लिए··? किसलिए उसने अनाथ मुन्नालाल के सिर पर लाठी घुमादी? जादौराम के विरोध के लिए···? या मुन्ना द्वारा गजुआ का अपमान किये जाने पर? या सिर्फ अरजुन के प्रति अपने आपको वफादार सिद्ध करने के लिए?

उस आदमी के प्रति वफादारी—जो न अपने आदमियों के लिए वफादार है, न अपने गांव के लिए वफादार है, न अपने काम के लिए···?

गजुआ ने बहुत बुरा किया!

गजुआ बेबसी से सीखचोवाले कमरे मे यहां-वहां नजर दौड़ाता रहा। क्या इसका दड सिर्फ इतना ही है कि गजुआ महीने-दो महीने की जेल काटे···?

शायद नही। असली दड तो गजुआ भुगत रहा है। आत्मा से मिलनेवाला दंड। यह पछतावा और अहसास कि गजुआ ने एक बुरा काम किया। एक निहत्थे गरीब आदमी के सिर पर लाठिया बरसायी।

दरोगाजी ने जब पूछा, तब गजुआ बदल गया था। बोला था, "नही सरकार! मैं तो बिरादरी मे आया हुआ था···भला मेरी और मुन्ना की क्या दुश्मनी है कि मारपीट करूं गा?"

दरोगा ने दनादन् दो-तीन थप्पड गजुआ के मुह पर जमा दिये,

मज़ादे ! झूठ बोलता है। गांव के दस लोग गवाही दे रहे हैं कि तूने
के सामने मुन्ना पर लाठी से हमला किया—सो क्या झूठ है ?"
"पर सरकार···गवाही तो मेरी भी हैं।" गजुआ बोला, "इस गांव के
र लोग कह रहे हैं कि मैं दो दिन से गांव में ही हूं—तो फिर यह कैसे
सकता है कि एक ही वखत मैं गौसपुरा में भी था, और मुकन्द पुर
में भी ?"

और दरोगा के लिए उलझन खड़ी हो गयी थी। गजुआ के रिश्ते-
दारों और गांववालों ने गवाहियां दी थीं कि गजुआ पिछले दो दिनों से
उनके गाँव में ही है। पर दरोगा समझ रहा था कि वदमाशी है और
गजुआ भी जानता था कि दोनों दांव खेल रहे हैं···यह सब ऐसे ही था
कि सरासर कत्ल करके कहा जाए। कि सुवूत नहीं है। कत्ल किया है,
पर सावित करो कि क़तल किया है।

दरोगा ने एक क्षण सोचकर मुवारिकसिंह की ओर देखा था, "वन्द
करो साले को ! शक में वन्द कर दो···फिर गवाह-सूवूत देखे जायेंगे।"

और पुलिस को अधिकार है—शक-शुवह में चौवीस घन्टे के लिए
किसी को भी भीतर कर सकते हैं···

हवालात में लाकर कुछ और थप्पड़वाजी हुई, किन्तु गजुआ अपने
पहले वयान से नहीं डिगा। डिगने का मतलव होगा—फंसना। जानता
था कि ज्यादा मारपीट होगी नहीं। दरोगा को याद होगा इससे पहलेवाले
दरोगा ने मुलजिम की पिटायी की तो मर गया था···और जव मर गय
तो दरोगाजी को लेने के देने पड़ गये थे। उल्टे खुद सफाइयां देते घ
रहे थे कि उन्होंने कत्ल नहीं किया। यह दूसरा दरोगा आया था थ
पर। भूला नहीं होगा कि पहले वाले के साथ क्या वीती है। गज
निश्चिन्त था कि वह उस सीमा तक नहीं जायेगा।

वह गया भी नहीं था। पर वाहर जाते-जाते इतना जरूर
गया था कि वह गजुआ को छोड़ेगा नहीं। थोड़ी देर में मुन्ना का
लेकर आयेगा···और जव मुन्ना ही कह देगा कि उस पर गजु

हमला किया, तब गजुआ लाख सफाइयां देता रहे—कुछ नहीं होगा। अच्छी खासी जमानत लगेगी गजुआ की। और गजुआ इस पर भी निश्चिन्त था कि अरजुन ठाकुर जरूर गजुआ की जमानत का बन्दोबस्त करवायेगा···! पर वैसा कुछ नहीं हुआ था।

हुआ कुछ उलटा ही। गजुआ समझा कि शायद ठाकुर आ पहुंचा है···इसीलिए हवालात का दरवाजा खुला है·· पर जब दरोगा के कमरे में पहुंचकर देखा कि कोई नहीं है—तब निराश हो गया। समझा कि पुलिस कोई नया चक्कर चलाने को है ··।

"बैठ!" दरोगा की कलफ-लगी आवाज कमरे में गूंजी।

सिटपिटाया हुआ गजुआ धरती पर बैठ गया—उकड़ू मासूम निगाहों से दरोगा की चढ़ी भवें और तने हुए चेहरे को देखने लगा। लग रहा था कि इस चेहरे के पीछे कुछ सलाखें हैं—मांस में खुपकर मवाद बाहर खींच लाने वाली सलाखें। अभी पल भर में गजुआ के भीतर घुसी सारी बदमाशी को उकेर निकालेंगी।

"यहां अंगूठा लगा।" मुबारिकसिंह एक कागज लेकर आ पहुंचा।

गजुआ ज्यादा घबरा गया, "पर सरकार···आप तो जानते ही हैं कि मैं लिखा-पढ़ा नहीं हूं। कागज पर अंगूठा लगाऊं, उससे पहले ··"

"बहुत कानून छांट रहा है हरामी···?" दरोगा और ज्यादा बिगड़ा, एक नजर मुबारिकसिंह पर डाली, फिर कहा, "देखा दीवानजी, यह है बदमाश और वह है एक भला आदमी·· जिसने इस स्साले के जुल्म को भी पी लिया और इसकी रिहाई का रास्ता भी साफ कर दिया।"

"कमीन तो कमीन ही होता है, साहब!" दीवानजी बोले, फिर कागज एक झटके से गजुआ के सामने रखा, कहा, "अंगूठा लगाता है कि नहीं· ·? वरना ठीक करूं तुझे?"

कांपकर गजुआ ने मुबारिकसिंह की नुकीली मूछों, बगल में दबे लह-राते बेंत और होंठों के गिर्द खिंची खाइयों-जैसी लकीरों को देखा और चुपचाप उस जगह अंगूठा लगा दिया जिस जगह पुलिसवाले चाहते थे।

समझ गया कि यहां अपना राग छेड़ना ठीक नहीं होगा। उसे अपनी गलती का अहसास भी हुआ—कैसा पागल हुआ था ? यह तो ऐसे ही हुआ जैसे बाघ के सामने खरगोश गरजा हो···उसे दुःख था—बेकार ही उसने वह सब कहा।

दरोगा ने आदेश दिया, "खोलदो स्साले को !"

गजुआ स्तब्ध हो गया।

मुबारिकसिंह ने उसके हाथ खोले और कहा, "अब जा यहां से···! और उस भले इन्सान के पैर छू, जिसकी जान लेने में तूने कसर नहीं छोड़ी थी और जिसने सब जानते-बूझते हुए भी तेरा नाम नहीं लिया। तुझे बचा दिया···! तू कोई आदमी है ? तू तो कुत्ता है, जिसने जूठे टुकड़ों पर ईमान बेचा···!"

गजुआ का मुंह अविश्वास और आश्चर्य से फैला ही रह गया ? इसका मतलब है कि मुन्ना ने बयान में गजुआ का नाम नहीं लिया ? पर यह कैसे हो सकता है ? गजुआ से उसकी बातचीत हुई थी मुन्ना कैसे भूल सकता है, गजुआ के शब्द, कहासुनी, फिर लाठी का प्रहार·· ?

दरोगाजी कह रहे थे, "गजुआ—अगर सचमुच तू अपनी मां का जाया है तो जाकर मुन्ना से माफी मांगना। एक तू है, और एक मुन्ना का बड़प्पन है, जिसने तेरा नाम न लेकर यह साबित कर दिया है कि तेरे गांव में वोट का अच्छा हक़दार मास्टर जादौराम ही था···।"

गजुआ के लिए अब विस्मय नहीं रह गया था—शेष रही थी। सिर्फ लज्जा। लज्जा, जिसके बोझ के कारण गजुआ का सिर एकदम झुका रह गया था।



हवालात से बाहर आया। पांच मिनट बरामदे में बैठा-बैठा बीड़ी पीता रहा···चुपचाप। लग रहा था कि मुन्नालाल ने उसकी सारी बहादुरी पर थूक दिया है। सारी लठैती भलमनसाहत की पहली मार में

ही हवा हो गयी है। ऐसे इन्सान को गजुआ ने चोट पहुंचायी? उसका लहू बहाया···? छिः छिः!

और यह सब एक बेईमान के लिए?···गजुआ अपने आप में कई-कई बार लाठियों की चोटें खाता और कराहता रहा था···

एक ओर कुर्सी में धंसा हुआ मुबारिकसिंह कुछ सिपाहियों से बातचीत कर रहा था। विषय—चुनाव। गजुआ अनजाने ही सुनने लगा··· मुबारिकसिंह कह रहा था, "एक वह लड़का है—मुन्ना। मास्टर की खातिर जान जोखिम में डाल दी। पूरा धरम निबाह दिया भाई···"

"मास्टरजी भी कम नहीं है दीवान साहब।" एक और सिपाही बड़बड़ाया था, "ज़रा उस आदमी की भलमनसाहत तो देखो·· चुनाव इधर चल रहा है और वह मुन्ना के पास अस्पताल में बैठे हैं। घर-द्वार सब रहन हो चुका···बरबाद हो गये, पर धरम पर अब भी डटा हुआ है। वाह-वाह!···"

"मगर चुनाव में जीतेगा ठाकुर···!" मुबारिकसिंह ने कहा था।

"वह तो है ही···पैसा, बदमासी, बेईमानी, सरकारी वजन क्या नहीं है उसके पास?···जरूर वही जीतेगा। पर बात देखी जाये तो धरम की है।"

दूसरे सिपाही ने बीड़ी सुलगायी और घृणा से गजुआ को देखते हुए कहा, "फिर इस तरह के गुन्डे-बदमाम भी तो ठाकुर ने ही पाले हैं, जो अपना ईमान धरम बेचकर स्साले अपनी नीचता दिखाते हैं।"

गजुआ हर शब्द पर थप्पड़ खाता गया···ज्यादा आहत होता गया······।

"ठाकुर की बदमासी तो देखो। बेचारी सकुन ने उसका क्या बिगाड़ा था?" दीवान मुबारिकसिंह ने कहा, "उसे तो अकारण ही लपेट लिया यार!···एक तो धमकी देकर उसे गाव से भगा दिया, उस पर इस हरामजादे की बदमाशी से बचने के लिए उसकी इज्जत को लेकर अफवाह फैलायी···राम-राम!"

गजुआ चौंका—"सकुन ?···सकुन से मामले का क्या लेना देना?"

एक सिपाही गजुआ की ओर मुड़ा, "क्यों रे, क्या ये सच्ची बात है कि मुन्ना को तूने सकुन की वजह से मारा था ?"

गजुआ ने आश्चर्य से सवाल किया, "सकुन ?···सकुन कहां से आयी इस मामले में हुजूर ?"

"वही तो।" मुबारिकसिंह बोला, "मैं तो उसी वखत समझ गया था जब अरजुन ने बयान दिया कि स्साला झूठ बोल रहा है।"

"क्या कहा था ठाकुर ने ?" गजुआ ने साहस किया। पूछ बैठा।

मुबारिकसिंह ने गहरी सांस ली। कहा, "उसने कहा कि सकुन को लेकर तुम दोनों में मारपीट हुई थी। आसनाई का चक्कर था। और क्या ?···अपना नाम बचा लिया जिससे लोग समझें कि मुन्ना और तेरी मारपीट में चुनाव का चक्कर नहीं, तुम दोनों की निजी दुश्मनी है !"

गजुआ चकित रह गया !···इतना बड़ा झूठ ? सकुन बेचारी का तो कहीं कोई जिकर ही नहीं था···? पूछा, "ये सब किससे कहा सरकार ?"

"अबे कहता किससे ? सक्सेना साहब को बयान लिखवाया है उसने।" मुबारिकसिंह दीवान ने बताया, "तुम लोगों को सरम भी नहीं आती। अपने स्वार्थ के लिए गांव की बहू-बेटियों की आबरू पर कीचड़ उछालते हो !···राम-राम !"

गजुआ का चेहरा तमतमा आया। जवाब नहीं था उसके पास··· और जवाब इन लोगों को देना भी बेकार है !···उठा और गांव की तरफ चल पड़ा। अब पछतावा जिस्म में सुलगन बनकर फैल गया था···जो हुआ—उसे गजुआ बर्दाश्त कर सकता था। कर भी गया था···मगर उसके कारण ठाकुर ने एक लड़की के चरित्र को उछाला—यह उसके लिए असह्य था !

किन्तु इस सुलगन का करेगा क्या ? यह समझ में नहीं आ रहा था।

नौ

सकुन लौट आयी है—ये खबर धन्ना ने विलायती को दी। सारे दिन वोट पड़ते रहे थे। अनुमानों का दौर चलता रहा था'''कहा नहीं जा सकता था कि कौन जीतेगा?

एस० डी० ओ० ने पेटियां सील करदी थीं। दोनों पार्टियां उपस्थित रही थीं उस समय। रात आठ बजे के बाद धन्ना और विलायती वापस हुए थे। पिछले एक माह से गांव के आसपास पर फैली रही चख्-चख्, शोर-शराबा, घटनाएं, दुर्घटना और अफवाहों का दौर-दौरा अचानक इस तरह शान्त हो गया था जैसे सब कुछ रीत चुका हो। बाढ़ के बाद का-सा सन्नाटा।

दोनों ने सोचा था—अगले दिन मुन्ना को देखने जायेंगे। मास्टरजी तक एक आदमी दौड़ाकर खबर भिजवादी थी कि वोट गिर गये हैं। मुकाबला बराबर का रहा। अब सारी कहानी पेटियों में बंद है।

यह भी कहा था कि लड़का पूछ आये—मास्टरजी क्या कहते हैं?

लड़के ने दस बजे रात लौटकर खबर दी थी। मास्टरजी कुछ नहीं बोले।

"और मुन्ना?"

"मुन्ना तो बार-बार बेहोश हो जाता है," लड़के ने कहा, "बीच में दो-ढाई घन्टे को होश आया था'''फिर बेसुध हो गया!"

चिन्ता बढ़ी, पर इतनी रात को जाने का फायदा न था। मुन्ना के पास पहुंचकर भी उस तक नहीं पहुंचा जा सकेगा। सरकारी नियम लगा हुआ है। मिलने-देखनेवालों का एक वक्त निश्चित होता है।

लड़के ने दूसरी खबर दी थी, "सकुन लौट आयी है।"

"तुझसे किसने कहा?" धन्ना ने सवाल किया।

"अभी, थोड़ी देर पहले मैंने खुद देखा। मोटन के यहां से मिट्टी का तेल लेकर आ रही थी···बात हुई तो बोली कि अभी ही आयी है।"

"तूने बतलाया कि मुन्ना पर गजुआ ने चोट की?"

"नहीं। उत्ती बात नहीं हुई।" लड़के ने कहा। लौट गया। धन्ना ने कमरे में लेटे विलायती को ख़बर पहुंचायी। उपेक्षा से उसने कहा, "लौट आयी है तो लौट आने दो—क्या फरक पड़ता है?"

धन्ना चुप रह गया। विलायती की उपेक्षा समझ सकता था। जाहिर है कि अपरोक्ष रूप से कह रहा है कि उसे सकुन के मामले में कोई रुचि नहीं है।

विलायती ने करवट बदली। एक बीड़ी सुलगायी। दो कश लिये, फिर कहा, "उसने दगा किया। वोट डालने भी नहीं आयी···अब उससे हमारा क्या लेना-देना?"

"वह तो ठीक है यार, पर दगा तो हमने भी किया था···" धन्ना ने उत्तर दिया, "वख्त पर ईमान ने चेता दिया···उस बिचारी के साथ भी कोई ऐसा ही चक्कर रहा होगा···"

"पर उसे तो वख्त पर अक्ल भी नहीं आयी," विलायती ने उत्तर दिया। धन्ना को चुप हो जाना पड़ा।

विलायती ने पुनः करवट बदल ली। जाहिर था कि उसे सकुन के बारे में बात करने की इच्छा नहीं है। धन्ना उठ पड़ा, "ठीक है···मैं भी घर चलता हूं। सुबेरे मुन्ना को देखने चलेंगे।"

विलायती ने उसी तरह करवट बदले, मुंह घुमाये हुए कह दिया, "ठीक है" धन्ना बाहर आ गया।

चांदनी थी। बदन में थकान इस तरह समायी हुई थी कि इच्छा होती थी तुरत जाये और लेट रहे। पर सकुन से मिलने की इच्छा हो रही थी। एक बार उसे बतलाये तो सही कि उसके जाने के बाद कितना बड़ा काण्ड हुआ···फिर यह भी कि सकुन किस तरह और क्यों चली गयी थी—जानने की हल्की-सी इच्छा मन के किसी कोने में कुलबुला रही थी।

पर इतनी रात सकुन का दरवाजा खटखटाना ठीक होगा? धन्ना ने अपने भीतर चेतावनी का हल्का-सा झटका सहा, पर मन नहीं माना—चल पड़ा।

सकुन को अब तक मालूम नहीं होगा कि उसके जाने के बाद किस तरह उसका नाम उछाला गया?···किस तरह मुन्ना पर हमला हुआ? ···किस तरह धन्ना और विलायती बदले?···

यह सब कहने-जानने की इच्छा धन्ना के भीतर बलवती हो उठी थी।

सकुन को कुछ पता लगा था, कुछ नहीं। धुंधलके की शुरुआत के साथ जब वह गाव में आयी ही थी, एक-दो महिलाओं ने जो वोट देकर आ रही थी, उसे देखकर आश्चर्य व्यक्त किया था। एक ने पूछा भी था, "तू वोट के टैम नहीं आयी?"

"आ नहीं पायी।" सकुन ने कतराते हुए कह दिया था।

"तू चली गयी तो यहां गाव में गजुआ-मुन्ना में मारपीट हुई···पुलिस आयी, और जाने क्या-क्या होता रहा···" किसी महिला ने कहा था, किन्तु सकुन ने फिर भी दिलचस्पी नहीं जतलायी। कहा, "चुनाव में तो ये सब होता ही है।" बात आगे बढ़ती, पर सकुन आगे बढ़ गयी थी। महिलाएं चली गयीं।

सकुन ने चार दिन बाद घर खोला। सब धूल-धूल हो चुका था। जल्दी-जल्दी सफाई की फिर मोटनदास के यहां से मिट्टी का तेल खरीदकर

भूख थी, पर रोटी वनाने की इच्छा नहीं हुई। आठ किलोमीटर
लकर आयी थी। सोचा—सो जाये। अगली सुवह देखा जायेगा…
हिला से मिला समाचार मन में कभी-कभी अस्तव्यस्तता पैदा कर
था…कह रही थी कि मुन्ना और गजुआ में मारपीट हुई। मालूम
कितना क्या झगड़ा हुआ होगा। एकाध वार मन भी हुआ था कि
स्टरजी के यहां पहुंचकर देखे—क्या गड़वड़ हुई है? पर साहस नहीं
आ। मुन्ना, मास्टरजी या श्यामा का सामना किस तरह कर सकेगी? जी
सोस लिया। लेट रही।

आंखें मूंदीं। दरवाज़ा भीतर से वन्द कर लिया था। लालटेन की
वत्ती धीमी कर दी थी। अव शायद नींद आ जायेगी…पर कई करवटें
वदलीं, नींद नहीं आयी। मालूम नहीं चुनाव का क्या रिजल्ट रहेगा?
शायद मास्टरजी बुरी तरह हार जायेंगे! कितने अकेले हो गये थे वेचारे
मुन्ना के अलावा उनके पास कोई रहा ही नहीं था…फिर-फिर वही
सव याद आने लगा। किस तरह सव ने मिलकर जवरदस्ती इस
चुनाव में मास्टर जादौराम को खड़ा किया था और किस तरह एक-एक
कर किनारा काटा था…शायद जीवन भर सकुन उनका या मुन्ना का
सामना नहीं कर सकेगी।

उनका तो दरकिनार, शायद सकुन अपने आपका सामना भी नहीं
कर सकेगी।

आंखें फिर खुल गयीं। मालूम ही नहीं पड़ा कि कव खुलीं। वस
एकटक आले में रखी लालटेन की धीमी लौ की तरफ देखने लगी…
सकुन तो इतनी कायर सावित हुई कि अपना वोट देने के लिए भी ग
में नहीं आ सकी!

कुन्डी खटकी…

सकुन ने दरवाज़े की ओर देखा। होठ खुले, "कौन है?"

"मैं—धन्ना!"

"ठहरो। खोलती हूं।" सकुन उठी। लालटेन की लौ वढ़ायी

सम्भाले और दरवाजा खोल दिया । विस्मय से धन्ना को घूरते हुए पूछा "क्या हुआ ?"

"तुमसे बात करनी है।" धन्ना ने उसी तरह कड़क उत्तर दिया।

"इस वखत !" सकुन को अच्छा नहीं लगा।

"हां, इसी वखत।"

सकुन ने एक लम्बी सांस ली। कहा, " आओ।" पीछे हो गयी। धन्ना आगे बढ़कर पलंग पर बैठ गया।

दरवाजा उसी तरह खुला हुआ था। सकुन ने एक ओर खड़े रहकर सवाल किया "क्या बात है ?"

"तुम्हें मालूम है कि मुन्ना घायल हालत में अस्पताल में है?" धन्ना ने पल भर में ही तय कर लिया था कि कहां से किस तरह बात करनी है। अनुमान था कि सकुन को यह सब मालूम नहीं होगा। यदि हुआ भी तो उस तरह नहीं होगा जिस तरह धन्ना सुनाने वाला है —

सकुन का मन एकदम दूध की तरह फट गया। घबराकर पूछा "क्या हुआ उसे ?"

"गजुआ ने कपाल फोड़ दिया उसका।" धन्ना ने कहा, "तीन दिन हो गये। मास्टरजी हस्पताल में ही है। थोड़ी देर को होश आता है फिर बेसुध हो जाता है। इसी तरह चल रहा है..."

सकुन बुरी तरह परेशान हो गयी। पूछा, "पर हुआ क्या था ? किस तरह ? गजुआ किस के लिए ..."

"जरा शान्ति से पांच मिनट बैठ, फिर सब बतलाता हूं। इसीलिये आया भी हूं, नहीं तो इस टैम आने की जरूरत ही क्या थी?" धन्नालाल ने कहा, फिर आदि से अन्त तक सारी बातें कह सुनायी।

सकुन के भीतर दुख और पछतावे के जाने कितने झरने आये। धन्ना सब कुछ कहने के बाद थोड़ी देर चुप रहकर उसका चेहरा दे

वह एकदम उदास ही नहीं, रूआंसी हो गयी। धन्ना ने कहा सब से गलतियां हुई सकुन···मास्टरजी को जो धोखा दिया—उस ाप सारी जिन्दगी सालता रहेगा। चाहे जितनी वार गंगा नहा ले दोष नहीं मिटने का।

सकुन के पास कोई जवाब नहीं था।

"रिजल्ट कल आयेगा···देखो, क्या होता है।" धन्ना ने कहा, और उठ पड़ा "अब चलता हूं।"

सकुन ने पूछा, "मुन्ना को देखने नहीं गये तुम?"

"नहीं। हिम्मत नहीं हुई···" धन्ना ने जवाब दिया, "अब सोच र हैं कि सुबेरे जायेंगे।"

"मुझे ले चलोगे?" सकुन का गला भरा गया था।

धन्ना ने चौंककर देखा—एकदम कुछ कह नहीं सका। विलायती का डर था। मालूम नहीं, क्या कहे?···हो सकता है कि सकुन से भेंट को लेकर विगड़ ही पड़े, पर इनकार नहीं कर सका। देखा कि सकुन की आंखों पर पनीलापन था। बोला, "हां, जाते वखत तुम्हें वुला लेंगे···"

सकुन ने जवाब नहीं दिया।

धन्ना दरवाज़े से बाहर आया। वोला, "विल्कुल सवेरे चलेंगे। दुप-हर तक लौटना पड़ेगा। रिजल्ट जो निकलने वाला है···तू तैयार ह जाना सवेरे।" फिर उसने उत्तर की प्रतीक्षा नहीं को। तेज़-तेज़ चाल चल पड़ा।

सकुन अकारण, विचारहीन होकर उसे जाते हुए देखती रही··· तक, जब तक कि वह गांव के गलियारे में पाटौरों की ओट में ग नहीं हो गया।

दस

इरादा था कि तुरत वापस हो सकेंगे, पर वहां जो कुछ सुनने-जानने को मिला, उसके बाद वापसी असंभव थी।

तीनों अस्पताल के कारीडोर में आ खड़े हुए थे। पहल करके कौन कमरे में जाये—यह सवाल था। तीनों ही एक-दूसरे से अपेक्षा कर रहे थे कि पहले जाये। जाते ही मास्टरजी और मुन्ना का सामना होगा। उस पल क्या बीतेगी उस पर जो उनकी आंख से आंख मिलायेगा?

और मास्टरजी या मुन्ना पर क्या बीतेगी!···मालूम नहीं, वे क्या कहें? हो सकता है कि दुत्कारकर बाहर निकाल दें···यह हो भी सकता है कि वे कुछ न कहें। ऐसी स्थिति में वह क्या करेगा—जो सामने होगा?···

तरह-तरह की बातें, तरह-तरह के विचार···तीनों एक-दूसरे का चेहरा देख रहे थे। रास्ते भर कहते आये थे कि गलतियां हुईं, पर उसका मतलब यह नहीं है कि मास्टरजी या मुन्ना हमें हमेशा के लिए दुत्कार दें···आज जो उनके पास पहुंचकर क्षमा मांगेंगे—क्या यह प्रायश्चित कम होगा?

विलायतखान ने कहा था, "मैं तो जाते ही पैर पकड़ लूंगा। कहूंगा कि छिमा कर दो महाराज!···आपने बच्चे की तरह पढ़ाया-लिखाया, किसी काबिल बनाया है कि दीन-दुनिया समझने लायक बुद्धि आ गयी है?

बहुत बार गलती हो गयी है, तब भी आपही का हूं। कहां जाऊं...?"
...र गलती हो गयी है, तब भी यही करूंगा।" धन्ना ने कहा था।
...कुन चुप थी। जानती थी कि कुछ नहीं कह सकेगी...एक शब्द भी
बाहर नहीं आयेगा। चुपचाप गरदन झुकाये खड़ी रहेगी। वह सब
...ह लेगी जो कहा जायेगा। न बोलकर भी क्या इस तरह सकुन
कुछ नहीं कह डालेगी ?

पर इस कारीडोर में आकर सबके इरादे, सारा सोचा हुआ हवा हो
...ा...एक नया सवाल पैदा हो गया था—कौन पहले जाये ?

डाक्टर, नर्सें बार-बार दौड़-धूप करते हुए नज़र आ रहे थे...जितनी
बार भीतर आये-गये थे—उससे लग रहा था कि पता नहीं क्या कुछ
गटशट चल रही है। सकुन बोली थी, "वह सब तो बाद में देखना...
पहले यह तो जानकारी करलो—तबीयत कैसी है ?"

विलायत आगे बढ़ गया। मुन्ना के कमरे से एक नर्स बाहर आ रही
थी। उसके पास पहुंचकर सहमते हुए सवाल किया, "बहनजी, मुन्ना-
लाल का क्या हाल है ?"

नर्स जल्दी में थी। कहा, "अनकान्शस है।" विलायती और कुछ पूछ
सके, इसके पहले ही तेजी से नर्स दूसरी ओर चली गयी।

परेशान विलायती सकुन और धन्ना के पास आ खड़ा हुआ। कहा,—
"अंग्रेजी में जाने क्या कह गयी...मेरी समझ में तो कुछ आया नहीं।"

"कहा क्या था" सकुन ने सवाल किया।

"अनकान्शस !" विलायती बोला। चेहरे पर चिन्ता और नासमझी
का भाव था।

"तू रहने दे—मैं पूछता हूं।" इस बार धन्ना आगे बढ़ा। बिलकु...
दरवाज़े पर जा खड़ा हुआ। हौले से उढका हुआ दरवाज़ा खोला अ...
भीतर झांका—मास्टरजी खिड़की के पास खड़े नज़र आये। रूआं...
धन्ना परेशान हो उठा। और दरवाज़ा ठेला तो मुन्ना का पलंग न...
आया। कोई मशीन लगी हुई थी। इर्द-गिर्द डाक्टर, नर्स...सभी ग...

बुदबुदाते हुए।

इसका मतलब है कि मामला गंभीर है···धन्ना के दिल में खलबली होने लगी। एक नज़र एक ओर खड़े विलायती और मकुन के चेहरों पर दौड़ायी। वे भी बहुत घबराये हुए लग रहे थे। धन्ना ने ज्यादा सोचा नही। कहा, "आओ, मेरे पीछे···" फिर दरवाज़ा धकेलता हुआ भीतर घुसा।

डाक्टर ने चौंककर उसे देखा, फिर अंगुली के संकेत से ही बाहर रहने को कहा। मास्टर जादोराम लपके हुए आये और धन्ना को लगभग धकेलते हुए फुसफुसाये, "आओ, बाहर ही आओ मेरे साथ···"

वे सब सिटपिटाये हुए, लड़खड़ाते-से पीछे-पीछे होकर कारीडोर में आ गये। विलायती ने तुरत पैर पकड़ लिये, "मुझसे भूल हुई थी मास्टर जी। माफ कर दे···"

"यह सब छोड़ो···! मुन्ना की हालत बहुत खराब है।" मास्टरजी भर्राए गले से बोले, "डाक्टर लोग कोशिश कर रहे हैं···।"

वे तीनों एकदम खाली हो गये। पुतलियों की चमक गुम हो गयी और उसकी जगह एक रेगिस्तान बिखर गया। खुरदरा और खाली···

कुछ पल की खामोशी के बाद विलायती ने कहा, "पर यह हुआ कैसे साहब···? अभी कल रात गजुआ आया था मेरे पास···कह रहा था—मुन्ना ठीक हो रहा है। सुनते हैं उसने पुलिस में बयान भी दिया था···?"

"हां···" मास्टरजी ने कहा, "रात कुछ टांके खुल गये सोते में—मालूम ही नहीं पड़ा। सवेरे देखा तो लहू रिस गया था तमाम। आक्सीजन लगायी गयी है। थोड़ी देर बाद खून भी चढ़ायेंगे···पर खतरा है। सवेरे से डाक्टरों ने चैन नही ली।"

मकुन समझ सकती है—कितना गंभीर हो गया मरीज़···आक्सीजन, खून चढ़ाना, यह सब जिन्दगी के आखिरी दौर का मामला होते हैं··· आंसू छलछला आये। मास्टरजी देख रहे थे। बोले- "हिम्मत से काम लेना चाहिए बेटी···भगवान सब ठीक करेगा। भगवान सब···" हिम्मत

रहे थे, पर खुद रो पड़े।
टरजी के शेष संवाद के शब्द गुम हो गये।
भी रुंआसे खड़े थे। शब्दहीन। पर भीतर ही भीतर करुण
र करते हुए।
हम एक बार उसे देख सकते हैं मास्टरजी ?" धन्ना ने सवाल
।
"पूछता हूं..." कहते हुए मास्टर जी पुनः भीतर गये। सकुन,
ायत और धन्ना बिना कुछ बोले कारीडोर में टहलते रहे। उनके
माग खाली हो चुके थे, मन पर निराशा और दुःख की एक बदली छा
यी थी।
सहसा उन तीनों ने चौंककर देखा—डाक्टर और नर्स बाहर आ
रहे थे। वे थके हुए थे। बदहवास थे।
मास्टरजी दरवाजे पर आये और उन्होंने तीनों को भीतर आने का
संकेत किया। वे सहमते हुए धीमे कदमों से एक-एक कर भीतर पहुंचे।
सफेद चादर ओढ़े हुए मुन्ना खामोश लेटा हुआ था। उसकी आंखें
बन्द थीं। नाक पर मास्क लगा हुआ था जो ऑक्सीजन सिलेन्डर से
जुड़ा था... वे टकटकी बांधे उसे देखते रहे...दिल, दिमाग से खाली होकर
—बुतों की तरह वे खामोश खड़े हुए थे।
कोने में खड़े मास्टर जादीराम की पुतलियां फिर से छलछला आयीं।
मुन्ना की सांस धीमे-धीमे चल रही थी।
डाक्टर और नर्स फिर आ पहुंचे। तीनों पुनः बाहर निकल आये।
थोड़ी देर बाद मास्टरजी भी बाहर आ पहुंचे। वे चारों कारीडोर में एक
ओर बैठ रहे—बातों से खाली।
गजुआ ने जब कारीडोर में प्रवेश किया, तब भी वे खामोश थे...
उसे देखकर भी खामोश ही रहे। गजुआ बहुत घबराया हुआ था। उसके
चेहरे पर थकान और बदहवासी थी।
धन्ना का जी हुआ कि पूछ ले—'क्या रहा चुनाव परिणाम?'

शब्द होठों में ही दबे रह गये। अब पूछना न पूछना व्यर्थ ही लग रहा है। आखों के सामने मुन्ना का मास्क लगा हुआ चेहरा उभर आया…

गजुआ ने खुद ही कहा, "फैसला हो गया, मास्टरजी…! एक वोट से हार गये आप।"

एक पल के लिए विलायतखान का मन हुआ था कि उठे और गजुआ को गरदन से पकड़कर बाहर खीच ले जायें और फिर दनादन…पर जबड़े भीचकर रह गया। यहा यह सब नही हो सकता…और अब इस सब का लाभ भी क्या है।

गजुआ की ओर मास्टर जादोराम ने देखा उसका चेहरा सपाट था। भावहीन। उसी तरह, जिस तरह गजुआ के शब्द सुनने से पहले था। सकुन, धन्ना और गजुआ उन्हे देख रहे थे।

सकुन के भीतर पछतावे की लकीर और गहरी हो गयी—अगर वह भी वोट डालने आ गयी होती तो पलडा बराबर का हो जाता।

गजुआ उत्तर न पाकर चुपचाप एक ओर बैठ रहा। मास्टरजी उठे और भीतर चले गये। मुन्ना सामने लेटा हुआ था। डाक्टर के चेहरे पर सुबह के बाद पहली बार हल्की-सी मुसकान उभरी थी…मास्टरजी के पिटे हुए चेहरे को देखते हुए डाक्टर ने उन्हें दिलासा दिया, "खतरा कम हो गया है, मास्टर साहब! ईश्वर चाहेगा तो सब ठीक हो जायेगा।"

मास्टरजी के होठों पर चमक पैदा हुई। मुन्ना के शरीर मे खून चढ़ाया जाने लगा था। मास्टरजी ने शाति की एक सास ली। बाहर आये। उन सभी ने घबरायी निगाहो से उन्हे देखा। मास्टरजी मुसकराते हुए सामने जा खडे हुए, "अब खतरा कुछ कम हुआ है।"

उन सभी के भीतर अनायास ही महक बिखर गयी…कुछ लहलहा उठा। सरसो के खेत-जैसा अहसास। विलायत ने मन ही मन कुरान की एक आयत पढ़ी। गहरी सास लेकर धन्ना बुदबुदा पडा—'हे भगवान्!…तेरी किरपा…' सकुन के भीतर की खुशी पलकें तोडकर बह आयी जिसे उसने आचल मे छुपा लिया। गजुआ मासूम बच्चे की तरह एक ओर बैठा हुआ था।

धन्ना ने बडबड़ाकर कहा, "मास्टरजी, एक ही मलाल रहेगा…तक

क वोट से साथ नहीं दिया। मुन्ना का लहू अकारथ…"
ागल हुआ है तू ?" मास्टरजी ने जवाब दिया, "मैं तो कहता हूं,
मुन्ना की ही देन है—एक अकेले की देन। तुम सब को कमा लिया
। लहू कहां अकारथ हुआ ?" वात पूरी करने से पहले पुनः मुन्ना
मरे की ओर ध्यान चला गया—नर्स जा रही थी। मास्टरजी पुनः
र जा पहुंचे।

धन्ना ने कहा, "एक वोट की हार ऐसे ही हार नहीं मानी जा
कती !"

"पर हार तो हुई ही है…"विलायती ने कहा।

"नहीं।" धन्ना वोला, "गिनती फिर से करवायेंगे।"

"वह सव वाद की वात है।" सकुन वड़वड़ायी, "अभी तो मुन्ना का
ध्यान लगा है।" वे वतियाते किन्तु मास्टरजी पुनः आते दीख पड़े। चाल
में ज्यादा दम-खम दीख रहा था। मास्टरजी उनके पास आकर वैठ रहे।

वे सव चुप थे।

"क्या सोच रहे हो तुम लोग ?" जादौराम ने पूछा।

"कुछ नहीं" धन्ना ने कहा, "ऐसे ही चुनाव की वात सोच रहे हैं…
एक वोट की वात है। गिनती फिर से…करवायेंगे। मन नहीं मानता कि
हारे हैं।"

मास्टर जादौराम अनायास ही मुसकरा पड़े, "क्या मानना चाहिए कि
हम हारे है ? गिनती हो न हो, उसकी वात छोड़दो जरा तसल्ली से अपने
मन में सोचो—कहां हारे हैं ?…तुम लोग हार तो तव जाते, जव मुन्ना
अकेला ही रह गया होता। सच तो यह है कि तुम लोग जीत गये हो !…
चुनाव की गिनती से थोड़े ही हार-जीत होती है ?"

वात फिर से अधूरी रह गयी। नर्स ने आकर सूचना दी, "मास्टरजी
आपके पेशेन्ट को होश आ गया है…"

मास्टर जादौराम वच्चों की तरह उछलकर कमरे की ओर ल
पड़े। धन्ना, विलायती, सकुन और गजुआ ने एक-दूसरे को देखा…
कराये। फिर हंस पड़े…समझ में नही आ रहा था कि क्यो हंस र
शायद समझ में आ भी रहा था कि क्यों हंस पड़े है।